



परम पूज्य तपश्चर्या-चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि-परिवार के द्वारा आयोजित

जिन्नवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19-03-1971

* मुनिदीक्षा-11-05-1989

* आचार्यपद- 20-06-2004

पट्टाधीशपद- 24-12-2010 (20-06-2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मत्तिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणा:-

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संग्रह के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी-जुलाई 2004) (अक्षयज्योति-अक्तूबर 2004)

संस्कृत स्वयं शिक्षक भाग-०१

लेखक
श्रीपाद दामोदर सातव

प्रकाशक
राजपाल एण्ड सन्स
दिल्ली

(पारम्परानायक)



(द्वितीय पट्टाधीश)



(तृतीय पट्टाधीश)



परम पूज्य चारिष-चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिमागर जी महाराज
(अंकनीकर)

(चतुर्थ पट्टाधीश)



परम पूज्य तीर्थभक्त-शिरोगणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

परम पूज्य सिद्धान्त-चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिमागर जी महाराज

परम पूज्य तपरचर्या-चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिमागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्रायः होता है। फलतः उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें। मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तृत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि-परिचार

दो शब्द

संस्कृत स्वयं शिक्षक का भोवा संस्करण आपके हाथ में है। पुस्तक कितनी उपयोगी सिद्ध हुई है इसका अनुमान केवल इसी बात से लग सकता है कि थोड़े से समय में ही यह पुस्तक आठ बार छपकर हाथों हाथ बिक चुकी है।

संस्कृत स्वयं शिक्षक की पंजाब टैक्सट बुक कमेटी, महाराजा साहब बदीदा, मिन्सपल सिन्ध नेशनल कॉलेज और अन्य कई शिक्षा विभागों ने मुक्त-कंठ से प्रशंसा करते हुए इसकी सिफारिश की है।

महात्मा गान्धी जी ने भी इस पुस्तक की शैली को पसन्द किया है।

आशा है आप पूर्ववत् इस नए संस्करण को अपनाकर देववाणी संस्कृत का सन्मान करेंगे।

संस्कृत स्वयं शिक्षक

पुस्तक आरम्भ करने से पहिले इसे अवश्य पढ़ —

इस पुस्तक का नाम "संस्कृत स्वयं शिक्षक" है और जो यह इस नाम से विदित होता है वैसे ही इसका कार्य है। बिना किसी परिदृष्ट की सहायता आर्य-भाषा (हिन्दी) जानने वाला अनुप्य इस पुस्तक के पढ़ने से संस्कृत भाषा का ज्ञान प्राप्त कर सकता है। जो देवनागरी अक्षर नहीं जानते, उनको उचित है, कि देवनागरी अक्षर पहिले पढ़ कर इस पुस्तक को पढ़ें, देवनागरी अक्षरों को जाने बिना संस्कृत का जानना कठिन है।

बहुत लोग यह समझते हैं कि "संस्कृत भाषा बहुत कठिन है, कई वर्ष प्रयत्न करने से ही उसका ज्ञान हो सकता है।" परन्तु वास्तव में विचार किया जाय तो यह भ्रम मात्र है। संस्कृत भाषा नियमबद्ध होने के कारण तथा स्वभाव सिद्ध होने के कारण सब वर्तमान भाषाओं से सुगम है। कम से कम मैं यह कह सकता हूँ कि अंग्रेजी भाषा संस्कृत भाषा से दस गुणा कठिन है, मैंने कई वर्षों के अनुभव से यह देखा है कि संस्कृत भाषा अत्यन्त सुगम रीति से पढ़ाई जा सकती है, और अपना व्यवहारिक वातावरण तथा रामायण महाभारतादि पुस्तकों का अध्ययन करने के लिये जितना संस्कृत का अभ्यास चाहिये वतना संस्कृत का ज्ञान प्रति-दिन घण्टा, आधा घण्टा करने से एक वर्ष की अवधि में अच्छी प्रकार प्राप्त हो सकता है। यह मेरी कोई कल्पना नहीं परन्तु अनुभव की हुई बात है। इसी कारण संस्कृत जिज्ञासु सर्वसाधारण

जनता के सम्मुख उसी अनुभव की हुई अपनी विशिष्ट पद्धति को इस पुस्तक द्वारा रखना चाहता हूँ ।

हिन्दी अर्थात् आर्य भाषा के कई वाक्य इस पुस्तक में भाषा की रीति से कुछ विरुद्ध पाए जायेंगे, परन्तु वे वैसे इस लिये लिखे गये हैं कि वे संस्कृत वाक्य में प्रयुक्त हुए शब्दों के क्रम के अनुकूल हों तथा किसी किसी स्थान पर संस्कृत के शब्दों का प्रयोग भी उसके नियमों के अनुसार नहीं लिखा है तथा शब्दों की संधि कहीं भी नहीं की गई । यह सब इसलिये किया है कि पाठकों को सुभीता हो और उनका संस्कृत में प्रवेश सुगमता पूर्वक हो सके । पाठक यह भी देखेंगे कि जैसा प्रवेश अधिक २ हो गया है वैसा वैसा शब्दों का क्रम भी यथा-योग्य हो गया है अर्थात् जो भाषा की शैली की न्यूनता पहिले पाठों में है वह आगे के पाठों में नहीं है । भाषा शैली की कुछ न्यूनता सुगमता के लिये जान बूझ कर रक्की गई है, इसलिये पाठक इसकी ओर ध्यान न देकर अपना अभ्यास जारी रखें ताकि उनका संस्कृत-मन्दिर में प्रवेश भलीभाँति हो सके ।

पाठकों को उचित है कि वे न्यून से न्यून प्रतिदिन एक घण्टा इस पुस्तक का अध्ययन किया करें और जो जो शब्द जानें उनका प्रयोग बिना किसी प्रकार के मंकोच के करने का यत्न करें इससे उनकी व्रत्ति प्रतिदिन होती रहेगी ।

जिस रीति का अवलंबन हम पुस्तक में किया है वह न केवल सुगम है परन्तु निःसन्देह स्वभाविक है, और स्वभाविक होने के कारण ही इस रीति से अल्प काल में और थोड़े परिधम से बहुत लाभ होगा ।

यह मैं निश्चयपूर्वक कह सकता हूँ कि प्रतिदिन एक घण्टा

प्रयत्न करने से एक वर्ष के अन्दर व्यवहारिक संस्कृत भाषा का ज्ञान इस पुस्तक की पद्धति से हो सकता है। परन्तु, पाठकों को यह बात ध्यान में रखनी चाहिये कि केवल उत्तम शैली से ही काम नहीं चलेगा, पाठकों का यह कर्तव्य होगा कि वे प्रतिदिन पर्याप्त और निश्चित समय इस कार्य के लिये अवश्य लगाया करें नहीं तो कोई पुस्तक कितनी ही अच्छी क्यों न हो बिना प्रयत्न के पाठन, उसके पूरा लाभ नहीं उठा सकते।

इस पुस्तक का अभ्यास करने की पद्धति

(१) प्रथम पाठ तक जो कुछ लिया है, उसे अच्छी प्रकार पढ़िये। सब ठीक समझने के पश्चात् प्रथम पाठ को पढ़ना प्रारम्भ कीजिये।

(२) हर एक पाठ प्रथम सम्पूर्ण पढ़ना चाहिये, पश्चात् उसको क्रमशः स्मरण करना चाहिये; हर एक पाठ को न्यून से न्यून दस बार पढ़ना चाहिए।

(३) हर एक पाठ में जो जो संस्कृत वाक्य हैं, उनकी कण्ठ करना चाहिये तथा जिन जिन शब्दों का रूप दिये हैं, उनको स्मरण करके, उनके समान जो जो शब्द दिये होंगे, उन शब्दों के रूप जैसे ही बनाने का यत्न करना चाहिये।

(४) जहाँ परीक्षा के प्रश्न दिये हों वहाँ उनका उत्तर दिये बिना आगे बढ़ना नहीं चाहिये। यदि प्रश्नों का उत्तर देना अशक्य हुआ, तो पूर्व पाठ द्वारा पढ़ना चाहिये। प्रश्नों का मट्ट उत्तर न देने का यही मतलब है कि पूर्व पाठ ठीक प्रकार तय्यार नहीं हुए।

(५) जहाँ द्वारा पढ़ने की सूचना दी है वहाँ अवश्य द्वारा पढ़ना चाहिये।

(६) दो पाठक साथ साथ अभ्यास करेंगे और परस्पर प्रश्नोत्तर करके एक दूसरे को मदद देंगे तो अभ्यास बहुत शीघ्र हो सकता है।

(७) यह पुस्तक तीन महीनों के अभ्यास के लिये है, इसलिये पाठकों को चाहिये कि वे समय के अन्दर पुस्तक समाप्त करें; जो पाठक अधिक समय लेना चाहें वे ले सकते हैं। यह पुस्तक अच्छी प्रकार स्मरण होने के पश्चात् ही दूसरी पुस्तक प्रारम्भ करनी चाहिए।

अक्षर

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ

ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः।

क ख ग घ ङ, च छ ज झ ञ,

ट ठ ड ढ ण, त थ द ध न,

प फ ब भ म, य र ल व

श ष स ह क्ष ञ्ञ ।

ॐ शुद्ध स्वर ॐ

अ, इ, उ, ऋ, लृ,

यद्द पाँच शुद्ध स्वर हैं।

संयुक्त—स्वर

अ	और	अ	अथवा	आ	मिलकर	“आ”	—बना	है
इ	”	ई	”	इ	”	“ई”	—बनी	है
उ	”	ऊ	”	उ	”	“ऊ”	—बना	है
ऋ	”	ॠ	”	ऋ	”	“ऋ”	—बना	है
अ	”	इ	”	ई	”	“ए”	—बना	है
आ	”	इ	”	ई	”	“ए”	—बना	है
अ	”	उ	”	ऊ	”	“ओ”	—बना	है
आ	”	उ	”	ऊ	”	“ओ”	—बना	है
अ	}	”	”	ए	”	“ऐ”	—बना	है
आ								
अ	}	”	”	ओ	”	“औ”	—बना	है
आ								

इतने संयुक्त स्वर हैं।

स्वर लय्य अक्षर (स्वरों से बने हुए अक्षर)

इ अथवा ई स्वर अ के साथ मिलकर “य” बनता है

उ “ऊ” अ “” “व” “”

प-त-य ; प्य ”

श-र-य ” श्रय ”

इस प्रकार अनन्त संयुक्ताक्षर हैं, हिन्दी भाषा के पाठकों को अचित्त दे वि वे इस संयुक्ताक्षर पद्धति को जानें ताकि वे अच्छी तरह संयुक्ताक्षरों की पढ़ सकें ।

कुछ स्वरों की सन्धि

ए+अ=अय । ऐ+अ=आय । ओ+अ=अव ।
 औ+अ=आर होता है ।

इसी प्रकार अन्य स्वर मिलने पर सन्धि जाननी चाहिये । जैसा:-

ए+आ=अपा ।	ऐ+ई=यापी ।
ओ+उ=अवु ।	औ+ऊ=यावु ।
ए+ए=अये ।	ऐ+ओ=याया ।
ओ+ए=अये ।	औ+ओ=यायो ।

इस प्रकार "प ऐ, औ, औ" की सन्धि पाठक जान सकेंगे !

संस्कृत भाषा का स्वयं-शिक्षक

पाठ १

नीचे कुछ संस्कृत शब्द और उनके अर्थ दिये हुए हैं उनको याद करना चाहिये, संस्कृत भाषा के शब्द बड़े अक्षरों में लिखे हैं ।

शब्द

- । सः=वह । त्वं=तू । अहं=मैं ।
गच्छति=वह जाता है । गच्छासि=तू जाता है ।
गच्छामि=मैं जाता हूँ ।

वाक्य

अहं गच्छामि=मैं जाता हूँ । त्वं गच्छसि=तू जाता है ।
स गच्छति=वह जाता है ।

पाठक लोग यहाँ ध्यान रखें कि संस्कृत वाक्यों का भाषा में अर्थ शब्दों के क्रम से ही दिया है, इस बात का ज्ञान शब्दों के ऊपर जो अंक दिये हैं उनको देखने से हो सकता है ।

- । कुत्र=कहाँ । यत्र=जहाँ । अत्र=यहाँ ।
। तत्र=वहाँ । सर्वत्र=सब स्थान पर । किं=क्या ।

वाक्य

१. त्वं कुत्र गच्छसि=तू कहाँ जाता है ?
२. यत्र स गच्छति=जहाँ वह जाता है ।

३. अहं तत्र गच्छामि=मैं वहाँ जाता हूँ।
४. स कुत्र गच्छति=वह कहां जाता है ?
५. यत्र अहं गच्छामि=जहाँ मैं जाता हूँ।
६. त्वं सर्वत्र गच्छसि=तू सब-स्थान-पर जाता है।
७. किं स गच्छति=क्या वह जाता है ?
८. स गच्छति किं=वह जाता है क्या ?
९. स कुत्र गच्छति=वह कहाँ जाता है ?
१०. यत्र त्वं गच्छसि=जहाँ तू जाता है।
११. त्वं गच्छसि किं=तू जाता है क्या ?
१२. अहं सर्वत्र गच्छामि=मैं सब-स्थान पर जाता हूँ।

सूचना—पठकों को ये सब वाक्य ध्यान में रखने चाहियें,

अगर दो पाठक साथ साथ पढ़ते हों, तो एक दूसरे को संस्कृत तथा भाषा के वाक्य उच्चारण करके दूसरे से अर्थ पूछने चाहियें, और दूसरे को चाहिये कि वह अर्थ बताये परन्तु अगर अकेला ही पढ़ता हो तो उसे प्रथम ऊँची आवाज़ में प्रत्येक वाक्य दस बार उच्चारण करके तत्पश्चात् संस्कृत वाक्यों की ओर दृष्टि देकर उनका अर्थ भाषा के वाक्यों की ओर दृष्टि न देते हुए मन में साने वा पत्र करना चाहिये, ऐसा दो तीन बार करने से सब वाक्य याद हो सकते हैं।

जो पाठक इन वाक्यों की ओर ध्यान देंगे उनको एक शब्दों से कई अन्य वाक्य स्वयं रचने की योग्यता आवेगी और पता लगेगा कि घोंड़े से शब्दों से किगनी बागपीत हो सकती है।

शब्द

न=नहीं । अस्ति=है ।

कः=कौन । नास्ति=नहीं है ।

वाक्य

१. अहं न गच्छामि=मैं नहीं जाता हूँ ।
२. त्वं न गच्छसि=तू नहीं जाता है ।
३. स न गच्छति=वह नहीं जाता है ।
४. अहं तत्र न गच्छामि=मैं वहाँ नहीं जाता हूँ ।
५. त्वं सर्वत्र न गच्छसि=तू सब स्थान पर नहीं जाता है ।
६. किं स न गच्छति ?=क्या वह नहीं जाता है ?
७. यत्र त्वं न गच्छसि=जहाँ तू नहीं जाता है ।
८. त्वं न गच्छसि किम् ?=तू नहीं जाता है क्या ?
९. अहं सर्वत्र न गच्छामि=मैं सब स्थान पर नहीं जाता हूँ ।

सूचना—पाठक यहाँ ध्यान से देख सकते हैं कि केवल एक 'न' कार के उपयोग से किन्तु नये उपयोगी वाक्य बन गये हैं । अब 'कः' शब्द का उपयोग देखिये:—

१. कः तत्र गच्छति=कौन वहाँ जाता है ?
२. कः सर्वत्र गच्छति=कौन सब-स्थान-पर जाता है ?
३. तत्र कः न गच्छति=वहाँ कौन नहीं जाता ?
४. कः सर्वत्र न गच्छति=कौन सब स्थान-पर नहीं जाता ?
५. कः तत्र अस्ति=कौन वहाँ है ?

११. यत्र स गच्छति=जहा वह जाता है ।

१२. तत्र त्वं गच्छसि किं=वहाँ तू जाता है क्या ?

यह वाक्य याद करने के पश्चात् नीचे लिखे हुए शब्द कण्ठ कीजिये ।

यदा=जब । कदा=कब । सदा=सदा, हमेशा ।

सर्वदा=सदा, हमेशा । सदैव=सर्वकाल, हमेशा । तदा=तब ।

अब नीचे लिखे हुए वाक्यों को याद कीजिए । यदि आपने पूर्वोक्त वाक्य कण्ठ किए हों तो यह वाक्य आप स्वयं बना सकते हैं ।

१. कदा स नगरं गच्छति=कब वह नगर को जाता है ?

२. यदा स ग्रामं गच्छति=जब वह गाँव को जाता है ।

३. अहं सदैव पाठशालां गच्छामि=मैं हमेशा पाठशाला को जाता हूँ ।

४. सर्वदा उद्यानं गच्छति=वह सदैव बाग को जाता है ।

५. किं त्वं सदा आपणं गच्छसि=क्या तू हमेशा बाजार को जाता है ?

६. अहं सदैव नगरं गच्छामि=मैं हमेशा नगर को जाता हूँ ।

७. यदा त्वं ग्रामं गच्छसि=जब तू गाँव को जाता है ।

८. तदाहं उद्यानं गच्छामि=तब मैं बाग को जाता हूँ ।

९. स नगरं गच्छति किम्=वह नगर को जाता है क्या ?

१०. स सर्वदा ग्रामं गच्छति=वह सदा गाँव को जाता है ।

११. किं त्वं उद्यानं गच्छसि=क्या तू बाग को जाता है ?

१२. अहं सदैव उद्यानं गच्छामि=मैं सदा बाग को जाता हूँ ।

१३. त्वं कुत्र गच्छसि=तू कहां जाता है ?

१४. त्वं कदा गच्छसि=तू कब जाता है ?

१५. स सदैव गच्छति=वह हमेशा जाता है ।

पूर्वोक्त प्रकार से इन वाक्यों को भी ऊँचे धोल कर दस दस बार उच्चारण करना चाहिए, तत्पश्चात् संस्कृत वाक्य की ओर देख कर (भाषा के वाक्य को न देखते हुए) उसका भाषा का वाक्य बनाना चाहिए. तत्पश्चात् भाषा का वाक्य देखकर उसका संस्कृत वाक्य बनाना चाहिए, इस प्रकार करने से पाठक स्वयं कई नए वाक्य बना सकते हैं । अथ कुछ निषेध के वाक्य बताते हैं ।

१. अहं गृहं न गच्छामि=मैं घर नहीं जाता हूँ ।

२. स ग्रामं न गच्छति=वह गांव को नहीं जाता है ।

३. त्वं पाठशालां न गच्छति किम्=तू पाठशाला को नहीं जाता है क्या ?

४. स उद्यानं किं न गच्छति=वह बाग को क्यों नहीं जाता ?

५. किं स ग्रामं न गच्छति=क्या वह गांव को नहीं जाता ?

६. किं त्वं आपणं न गच्छसि=क्या तू बाजार नहीं जाता ?

७. तत्र त्वं किं न गच्छसि=वहां तू क्यों नहीं जाता ?

८. यदा स ग्रामं न गच्छति=जब वह गांव को नहीं जाता ?

९. कः सदा उद्यानं न गच्छति=कौन हमेशा बाग को नहीं जाता ?

१०. स उद्यानं सर्वदा न गच्छति=वह बाग को हमेशा नहीं जाता ।

११. त्वं तत्र किं न गच्छामि=तू वहाँ क्यों नहीं जाता ?

१२. स तत्र सदैव न गच्छति=वह वहाँ हमेशा नहीं जाता ।
इस प्रकार पाठक वाक्य बना सकते हैं ।

पाठ ३

यदि आपने पूर्वपाठ के वाक्य तथा शब्द अच्छी प्रकार कण्ठ
किए हों तो अब आप निम्न लिखित शब्दों को याद कीजिए :—
सायं=शाम को । प्रातः=प्रातःकाल । रात्रौ=रात्री में ।
श्वः=श्वल (आगामी दिन) । पर श्वः=परसों ।
दिवा=दिन में । मध्याह्ने=दोपहर । अद्य=आज ।
ह्यः=श्वल (गत दिन) । न=नहीं ।

वाक्य

- १ त्वं कुत्र सदैव प्रातः गच्छसि=तू कहाँ हमेशा प्रातःकाल जाता है ?
- २ अहं सदैव प्रातः उद्यानं गच्छामि=मैं सदा प्रातःकाल बाग को जाता हूँ ।
- ३ स सायं उद्यानं गच्छति=वह सायंकाल बाग को जाता है ।
- ४ त्वं अद्य पाठशालां गच्छसि किम्=तू आज पाठशाला को जाता है क्या ?
- ५ अद्य अहं पाठशालां न गच्छामि=आज मैं पाठशाला को नहीं जाऊँगा ।
- ६ त्वं मध्याह्ने तु गच्छसि=तू दोपहर में कहाँ जाता है ?
- ७ अहं मध्याह्ने ग्रामं गच्छामि=मैं दोपहर में गाँव को जाता हूँ ।
- ८ स दिवा नगरं गच्छति=वह दिन में नगर को जाता है ।

- ६ अहं रात्रौ गृहं गच्छामि=मैं रात्री में घर को जाता हूँ ।
 १० यत्र त्वं रात्रौ गच्छसि=जहाँ तू रात्री में जाता है ।
 ११ तत्र अहं दिवा गच्छामि=वहाँ मैं दिन में जाता हूँ ।
 १२ तत्र स प्रातः गच्छति=वहाँ वह प्रातःकाल जाता है ।

शब्द

यदि=यदि, अगर । तर्हि=तब । गमिष्यसि=तू जायगा ।
 गमिष्यति=वह जायगा । यथा=जैसा । तथा=वैसा ।
 कथं=कैसा । गमिष्यामि=जाऊँगा ।

जालंधरनगरं=जालन्धर शहर को । हरिद्वारनगरं=हरिद्वार शहर को

वाक्य

- १ यदि त्वं जालंधर नगरं श्वः गमिष्यसि=अगर तू जालन्धर
को बल जायगा ।
 २ तर्हि अहं हरिद्वार नगरं परश्वः गमिष्यामि=तब मैं हरिद्वार
शहर को परसे जाऊँगा ।
 ३ यदा त्वं गमिष्यसि तदा अहं गमिष्यामि=जब तू जायगा
तब मैं जाऊँगा ।
 ४ यदि त्वं न गमिष्यसि तर्हि अहं न गमिष्यामि=अगर तू
नहीं जायगा तब मैं नहीं जाऊँगा ।
 ५ स हरिद्वारं श्वः गमिष्यति=उह हरिद्वार को बल जावेगा ।
 ६ स ध प्रातः जालंधरनगरं गमिष्यति=वह प्रातःकाल जालंधर
शहर को जायगा ।

७ यत्र स श्वः गमिष्यति=जहाँ वह कल जायगा ।

८ तत्र अहं परश्वः गमिष्यामि=वहाँ मैं परसों जाऊँगा ।

९ त्वं परश्वः ग्रामं गमिष्यसि किम्=तू परसों गांव को जायगा क्या ?

१० न अहं अद्य सायं नगरं गमिष्यामि=नहीं मैं आज सायंकाल
शहर को जाऊँगा ।

११ यथा त्वं गच्छसि तथा स गच्छति=जैसे तू जाता है वैसे वह
जाता है ।

१२ कथं तत्र स श्वः गमिष्यति=कैसे वहाँ वह कल नहीं जायगा ?

१३ स तत्र श्वः गमिष्यति=वह वहाँ कल नहीं जायगा ।

ये वाक्य देख पाठकों को पता लगेगा कि वे तनिक व्यवहार
के नए वाक्य स्वयं बना सकते हैं, इसलिये पाठकों से प्रार्थना है
कि वे नये नये वाक्य-प्राप्त शब्दों से बनाने का यत्न किया करें ।

अब निषेध के वाक्य देखिए:—

१ स सायं उद्यानं न गच्छति=वह शाम को बाग को नहीं जाता

२ कः मध्याह्ने पाठशालां न गच्छति=कौन दोपहर में पाठशाला
नहीं जाता ?

३ अहं रात्रौ नगरं न गच्छामि=मैं रात्रि में शहर को नहीं जाता ।

४ कः तत्र दिवा न गच्छति=कौन वहाँ दिन में नहीं जाता ?

५ त्वं श्वः जालंधरं न गमिष्यसि किम् ?=तू कल जलधर नहीं
जायगा क्या ?

६ यथा त्वं न गच्छसि तथा स न गच्छति=जैसे तू नहीं

जाता वैसे वह नहीं जाता ।

७. कथं स न गच्छति=कैसे वह नहीं जाता ?
 ८. स रात्रौ कुत्र कुत्र न गमिष्यति ?=वह रात्रि में कहां कहां नहीं जायगा ?
 ९. यत्र यत्र त्वं गमिष्यसि, तत्र तत्र स न गमिष्यति=
 जहां जहां तू जायगा, वहां वहां वह नहीं जायगा ।

पाठ ४

“गम्=(गच्छ)” अर्थ “जाना” । परन्तु उसके आगे “धा” लगाने से उसी वा अर्थ “आना” होता है, देखिए—

शब्द

गच्छति=वह जाता है ।	गच्छसि=तू जाता है ।
गच्छामि=जाता हूँ ।	गमिष्यति=वह जायगा ।
गमिष्यसि=तू जायगा ।	गमिष्यामि=जाऊँगा ।
आगच्छति=आता है ।	आगच्छसि=तू आता है ।
आगच्छामि=आता हूँ ।	आगमिष्यति=आयेगा ।
आगमिष्यसि=तू आयेगा ।	आगमिष्यामि=आऊँगा ।
अपि=भी ।	नहि=नहीं ।
च=और ।	
वनं=वन को ।	वृषं=वृष को ।
श्रीपथालयं=इवाखाने को ।	

वाक्य

१. यदा त्वं वनं गमिष्यसि=जब तू वन को जायगा,
२. तदा अहं अपि आगमिष्यामि=तब मैं भी आऊँगा ।

३. यदा तत्र स गमिष्यति=जब वहाँ वह जायगा,
 ४. तदा तत्र त्वं न आगमिष्यसि किं=तब वहाँ तू न आवेगा
 क्या ?
 ५. अहं प्रातः गमिष्यामि च सायं आगमिष्यामि=मैं सवेरे
 जाऊँगा और सायंकाल आऊँगा ।
 ६. कदा त्वं तत्र गमिष्यसि=कब तू वहाँ जावेगा ?
 ७. अहं मध्याह्ने तत्र गमिष्यामि=मैं दोपहर को वहाँ जाऊँगा ।
 ८. यदि त्वं गमिष्यसि=अगर तू जायगा,
 ९. स अपि न आगमिष्यति=वह भी नहीं आवेगा ।

शब्द

भक्षयति=वह खाता है ।	भक्षयसि=तू खाता है ।
भक्षयामि=खाता हूँ ।	अन्नं=अन्न को ।
फलं=फल को ।	मोदकं=लड्डू को ।
भक्षयिष्यति=खायेगा ।	भक्षयिष्यसि=तू खावेगा ।
भक्षयिष्यामि=खाऊँगा ।	ओदनं=चावल ।
सुदुर्गौदनं=खिचड़ी ।	आम्रं=आम को ।

वाक्य

१. स अन्नं भक्षयति=वह अन्न खाता है ।
 २. त्वं मोदकं भक्षयसि=तू लड्डू खाता है ।
 ३. अहं फलं भक्षयामि=मैं फल खाता हूँ ।
 ४. स ओदनं भक्षयिष्यति=वह चावल खायेगा ।

५. त्वं आम्रं भक्षयिष्यमि=तू आम खायेगा।
 ६. अहं मुद्गोदनं भक्षयिष्यामि=मैं खिचड़ी खाऊँगा।
 ७. यदि स वनं प्रातः गमिष्यति=अगर वह वन की प्रातः
 काल जायगा।
 ८. तर्हि आम्रं भक्षयिष्यति=तब आम खायेगा।
 ९. अहं तत्र गमिष्यामि च फलं भक्षयिष्यामि=मैं वहाँ
 जाऊँगा और फल खऊँगा।
 १०. स गृहं गमिष्यति च मोदकं भक्षयिष्यति=वह घर
 जायगा और लड्डू खायगा।
 ११. किं स अन्नं भक्षयिष्यति=क्या वह अन्न खायगा।
 १२. यथा स ओदनं भक्षयिष्यति=जैसे वह चावल खायगा,
 १३ तथा तत्र अहं आम्रं भक्षयिष्यामि=वैसे वहाँ मैं आम
 खाऊँगा।

अब पाठक बहुत कुछ वाक्य बना सकते हैं। इस लिए अब कुछ विभक्तियों के रूप देते हैं। जिनको समझ करने से पाठकों की योग्यता बहुत बढ़ सकती है।

संस्कृत में सात विभक्तियाँ होती हैं। (ये विभक्तियाँ माथा में भी हैं) —

‘देव’ शब्द के सातों विभक्तियों के रूप

विभक्ति का नाम	विभक्ति के रूप	माथा में अर्थ
१. प्रथमा	देव	देव
२. द्वितीया	देवम्	देव-को

३. तृतीया	देवेन	देव-द्वारा
४. चतुर्थी	देवाय	देव-के लिए
५. पंचमी	देवात्	देव-से
६. षष्ठी	देवस्य	देव-का
७. सप्तमी	देवे	देव में
८. सम्बोधन	[हे] देव	हे देव

पाठक यहाँ देख सकते हैं कि इन रूपों का वातचीत करने में कितना उपयोग होता है, उक्त रूपों का उपयोग करके अब कुछ वाक्य देते हैं—

१. देवः तत्र गच्छति=देव वहाँ जाता है।

२. हे देव ! त्वं तत्र गच्छसि किम् ?=हे देव ! तू वहाँ जाता है क्या ?

३. तत्र देवं पश्य=वहाँ देव को देख।

उक्त वाक्यों में “पश्य” आदि शब्द नये आए हैं, उनका अर्थ भाषा क वाक्यों को देख कर पाठक जान सकते हैं। अर्थ देखने के लिये १, २, ३, ४ ऐसे अरु शब्दों के ऊपर रखे हैं।

१. देव तत्र न गच्छति।

२. हे देव ! त्वं तत्र न गच्छसि किम् ?

३. स तत्र देवं न पश्यति।

४. देवेन अन्नं न दत्तम्।

५. देवाय फलं न देहि।

६. देवात् ज्ञानं न लभते।

४. देवेन अन्नं दौ^३म् = देव ने अन्न^३ दिया ।
५. देवाय फलं देहि^३ = देव के लिए फल दे ।
६. देवात् ज्ञानं लभते^क = देव से ज्ञान मिलता है ।
७. देवस्य गृहं अस्ति^क = देव का घर है ।
८. देवे ज्ञानं अस्ति = देव में ज्ञान है ।

इस प्रकार पाठक कई वाक्य बना सकेंगे, उनको उचित है कि वे इस प्रकार प्राप्त शब्दों का उपयोग करते रहें। अब एक वाक्यों के निरूपण अर्थ के वाक्य देते हैं। इनका अर्थ पाठक स्वयं ज्ञान सकेंगे इस लिए दिए नहीं—

वाक्य

अहं नैव गमिष्यामि । स मांसं नैव भक्षयिष्यति ।
 स आन्नं कदा भक्षयिष्यति ? यदा त्वं मोदकं भक्षयिष्यसि ।
 स नित्यं कदलीफलं ग्रहणयति । देवः इदानीं कुत्र अस्ति ?
 देवः सर्वत्र अस्ति । स कदा आगमिष्यति ? स अत्र श्वः
 प्रातः आगमिष्यति । यत्र यत्र अहं गच्छामि तत्र तत्र स
 नित्यं आगच्छति ।

७. देवस्य गृहं न अस्ति ।
८. देवे ज्ञानं न अस्ति ।

पाठकों को ध्यान में रखना चाहिये कि ये वाक्य कोई खास अर्थ नहीं रखते हैं। यहाँ इतना ही बताया है, कि नकार के साथ वाक्य कैसे बनाये जाते हैं। इनको देख पाठक बहुत नये वाक्य बना कर बोल सकते हैं।

पाठ ५

पूर्वोक्त वाक्यों को तथा शब्दों को याद करने से पाठक स्वयं कई वाक्य बना कर प्रयोग में ला सकेंगे । हमने शब्द तथा वाक्य इस प्रकार रखे हैं, कि व्याकरण का बोझ पाठकों पर न पड़ कर उनके मन के ऊपर व्याकरण का सम्भार स्वयं हो जाय, और वे स्वयं वाक्य बना सकें, इस लिये पाठकों से प्रार्थना है कि वे पहिला पाठ पकाये बिना अगामी पाठ को प्रारम्भ न करें, तथा जो जो शब्द पाठों में दिये हुए हैं उनसे अन्याय वाक्य स्वयं बनाने का यत्न करें । अब नीचे लिखे हुए शब्द कण्ठ कीजिये —

नक्तं=रात्री में ।	नयति=वह ले जाता है ।
नयसि=तू ले जाना है ।	नयामि=मे जाना हूँ ।
नेष्यति=वह ले जायगा ।	नेष्यसि=तू ले जायगा ।
नेष्यामि=ले जाऊँगा ।	नवीनं=नया ।
सर्गं=मय ।	आनयति=जाना है ।
आनयसि=तू लाता है ।	आनयामि=जाता हूँ ।
आनेष्यति=वह लायगा ।	आनेष्यसि=तू लायगा ।
आनेष्यामि=लाऊँगा ।	पुराणं=पुराना ।

१. स फलं नयति=वह फल ले जाता है ।

२. अहं आन्नं आनयामि=मैं आम लाता हूँ ।

३. त्वं अन्नं आनेष्यसि किं=तू अन्न लायेगा क्या ?

४. अहं तत्र गमिष्यामि=मैं वहाँ जाऊँगा ।

- ५ फलं च आनेष्यामि=और फल लाऊंगा ।
 ६ त्वं श्वः कुत्र गमिष्यसि ?=तू कल कहाँ जायगा ?
 ८ त्वं कदा आगमिष्यसि=तू कब आवेगा ?

शब्द

जलं=जल । पुष्पं=फूल । अपूपं=पूड़ा । सूयं=दाज ।
 पुस्तकं=पुस्तक । क्रिमयं=किस लिए ।

१ अहं जलं आनयामि=मैं जल लाता हूँ ।

२ त्वं पुष्पं आनयसि=तू फूल लाता है ।

लेखनीं=लेखनी, कलम । मसीं=स्याही की ।

मसीपात्रं=दवात । वस्त्रं=कपड़ा । उत्तरीयं=दुपट्टा ।

च्यर्थं=स्वयं, सामुदायिक ।

३ स वस्त्रं तत्र नयति=वह वस्त्र वहाँ ले जाता है ।

४ स सदा नगरं गच्छति च पुस्तकं आनयति=वह हमेशा
 शहर जाता है और पुस्तक लाता है ।

५ स अद्य आगमिष्यति वस्त्रं च नेष्यति=वह आज आवेगा
 और कपड़ा ले जायगा ।

६ अहं आम्रं आनयामि=मैं आम लाता हूँ ।

७ त्वं अपूपं आनयसि=तू पूड़ा लाता है ।

८ स उत्तरीयं नयति=वह दुपट्टा ले जाता है ।

९ कदा स मसीपात्रं पुस्तकं च तत्र नेष्यति=कब वह दवात
 और पुस्तक वहाँ ले जायगा ?

१० स सायं तत्र मसीपात्रं लेखनीं च नेष्यति-वह शाम क
वहा दवात और लेखनी ले जायगा ।

११ त्वं रात्रौ हरिद्वारं गमिष्यसि किं=त् रात्रि में हरिद्वार
जाएगा क्या ?

१२ नहि, अहं शः मध्याह्ने तत्र गमिष्यामि=नहीं मैं बल
दोपहर को वहा जाऊँगा ।

१३ अह गृहं गमिष्यामि सूप च भक्षयिष्यामि=मैं घर जाऊँगा
और दाल खाऊँगा ।

इस समय तब पाठकों क पस बहुत छुट वाक्य बनान का
मसाला पहुँच चुका है । पूर्व पाठ म जैसे 'देव' शब्द की सातों
विभक्तियों क रूप दिये थे वैसे इस पाठ में राम शब्द का है—
राम' शब्द क रूप

विभक्तियों क नाम	शब्दों क रूप ।	भाषामें अर्थ
१ प्रथमा	राम	ग
२ द्वितीया	रामम्	राम को
३ तृतीया	रामेण	राम द्वारा
४ चतुर्थी	रामाय	राम क लिये
५ पंचमी	रामात्	राम स
६ षष्ठी	रामस्य	राम का
७ सप्तमी	रामे	राम में
सम्बोधन	(हे) राम ।	हे राम ।

देव और राम इन दो शब्दों क रूप अगर पाठक अच्छी
प्रकार स्मरण करेंगे तो वे निम्न शब्दों के रूप बना सकेंगे ।

● जिन शब्दों में र अथवा प दृष्ठा परता है उनके न को ए
हो जाता है । इस विषय का नियम 'स्वर्यं शिञ्जक' के दूसरे भाग
में आजायगा ।

यज्ञदत्त. ईश्वर, गणेश, पुरुष, मनुष्य, अश्व, खग, पाठ, दीप, उदय, गण, समूह, दिवस, मास, धर्म । ये शब्द उक्त देव गम के समान ही चलते हैं । इनके रूप बना कर थोड़े से वाक्य नीचे देते हैं—

१ यज्ञदत्तः गृहं गच्छति=यज्ञदत्त घा भी जाता है ।

२ ईश्वरः सर्वत्र अस्ति=ईश्वर सब स्थान पर है ।

३ हे ईश्वर ! दयां कुरु=हे ईश्वर ! दया करो ।

४ हे पुत्र्य ! धर्मं कुरु=हे पुरुष ! धर्म कर ।

५ तत्र अश्वं पश्य=वहां घोड़े की देख ।

६ यत्र दीपं पश्य=वहां दीवे की देख ।

७ सः रात्रौ दीपेन पुस्तकं पठति=वह रात्रि में दीवे
पुस्तक पढ़ता है ।

८ ईश्वरेण धनं दत्तं=ईश्वर ने धन दिया ।

९ मनुष्याय ज्ञानं देहि=मनुष्य के लिए ज्ञान दे ।

१० अथाय जलं देहि=घोड़े के लिये जल दे ।

११ दीपात् प्रकाशं भवति=दूबे से प्रकाश होता है ।

१२ ईश्वरात् ज्ञानं भवति=ईश्वर से ज्ञान होता है ।

१३ सः गणस्य ईश्वर अस्ति=वह गण समूह का मालिक है ।

१४ सः समूहस्य ईश्वर अस्ति=वह समूह का मालिक है ।

१५ पुस्तके ज्ञानं अस्ति=पुस्तक में ज्ञान है ।

१६ मासे दिवसाः सन्ति=महीने में दिन होते हैं ।

१७ समूहे मनुष्याः सन्ति=समूह में मनुष्य होते हैं ।

१८ आकाशे खगाः सन्ति=आकाश में पक्षी हैं ।

इनके निषेध के वाक्य पाठक स्वयं बना सकते हैं। तथा पाठकों को चाहिए वे उक्त शब्दों की अन्य विभक्तियों के रूप बना कर उनसे वाक्य बनवें और अपनी अभ्यास करें।

वाक्य

१ तत्र आकाशे स्वर्गं पश्य । २ हे देवदत्त ! यज्ञदत्तः कुत्र गच्छति ? ३. इदानीं यज्ञदत्तः गृहं गच्छति । ४ श्रीकृष्णस्य उत्तरीयं अत्र आनय । ५ स तत्र व्यर्थं गच्छति । ६ स पुरुषः विमर्थं पुष्पं आनयति ?

पाठ ६

लेखकः=लिखने वाला ।

कृष्णचन्द्रः=कृष्णचन्द्र ।

करोति=बढ़ करता है ।

करोपि=तू करता है ।

करोमि=करता हूँ ।

चित्रं=चित्र, तस्वीर ।

पटं=बख, कपड़ा ।

पुष्पमालां=फूलों की माला ।

लवणं=नमक ।

रामचन्द्रः पाठशालां गमिष्यति लेखं च लेखयिष्यति । उपदेशकः=उपदेशक । देवदत्तः=देवदत्तः ।
२ सत्यकामः गृहं गमिष्यति मधुरं च फलं भक्षयिष्यति=
सत्यकाम घर जावेगा और मधुर फल खावेगा ।
३ अहं वनं गमिष्यामि पुष्पमालां च करिष्यामि=मैं वन में
जाऊँगा और फूलों की माला बनाऊँगा ।
४ हरिश्चन्द्रः कदा उद्यानं गमिष्यति=हरिश्चन्द्र कब बाग को
जावेगा ।

५ स श्वः तत्र गमिष्यति=वृह कल वहाँ जावेगा ।

६ देवदत्तः सर्वदा उद्यानं गच्छति पुष्पमालां च करोति किं=
देवदत्तः हमेशा बाग में जाता है और पुष्पमाला
बनाता है क्या ?

७ यदि हरिश्चन्द्रः उद्यानं न गमिष्यति=अगर हरिश्चन्द्र बाग
को न जायगा ।

८ तर्हि देवदत्तः अत्रि न गमिष्यति=तब देवदत्त भी न
जायगा ।

शब्द

गच्छ=जा ।

नय=ले जा ।

धन=रुप्य ।

आणकं=पाना ।

पृथं=वृत्त को ।

फुरु=फ ।

स्वीकुरु=शोका ।

एकं=एक ।

घौतं=धुआ दूषा ।

आगच्छ=आ ।

आनय=ले जा ।

रुप्यकं=रुपया ।

द्रव्यं=धन ।

भक्षय=खा ।

देहि=दे ।

गृहाण=ले ।

अन्य=दूसरा ।

सूत्रं=सूत ।

१ त्वं गृहं गच्छ, घौतं वस्त्रं च आनय=तू पर जा भी
धोया दूषा वस्त्र ले जा ।

२, त्वं अत्र आगच्छ मधुं च फलं भक्षय=तू यहाँ आ भी
मीठा फल खा ।

३. स वनं गच्छति अन्य पुष्प च आनयति=वह वन में जाता है और दूसरा फूल लाता है ।
४. एकं रूप्यकं देहि=एक रुपया दे ।
५. अत्र आगच्छ च मयुरं दुग्धं गृहाण=यहाँ आ और मीठा दूध ले ।
६. उद्यान गच्छ फल च भक्ष्य-बाग को जा और फल खा ।
७. अन्य वस्त्रं देहि=दूसरा वस्त्र दे ।
८. अन्यं पुस्तकं आनय=दूसरा पुस्तक ले आ ।
९. अपूप देहि सूपं च स्त्रीमुखे=भूड़ा दे और दाल ले ।
१०. सुद्रौदन देहि दुग्ध च तत्र नय=खिचड़ी दे और दूध बहा ले जा ।
११. अत्र त्वं आगच्छ स्नादु फल च देहि=यहाँ तू आ और मीठा फल दे ।
१२. आदत्तं भक्षय, यत्र मुत्रापि च गच्छ=चावल खा और जहा करी भी जा ।

पूर्व दो पाठों में 'द्वय तथा राम' इन दो शब्दों की सातों विभक्तियों का एक वचन के रूप दिये हैं । एक वचन वह होता है कि जो एक सख्या का बोधक हो, जैसे — छात्र (एक छात्र) । 'छात्र' शब्द से ही एक छात्र का बोध होता है । बहुत रूप तो वचनको 'एक' कहेंगे ।

अपने में एक सख्या का दर्शाते वचनको 'एकवचन' कहते हैं । तथा एक से अधिक सख्या का बोधक जो वचन होता है उसको अनेक वचन कहते हैं । जैसे — छात्र (एकवचन) । छात्रे अनेक वचन) ।

संस्कृत में तीन वचन हैं। एक संख्या बताने वाला 'एकवचन' होता है। दो संख्या बताने वाला 'द्विवचन' कहलाता है। तथा तीन अथवा तीन से अधिक संख्या बताने वाले को 'बहुवचन' कहते हैं।

द्विवचन तथा बहुवचन के रूप संस्कृत स्वयं शिक्षक के दृमरे भाग में दिये जायेंगे। इस प्रथम भाग में केवल एकवचन के ही रूप दिये जाने हैं। अगर पाठक एकवचन के ही रूप ध्यान में रखेंगे तो वे बहुत से उपयोगी वाक्य बना सकेंगे। इस लिये पाठकों को चा'हिये कि वे इन रूपों की ओर विशेष ध्यान दें। अब कुछ वाक्य देते हैं:—

१. त्रिष्णुमित्रस्य गृहं कुत्र अस्ति ? = त्रिष्णुमित्र का घर कहाँ है।
२. तस्य गृहं तत्र न अस्ति = उसका घर वहाँ नहीं है।
३. ह्युसेनेन द्रव्यं दत्तम् = हुसेन ने धन दिया।
४. यज्ञदत्तः कदा अत्र आगमिष्यति = यज्ञदत्त कब यहाँ आवेगा।
५. फलस्य बीजं कुत्र अस्ति ? = फल का बीज कहाँ है।
६. पश्य स तत्र न अस्ति = देख वह वहाँ नहीं है।
७. दीपस्य प्रकाशः नास्ति = दीये का उजाला नहीं है।
८. पर्वतस्य शिखरं रमणीयं अस्ति = पर्वत का शिखर रमणीय है।
९. पाठे शब्दाः सन्ति = पाठ के अन्दर शब्द हैं।
१०. शब्दे अक्षराणि सन्ति = शब्द के अन्दर अक्षर हैं।
११. पुस्तकं त्यक्त्वा गच्छ = किताब को छोड़कर जा।
१२. एतस्य पुस्तकं अन्यः कथं नेायति = एक की पुस्तक दूसरा कैसे ले जावेगा।
१३. मनुष्यस्य चरं नाम्नि = मनुष्य का चरण नहीं है।

१४. बालकस्य मुलं मलिनं अस्ति=लडके का मुख मलिन है ।

१५. तस्य मुलं मलिनं न अस्ति=उसका मुँह मलिन नहीं है ।

१५. राजपुरुषस्य आज्ञा अस्ति=राजा के मनुष्य की आज्ञा है ।

पाठ ७

पाठकों को उचित है कि वे प्रतिदिन पूर्व पठों में से भी शब्द कण्ठ किया करें तथा वाक्यों की ओर चारंबार ध्यान दिया करें तथा आये हुए शब्दों से अन्यान्य नये नये वाक्य घडते रहें, ऐसा प्रयत्न करने से ही उनकी इस देव भाषा में शीघ्र गति हो जावेगी, अन्यथा नहीं, अब नीचे लिखे हुए शब्द कण्ठ कीजिये:—

कथय=बह ।

अस्ति=बह है ।

अस्मि=ह ।

दयां=दया को ।

आगच्छ=आ ।

ब्रूहि=बोल ।

पश्य=देख ।

पाठं=पाठ को ।

दर्शय=बता ।

असि=तू है ।

सत्यं=सचाई ।

संध्यां=सध्या को ।

शृणु=सुन ।

चद=कह ।

पाकं=राक ।

कर्म=काम कार्य ।

वाक्य

१. सत्यं ब्रूहि=सत्य बोल ।

२. उद्यानं पश्य=बाग को देख ।

३. दया कुरु=दया कर ।

४. संख्यां कुरु=संख्या कर ।

५. सत्यकामः तत्र अस्ति=सत्यकाम वहां है ।

६. हरिश्चन्द्र अत्र अस्ति=हरिश्चन्द्र वहां है ।

७. अहं अस्मि=मैं हूँ ।

८. त्वं असि=तू है ।

९. सः अस्ति=वह है ।

१० विष्णुमित्रः कुत्र अस्ति=विष्णुमित्र कहां है ?

११ परय, स तत्र अस्ति=देख वह वहां है ।

१२ नहि नहि, स तत्र नास्ति=नहीं, नहीं, वह वहां नहीं है ।

शब्द

द्वारं=द्वार, दरवाजा ।

रथं=गाड़ी, राथी ।

पातायनं=खिड़की ।

पात्रं=बरतन ।

मुखं=मुँह ।

उद्घाटय=खोल ।

पिघेहि=पंद कर ।

कपाटं=दरवाजे के फट्टे, ढिबाड़े ।

पिप्=पी ।

नेत्र=आँख ।

१ द्वारं उद्घाटय पात्रं च अत्र आनय=दरवाजा खोल और
बरतन वहां ले आ ।

२ पातायनं पिघेहि जलं च पिब=खिड़की बन्द कर और
जल पी ।

३ रथं अत्र आनय फलं च तत्र नय=रथ वहां ले आ और
फल वहां ले जा ।

- ४ पात्रं अत्र न आनय = घरतन यहां न ला !
- ५ कथं त्वं अन्यं पात्रं आनयसि = कैसे तू दूसरा घरतन लाता है ।
- ६ अहं अन्यं पात्रे न आनयामि = मैं दूसरा घरतन नही लाता ।
- ७ रथं आनय घनं च श्वः प्रभाते गच्छ = रथ ले आ और वन को कल मधेरे जा ।
- ८ जलं देहि मोदकं दुग्धं च स्त्रीसुर = जल दे और लड्डू और दूध ले ।
- ९ त्वं पुत्र आसि = तू कहां है ।
- १० अहं अत्र अस्मि = मैं यहां हूं ।
- ११ घनं देहि स्वादु दुग्धं च अत्र आनय = घन दे और मोठा दूध यहां ले आ ।
- १२ कपाटं उद्घाटय पुष्पमालां च तत्र नय = किवाड़ खोल और फूलों की माला वहां लेजा ।
- १३ त्वं फलं भक्षयसि किं = तू फल खाता है क्या ?
- १४ नहि, अहं मोदकं आम्रं च भक्षयामि = नही मैं लड्डू और आम खाता हूं ।
- १५ यदि त्वं रथ आनेष्यसि तर्हि अहं हरिद्वारं गमिष्यामि
अगर तू रथ ले आवगा तो मैं हरिद्वार को जाऊंगा ।

अब 'रथ' और 'मार्ग' शब्द के सार्वी विभक्तियों के एक-एक के रूप देते हैं—

रथ शब्द के रूप

१. रथः=रथ ।
 २. रथं=रथ को ।
 ३. रथेन=रथ ने ।
 ४. रथाय=रथ के लिये ।
 ५. रथात्=रथ से ।
 ६. रथस्य=रथ का ।
 ७. रथे=रथ में ।
- (हे) रथ=हे रथ ।

मार्ग शब्द के रूप

- मार्गः=मार्ग ।
 - मार्गं=मार्ग को ।
 - मार्गेण=मार्ग ने ।
 - मार्गाय=मार्गके लिये ।
 - मार्गात्=मार्ग से ।
 - मार्गस्य=मार्ग का ।
 - मार्गे=मार्ग में ।
- (हे) मार्ग=हे मार्ग ।

शब्द

इसी प्रकार राम, शालक, मृग सर्प, सूर्य, आनन्द, आकार कुमार, लेख, दण्ड, श्यादि अकारान्त पुलिगो शब्द कहते हैं । जिन शब्दों के अंत में अकार का उच्चारण होता है उनको अकारान्त शब्द कहते हैं । अब कुछ अकारान्त शब्द देते हैं जिनके रूप 'देव' 'राम' शब्द के समान ही होते हैं ।

इन्द्रः=राजा, मुख्य ।

प्रायः=गांव ।

मृगः=राजा ।

मूपकः=चूड़ा ।

रसः=रस ।

वासः=रहना, कपड़ा ।

समुद्रः=समुद्र सागर ।

स्वरः=आवाज ।

अभङ्कः=लड़का ।

चरणः=पांव ।

भसादः=मेहरबानी ।

रघुकः=रहने वाला ।

घरसः=लड़का ।

वृत्तः=इरक्त ।

सर्पः=सांप ।

आचार्यः=गुरु ।

चोरः=चोर ।

जनः=लोक ।

पुत्रः=लड़का ।

वेदः=वेद, ज्ञान ।

दण्डः=सोटी ।

मनुष्यः=मनुष्य ।

वाक्य

१. अर्मकः रथं पश्यति=लड़का गाड़ी देखता है ।

२. नृपः चोरं ताडयति=राजा चोर को पीटता है ।

३. स रथेन अन्यं मामं शीघ्रं गच्छति=वह रथ से दूसरे
माम को जल्दी जाता है ।

४. वृक्षात् फलं पतति=दरखत से फल गिरता है ।

५. समुद्रात् जलं आनयति=समुद्र से पानी लाता है ।

६. आचार्यः धर्मस्य मार्गं शिष्याय दर्शयति=गुरु धर्म का मार्ग
शिष्य के लिये दर्शाता है ।

७. तस्य वासः तत्र भविष्यति=वस्त्रका रहना वहाँ होगा ।

८. चोरः धनं चोरयति=चोर धन चुराता है ।

९. नृपः जनं रंजयति=राजा लोगों का रंजन (समाधान)
करता है ।

१०. इन्द्रः स्वर्गस्य राजा अस्ति=इन्द्र स्वर्ग का राजा है ।

अब कुछ वाक्य नीचे देते हैं जो पाठक स्वयं समझ सकेंगे ।

१. पुत्रः रसं पिबति । २. वत्सः रथं न पश्यति । ३. सः
मार्गेण न गच्छति । ४. किं स रथेन मामं न गमिष्यति । ५. यज्ञ-

ॐ शीघ्रं=जल्दी ।

† शिष्यः=शागिद ।

‡ पिबति=पीता है ।

मित्रः कदा तत्र गमिष्यति । ६ रथे नृपः ॐ उपविष्टः । ७ तेन
 लेखः † लिखितः । ८ आचार्यः कदा आगमिष्यति । ९ मनुष्यः
 दण्डेन मूपकं § ताडयति । १० मार्गे तस्य पुस्तकं ‡ पतितम् ॥
 ११ यथा त्वं गच्छसि तथा रामकृष्णः अपि गच्छति । १२ यथा
 त्वं वदसि तथा सः न वदति । १३ त्वं किमर्थं फलं न भक्षयसि ।
 १४ स इदानीं नैव ग्रामं गमिष्यति । १५ यथा नृपः अस्ति तथा
 एव विप्रः अस्ति । १६ यदा अचार्यः तत्र गमिष्यति तदा एव
 त्वं तत्र गच्छ । १७ तस्य पुत्रः पात्रेण जलं पिबति । १८ यः
 पात्रेण जलं पिबति स तस्य पुत्रः नास्ति । १९ तर्हि कः सः । २०
 स आचार्यस्य पुत्रः अस्ति ।

पाठ ८

अध्याय=सुनने के लिये ।

गमनाय=जाने के लिये ।

श्लोडनाय=खेजने के लिये ।

पठसि=तू पढ़ता है ।

पठ=पढ़ो ।

पानाय=पीने के लिये ।

भक्षणाय=खाने के लिये ।

पठिष्यति=वह पढ़ेगा ।

पठिष्यामि=पढ़ूँगा ।

दर्शनाय=देखने के लिये ।

शयनाय=सोने के लिये ।

पठति=वह पढ़ता है ।

पठामि=पढ़ता हूँ ।

स्नानाय=स्नान के लिये ।

भोजनाय=भोजन के लिये ।

पठनाय=पढ़ने के लिये ।

पठिष्यसि=तू पढ़ेगा ।

लिख=लिखो ।

* उपविष्टः=बैठा है ।

† लिखितः=लिखा है ।

‡ ताडयति=पीटता है ।

‡ पतितं=गिरा है ।

अकारान्त पुलिग शब्द

लेखः=लेख ।

पाठः=पाठ ।

दैत्यः=राक्षस ।

पान्थः=मुसाफिर ।

अर्थः=पैसा, धन ।

करः=हाथ ।

कर्मः=काम ।

चन्द्रः=चन्द्र ।

विमः=प्राक्षण ।

सूर्यः=सूरज ।

दीपः=दीप, दिया ।

जनः=मनुष्य ।

समाजः=समाज ।

मृगः=हिरण ।

वानरः=बंदर ।

अस्ताचलः=सूरज जहाँ

डूबता है वह पश्चिम दिशा
का पहाड़ ।

दिवसः=दिन ।

यत्नः=प्रयत्न, पुरुषार्थ ।

स्वर्गः=स्वर्ग ।

पादः=पाँव ।

कुमारः=लड़का ।

देवः=राजा, विद्वान् ।

पाठकों को चाहिये कि वे इनक सातों विभक्तियों के रूप
रैष, राम शब्दों के समान बनावें ।

१. स्नानाय जल देहि=स्नान के लिए जल दे ।

२. पठनाय पुस्तक अस्ति=पढ़ने के लिये पुस्तक है ।

३. भोजनाय अन्न भविष्यति किं ?=भोजन के लिये अन्न
होगा क्या ?

४. भक्षणाय फल देहि=खाने के लिये फल दे ।

५. तत्र सूर्यं पश्य=वहाँ सूर्य को देख ।

६. विष्णुमित्रः कुमारं अत्र किमर्थं आनयति=विष्णुमित्र
जड़के को यहाँ किस लिये लाता है ।

७. हरिश्चन्द्रः अग्निं तत्र नेष्यति किं=हरिश्चन्द्र भाग को वहाँ
वहाँ ले जायगा क्या ?
८. पठनाय दीपं पुस्तकं च अत्र आनय=पढ़ने के लिये दीप
और पुस्तक यहाँ ले आ ।
९. प्रातः स्नानाय गच्छामि=सवेरे स्नान के लिये जाता हूँ ।
१०. पानाय मधुरं दुग्धं देहि=पीने के लिये मोठा दूध दे ।
११. अत्र स्वादु दुग्धं अस्ति=यहाँ मोठा दूध है ।
१२. स्वादु दुग्धं अत्र नास्ति=क्या दूध मोठा यहाँ नहीं है ?
१३. स्नानाय जलं नय=स्नान के लिये जल ले जा ।

शब्द

किमर्थं=किस लिये ।

पश्चात्=पीछे से ।

शीघ्रं=जल्दी ।

गत्वा=जाके ।

भक्षयित्वा=खाके ।

किं अर्थं=किस लिये ।

सत्वरं=शीघ्र, जल्दी ।

परन्तु=परन्तु, लेकिन ।

पठित्वा=पढ़ के ।

दृष्ट्वा=देख कर ।

अधुना=अब ।

पूर्वं=पहिले ।

कृत्वा=करके ।

दृत्वा=देके ।

विचार्यं=सोच कर ।

इदानीं=अब ।

पथं=हि ।

स्नात्वा=स्नान करके ।

नीत्वा=लेके ।

विलोक्यं=देख कर ।

वाक्य

१. अत्र जलं पीत्वा शीघ्रं अत्र आगच्छ=वहाँ जल पीकर यहाँ आ ।
२. स्नानाय जलं दृष्ट्वा सत्वरं स्नानं गच्छ=स्नान के लिये पानी
देकर शीघ्र भाग लो आ ।

३. एवं इदानीं पठति परन्तु अहं न पठामि=तू अब पढ़ता है परन्तु मैं नहीं पढ़ता
४. विष्णुमित्रः वसं कृत्वा स्नानं करिष्यति=विष्णुमित्र . काम करके स्नान करेगा ।
५. त्वं पूर्वं गृहं गत्वा पश्चात् स्नानं कुरु=तू पहिले घर जाकर पीछे से स्नान कर ।
६. तत्र स्नानाय जलं अस्ति न=वहां स्नान के लिये जल है क्या ?
७. तत्र स्नानाय जलं नास्ति परन्तु अप्र अस्ति=वहां स्नान के जल नहीं है. परन्तु यहां है ।
८. देवदत्तः अन्नं भक्षयित्वा पाठशालां गमिष्यति=देवदत्त भोजन खाकर पाठशाला को जायगा ।
९. त्वं पठित्वा शीघ्रं आगच्छ ममीपात्र च देहि=तू पढ़ कर जल्दी आ और दवात दे ।
१०. मोदकं भक्षयि वा त्व कुत्र गमिष्यसि=जड़हू ग्याकर तू वहां जायगा ।
११. मोदकं शीघ्रं भक्षय पश्चाद् जलं पिव=जड़हू जल्दी खा और पीछे से पानी पी ।
१२. प्रातः वनं गत्वा साय आगमिष्यामि=सवेरे वन को जाकर शाम को आऊंगा ।

अकागन्त पुल्लिङ्ग शब्द

अपराधः=कसूर ।	उपायः=उपाय ।
कुमारः=लडका ।	उत्रः=बुवार ।
पर्वतः=पहाड़ ।	विनयः=तम्रना ।
कामः=इच्छा, कामवासना ।	गुणः=गुण ।
शूर्यः=नौकर ।	विहगः=पत्नी ।

मीहः=संशय, मूल ।

धूमः=धूँयों ! Smoke

संमानः=मान, आदर ।

बुधः=ज्ञानी ।

संगः=सोवत, साथ ।

मनोरथः=इच्छा ।

समागमः=सहवास, मुलाकात ।

लोभः=लाजब ।

कासारः=तालाब । Tar

योधः=लड़ने वाला, शूर ।

सैनिकः=फौजी आदमी ।

इस सब शब्दों के रूप देव-राम के समान बनते हैं । पाठकों को प्रचित है कि, वे इनके सानों विभक्तियों के एक वचन के रूप बनायें । अब इनके रूप बनाकर कुछ वाक्य देते हैं—

१. तेन अपराधः कृतः=उसने अपराध किया ।

२. स पर्यतस्य उपरि गतः=वह पहाड़ के ऊपर गया ।

३. म बुधः सायं अत्र आगमिष्यति=वह ज्ञानी शाम को यहाँ आवेगा ।

४. एकः विद्वान् वृत्ते अस्ति तं पर्य=एक पत्नी दरगहन-पर है उसकी देख ।

५. भृत्यः तत्र गतः=नौकर यहाँ गया ।

६. मम कुमारः अधुना पुस्तकं पठति=मेरा लड़का अब किताब पढ़ता है ।

७. योधः युद्धं करोति=लड़ने वाला लड़ाई करता है ।

८. सैनिकः तत्र न अस्ति=फौजी आदमी यहाँ नहीं है ।

९. स उदरेण पीडितः अस्ति=वह सुगार से पीड़ित हुआ है ।

१०. गुणः संमानाय भवति=गुण आदर के लिये होता है ।

११. कुमारस्य पुस्तकं कुत्र अस्ति, दर्शय=लड़के की किताब कहीं दे, बता ।

१२. बुधस्य समागमेन तेन ज्ञानं प्राप्तम्—ज्ञानी के सहवास से उसने ज्ञान प्राप्त किया !

अब नीचे ऐसे वाक्य देते हैं जो कि भाषान्तर बिना ही पाठक समझ जायेंगे:—

(१) त्वं इदानीं किं तत् पुस्तकं पठसि ? (२) तत्र खानाय शुद्धं जलं अस्ति । (३) तव भृत्यः कुत्र गतः ? (४) मम भृत्यः आपणे गतः । (५) किमर्थं स आपणे गतः ? (६) स फलं अन्नं च आनेष्यति । (७) अहं फलं अन्नं च भक्षयितुं इच्छामि । (८) स भोदकं भक्षयित्वा पाठशालां पठितुं गतः । (९) स दिने दिने प्रातः ज्ञानं कृत्वा वनं गच्छति । (१०) स तत्र किं करोति ? (११) स वनं गत्वा संघ्यां करोति ? (१२) नृपः अत्र आगतः (१३) बुधः इदानीं एव तत्र गतः । (१४) नस्य मनोरथः उत्तमः अस्ति । (१५) स कासारं स्नानाय गच्छति । (१६) तत्र कासारस्य जलं स्वादु अस्ति । (१७) तत्र कुपस्य जलं स्वादु नास्ति ।

अब निम्नलिखित भाषा के वाक्यों का संस्कृत में भाषान्तर कीजिये:—

(१) ज्ञान के लिये जल दे । (२) खाने के लिये अन्न दे । (३) ज्ञान के लिये पानी दे । (४) हरिश्चन्द्र कहां जाता है ? (५) हरिश्चन्द्र गांव को जाता है । (६) पीने के लिये भोठा दूध दो । (७) तू अन्न पढ़ता है, परन्तु मैं नहीं पढ़ता । (८) वहां ज्ञान के लिये जल है क्या ? (९) उसका मनोरथ उत्तम है । (१०) वह खालाब के पास ज्ञान के लिये जाता है । (११) तेरे फूँ के जल भोठा है ।

पाठ ६

शिष्यः=शिष्य, पढ़ने वाला ।	- कृपा=दया, मेहरबानी ।
दासः=नौकर ।	स्वसा=बहिन ।
मानुः=सूर्य ।	माता=माँ ।
गुरुः=पढ़ाने वाला ।	पिता=पिता, बाप ।
अधु=माई ।	भगिनी=बहिन ।
पुत्रः=पुत्र, लड़का ।	तुभ्यं=तेरे लिये ।
तव=तेरा ।	मह्यं=मेरे लिये ।
मम=मेरा ।	तस्मै=उपके लिये ।
तस्य=उसका ।	अस्मै=इसके लिये ।

वाक्य

१. तव गुरुः कुत्र अस्ति=तेरा गुरु कहाँ है ?
२. इदानीं मम गुरुः तत्र अस्ति=अब मेरा गुरु वहाँ है ।
३. मम माता अथ सायं वनं गमिष्यति=मेरी माता आज शाम को वन की ओर जायेगी ।
४. अधुना मह्यं पठनाय पुस्तकं देहि=अब मुझको पढ़ने के लिए पुस्तक दे ।
५. तस्य गृहं कुत्र अस्ति=उसका घर कहाँ है ?
६. तव दासः प्रामं गमिष्यति किं ?=तेरा नौकर गाँव की ओर जायगा क्या ?
७. तव पुत्रः वनं गमिष्यति=तेरा पुत्र वन की ओर जायगा ?
८. मम अधुः इदानीं पुस्तकं पठति=मेरी माई अब पुस्तक पढ़ती है ।
९. मम माता पुष्पमालां करोति=मेरी माता पुष्पमाला करती है ।
१०. तव पिता तव च माता=तेरा पिता और तेरी माता ।

११. पानाय मह्यं जलं देहि = पीने के लिये, मुझे पानी दे ।
 १२. स्नात्वा सायं आगमिष्यति = वह स्नान करके शाम को आवेगा ।
 १३. नहि नहि स ग्राम गत्वा रात्रौ आगमिष्यति = नहीं नहीं वह गांव को जाकर रात्रि को आवेगा ।

शब्द

इच्छति = वह चाहता है ।	लिखति = वह लिखता है ।
इच्छसि = तू चाहता है ।	लिखसि = तू लिखता है ।
इच्छामि = चाहता हूँ ।	लिखामि = लिखता हूँ ।
पत्रं = पत्र ।	कूपं = कूप पर ।
शुद्धं = शुद्ध, पाक, साफ ।	औषधं = औषध, दवा ।
मार्गं = मार्ग, रास्ता ।	उत्तरीयं = दुपट्टा ।
कर्तुं = करने के लिये ।	लेखितुं = लिखने के लिये ।
भोक्तुं = खाने के लिये ।	स्वीकर्तुं = स्वीकार करने के लिये ।
दातुं = देने के लिये ।	
भक्षयितुं = भक्षण करने के लिये ।	गन्तुं = जाने के लिये ।
पातुं = पीने के लिये ।	आगन्तुं = आने के लिये ।
पठितुं = पढ़ने के लिये ।	नेतुं = ले जाने के लिये ।
	आनेतुं = लाने के लिये ।

वाक्य

१. रामचन्द्रः पुस्तकं पठितुं इच्छति = रामचन्द्र पुस्तक पढ़ने की इच्छा करता है ।
२. हरिश्चन्द्रः शुद्धं जलं पातुं इच्छति = हरिश्चन्द्र शुद्ध जल पीने की इच्छा करता है ।
३. अहं कूपं गत्वा स्नानं कर्तुं इच्छामि = मैं कूप पर जाकर स्नान करना चाहता हूँ ।

४. त्वं श्वः प्रातः स्नानं करिष्यसि किं=तू कल प्रातः स्नान करेगा क्या ?
५. नहि अहं श्वः प्रातः स्नानं कर्तुं न इच्छामि=नहीं, मैं कल सवेरे स्नान करना नहीं चाहता ।
६. यदि प्रातः न करिष्यसि तर्हि कदा करिष्यसि=अगर सवेरे नहीं करेगा तो कब करेगा ।
७. सायं करिष्यामि=शाम को करूँगा ।
८. त्वं इदानीं पठितुं इच्छसि किं ?=तू अब पढ़ना चाहता है क्या ?
९. नहि इदानीं अहं फलं भक्षयितु इच्छामि=नहीं, अब मैं फल खाना चाहता हूँ ।

अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द

अलंकारः=जेवर ।	दण्डः=सोटी ।
छात्रः=शिष्य, शागिर्द ।	मादाणुः=पेटित ।
व्याधः=शिकारी ।	स्तेनः=चोर ।
स्नेही=दोस्त ।	वर्णः=रङ्ग ।
कपोलः=गाल ।	घातकः=पक पत्नी ।
तरंगः=झर (पानी) ।	द्विरेफः=ध्रुवर ।
नयनः=आँख ।	नेत्रः=आँख ।
प्रवाहः=धारा ।	शकः=हन्त्रः ।
आतपः=सूर्य की धूप ।	उद्यमः=उद्योग ।
पुरुषार्थः=प्रयत्न ।	उपदेशः=उपदेश ।
ओष्ठः=होंठ ।	बुधधुरः=बुद्धि ।

इन सब शब्दों के रूप गम, देव शब्दों के समान ही होते हैं । पाठकों को चाहिये कि ये इनके भातों विभक्तियों के रूप बनायें, और उनका वाक्यों में प्रयोग करें ।

२. उत्तिष्ठ । शौच कृत्वा शीघ्रं स्नानं कुरु=उठ शौच करके जल्दी स्नान कर ।
३. अहं शौचं कृत्वा मुखप्रक्षालनं करिष्यामि=मैं शौच करके मुँह धोऊँगा ।
४. पश्चात् स्नानं कृत्वा सध्यां करिष्यसि किं=पीछे स्नान करके सध्या करेगा क्या ?
५. नहि, अहं पश्चद् व्यायामं कृत्वा स्नानं कर्तुं इच्छामि=नहीं, मैं पीछे से व्यायाम करके स्नान करना चाहता हूँ ।
६. तथा कुरु=वैसा कर ।
७. स्नानं सध्या च कृत्वा पुस्तकं पठिष्यामि=स्नान और सध्या करके पुस्तक पढ़ूँगा ।
८. भो मित्र । किं स्व प्रातः अग्निहोत्रं न करोषि=हे मित्र । क्या तू सवेरे अग्निहोत्र नहीं करता है ?
९. कुतः न करोमि, सदैव करोमि एव=क्यों नहीं करता ? हमेशा करता ही हूँ ।
१०. पश्चात् मध्याह्ने किं किं करिष्यसि=पीछे दोपहर को क्या करेगा ।
११. भोजनं कृत्वा पठनाय पाठशालां गच्छामि=भोजन करके पढ़ने के लिये पाठशाला को जाता हूँ ।
१२. अहं सर्वदा पुस्तकं पठितुं इच्छामि=मैं हमेशा पुस्तक पढ़ना चाहता हूँ ।

शब्द

भ्रमणाय=घूमने के लिये । दानाय=देने के लिये ।

किमर्थं=किस के लिये । तिष्ठति=ठहरता है, बैठता है ।

११. पीतं पुष्पं न आनय=पीला फूल न ला ।
 १२. अत्र शुद्धं जलं अस्ति=यहां शुद्ध जल है ।
 १३. किमर्थं स्नानं इदानीं एव न करोषि=क्यों स्नान अभी नहीं करता ।
 १४. इदानीं एव स्नानं कर्तुं न इच्छामि=अभी स्नान करने की इच्छा नहीं ।

अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द

अक्षः=भौल, जूआ ।	अनर्थः=रुष्ट, दुःख ।
प्रन्थः=पुस्तक ।	प्रभवः=उत्पत्ति ।
परिवः=राजा ।	विन्ध्यः=एक पर्वत ।
शृगालः=गीदड़ ।	कपोतः=कबूतर ।
मेघ =घादल ।	सिंहः=बबर, शेर ।
आश्रमः=माश्रम, रहने का स्थान	कोपः=क्रोध, गुस्सा ।
तापः=गरमी ।	दुर्गः=किला ।
घरः=बर, इष्ट ।	वायसः=होवा ।
शुक्रः=तोता ।	देहः=शरीर, जिस्म ।
नगरः=पौर ।	याचकः=मांगने वाला ।
जनकः=पिता ।	सैनिकः=सिपाही ।

इन शब्दों के रूप भी देव-राम शब्द के समान ही होते हैं । पाठक इनके रूप सब विभक्तियों में बना सकते हैं ।

वाक्य

* पाठक इन वाक्यों को पढ़ते ही समझ जायेंगे, इसलिये इनके अर्थ नहीं दिये हैं ।

१ तेन, युधेन प्रन्थः लिखितः । २ पर्यन्ते सिंहः अस्ति ३ नगरे अथ चुरः आगतः । ४ अः स सैनिकः दुर्गं गमिष्यति ।

५ याचकः मार्गं तिष्ठति । ६ तस्य जनकः गृहे तिष्ठति । ७ तस्य पुत्रः पाठशालां गतः । ८ आकाशे मेघः अस्ति । ९ पार्थिवः युद्धं करोति । १० नृपस्य प्रसादेन तेन धनं प्राप्तम् । ११ तेन मित्रस्य गृहात् पुस्तकं आनीतम् । १२ स घनस्य मार्गं पश्यति । १३ आकाशे सूर्यः अस्ति । १४ घने वृक्षः अस्तिः । १५ वृक्षे रजः अस्तिः ।

परीक्षा

पाठकों को उचित है कि वे इन प्रश्नों के ठीक उत्तर देकर ही भागे बहें । अगर इनका ठीक उत्तर वे न दे सकें तो पहिले इस पाठ दुभाग पढ़ें :—

(१) निम्न शब्दों के सार्थ विभक्तियों के एकवचन के रूप लिखिये—

ग्राम । चरण । देव । नृप । मार्ग । रक्षक । राम । वृक्ष । दुर्ग । प्रथम । आश्रम । अनर्थ ।

(१) निम्नलिखित शब्दों का पञ्चमी तथा षष्ठी का एकवचन लिखिये । इस प्रश्न का उत्तर अतिशीघ्र लिखना चाहिये ।

नाग । पर्वत । देह । दिन । कपोत । कृष्ण । सिंह । लोभ । विनय । धनिक । छल । समागम ।

(२) निम्न वाक्यों का अर्थ धीजिये :—

(१) एवं श्वः प्रातः स्नानं करिष्यासि किम् । (२) त्वं इदानीं पठितुं इच्छसि किम् । (३) अहं कासारं गत्वा स्नानं कर्तुं इच्छामि । (४) त्वं तं रयम् अत्र आनय । (५) अग्न्य पुस्तकं आनय । (६) मुद्गोदने याचकाय देहि । याचकः तत्र मार्गं तिष्ठति । तं पश्य । (७) अत्र त्वं आगच्छ । शीघ्रं आगच्छ । (८) स सायं तत्र पुस्तकं नेष्यति । (९) कदा स आगमिष्यति । (१०) स श्वः पशाने आगमिष्यति ।

(४) भाषा के निम्न वाक्यों के सस्कृत वाक्य बनाइये—

(१) वह दुपट्टा ले जाता है। (२) मैं कल दोपहर को जाऊँगा। (३) लड्डू जलदी खा और पीछे से पानी पी ले। (४) देवदत्त भोजन खाकर पाठशाला को जायगा। (५) तू अब पढ़ता है, परन्तु मैं नहीं पढ़ता। (६) वाग को जा और फल खा (७) तू घर जा और घोया हुआ वस्त्र ले आ।

पाठ ११

अब इस पाठ हो चुके हैं, इतने थोड़े समय में पाठक बहुत से वाक्य बनाने में समर्थ हो रहे होंगे, वे अगर धैर्य से और और वाक्य चढ़ते जावेंगे, तो उनकी सस्कृत में बात चीत करने की शक्ति स्वयं बढ़ती जावेगी, सस्कृत भाषा की वाक्य रचना अत्युत्तम है, अमेजी तथा उर्दू के समान निश्चित स्थान पर शब्द रखने की आवश्यकता नहीं, देखिये —

अह मोदक भक्षयामि
अह भक्षयामि मोदक
मोदक भक्षयामि अह
मोदक अह भक्षयामि
भक्षयामि अह मोदक
भक्षयामि मोदक अह

ये सब वाक्य शुद्ध हैं और इन सब का अर्थ 'मैं लड्डू खाता हूँ' इतना ही है इसलिये पाठकों को बचित है कि वे प्रत्येक रूप शब्दों को यथा सभ्य उपयोग में लाकर नये नये वाक्य बनवें।

अब इस पाठ में कोई नया शब्द नहीं दिया जाता, पाठक आज के दिन कोई नया शब्द याद न करें और पिछले पाठों में से कोई वाक्य या शब्द भूला हो तो उसको ठीक ठीक स्मरण करें।

अब इस पाठ में पाठकों को ऐसे वाक्य दिये जावेंगे कि जिनके शब्दों का प्रयोग पहिले आ चुका है. यहाँ एक बात पाठकों को स्मरण रखनी चाहिए कि मनुष्यों के नाम वाक्य में आने से कोई नई रचना संस्कृत में नहीं होती, देखिये :—

रामचन्द्रः वनं गच्छति=रामचन्द्र वन को जाता है ।

विलियमः वनं गच्छति=विलियम वन को जाता है ।

महम्मदः वनं गच्छति=महम्मद (खान) वन को जाता है ।

अर्थात् बोलने के समय पाठक जिस किसी का नाम वाक्य में रखकर अपना आशय प्रकट कर सकते हैं ।

संस्कृत भाषा में दूसरी आसानी (सुभीता) यह है, कि लिंग के अनुसार शब्दों की विभक्तियाँ नहीं बदलती जिस अवस्था में बदलती हैं उस अवस्था का ध्यान हम आगे करेंगे, इस समय पाठक ऐसा समझें कि नहीं बदलती, देखिये :—

तस्य लेखनी=उसकी लेखनी ।

तस्य पुस्तकं=उसकी किताब ।

तस्य फलं=उसका फल ।

तस्य पुत्रः=उसका लड़का ।

पाठक यहां देखेंगे कि भाषा में “उसकी किताब” शब्दों में जिस कारण “का, का” यह भेद हुआ है वैसे कोई भेद संस्कृत में नहीं है, इस कारण संस्कृत के वाक्य बनाना भाषा के वाक्य बनाने से सुगम अर्थात् आसान है ।

वाक्य

१. त्वं अथ गृहं गतुं किमर्थं इच्छसि=तु आज घर जाने की क्यों इच्छा करता है ?

२. अथ मम पिता गृहं आगमिष्यति=आज मेरा पिता घर आवेगा ।

३. स कदा आगमिष्यति त्वं जानासि किं=वह कब आवेगा तू जानता है क्या ?
४. नहि अह न जानामि परन्तु स रात्रौ आगमिष्यति=नहीं, मैं नहीं जानता, परन्तु वह रात्रि में आवेगा।
५. जानसन' इदानीं किं करोति=जानसन (साहित्य) अब क्या करता है ?
६. स पत्रं लिखति=वह पत्र लिखता है ?
७. दिवानचन्द्रः धौतं वस्त्रं नयति=दिवानचन्द्र धोया हुआ कपड़ा लाता है।
८. रामकृष्णः इदानीं दीपं कुत्र नयति=रामकृष्ण अब दीवा कहा ले जाता है ?
९. स पठनाय दीपं पुस्तकं च नयति=वह पढ़ने के लिये दीवा और पुस्तक ले जाता है।
१०. कस्य पुस्तकं अस्ति=किसकी पुस्तक है ?
११. मम पुस्तकं अस्ति=मेरी पुस्तक है।
१२. तव वस्त्रं नास्ति किं=तेरा कपड़ा नहीं है क्या ?
१३. सत्वरं अत्र आगच्छ पीतं पुष्पं च पश्य=शीघ्र यहाँ आ और पीला फूल देख।

पूर्व-पाठों में आकारान्त शब्दों के रूप बनाने का प्रकार बताया है। अब इकारान्त पुल्लिङ्गी शब्दों के रूप बनाने का प्रकार बताते हैं:—

इकारान्त, पुल्लिङ्ग 'रभिः' शब्दः

१ प्रथमा	रविः	रवि (सूर्य)
२ द्वितीया	रवि—म्	रवि=को।
३ तृतीया	रवि-णा	रवि-ने

४. चतुर्थी	रवये	रवि के लिये ।
५. पञ्चमी	रवेः	रवि से ।
६. षष्ठी	रवेः	रवि का
७. सप्तमी	रवी	रवि में
संयोधन	(हे) रवे	हे रवे,

इस प्रकार अग्नि, अरि, अहि, उदधि, कवि, इत्यादि इकारान्त पुलिगी शब्द भी इसी प्रकार से बनते हैं ।

अग्निः=आग ।	अहिः=साँप ।
अरिः=शत्रु ।	उदधिः=समुद्र ।
कविः=काव्य रचयिता ।	बृहस्पतिः=गुरु ।
पतत्रिः=पत्नी ।	कपिः=बन्दर ।
शनिः=शनि तारा ।	नृपतिः=राजा ।
पाणिनिः=व्याकरणाचार्य ।	गिरि =पहाड़ ।

एक रवि शब्द के अनुकूल ही इनके एक वचन के रूप होते हैं ।

वाक्य

१. रविः आकाशे आगतः=सूर्य आकाश में आगया ।
२. बालक रविं पश्यति=बालका सूर्य को देखता है ।
३. रविणा प्रकाशः कृतः=सूर्य ने रौशनी की ।
४. रवये नमः कुरु=सूर्य के लिये नमस्कार कर ।
५. रवेः प्रकाशः भवति=सूर्य से प्रकाश होता है ।
६. रवेः प्रकाशं पश्य=सूर्य का प्रकाश देख ।
७. रवी प्रकाशं अस्ति=सूर्य में प्रकाश है ।
- १ तत्र अग्निः अस्ति, २ नरेन्द्रः अग्निं अत्र आनयति, ३

विष्णुमिश्रः अग्निना जलं वृष्णं करोति । ४ नृपतिः अरिणा सह युद्धं करोति । ५ कवेः काव्यं पठामि । ६ तं हिमगिरिं पश्य । ७ हिमगिरेः गङ्गा प्रभावति । ८ कपिः वृक्षे अस्ति, तं पश्य, कथं स मुरं करोति । ९ तस्य मुरं वृष्ण अस्ति । १० वृक्षरतिः आकाशे वदितः । ११ हिमगिरी मेघः आगतः १२ वदथी जलं अस्ति । १३ तत्र अहिः अस्ति, अतः तत्र न गच्छ । १४ पाणिनिना व्याकरणं रचितम् । १५ पतत्रिः अकाशे गच्छति । १६ पश्य कथं स पतत्रः आकाशे गच्छति । १७ यथा पतत्रिः आकाशे गच्छति, न तथा कपिः गच्छति ।

निम्न भाषा वाक्यों के संस्कृत वाक्य बनाइये :—

१ तू अब क्या पढ़ता है ? २ तेरा नौकर कहाँ गया ? ३ मैं बाजार में जाता हूँ । ४ मैं फल और अन्न खाना चाहता हूँ । ५ राजा आ गया । ६ ज्ञानी अभी वहाँ गया । ७ मेरे कुएं का पानी मीठा है । ८ वह बाग में जाकर सन्ध्या करता है । ९ मोदक खा और पानी पी । १० देख ? लड़का कैसा दौड़ता है ।

पाठ ११

धावन=दौड़ना ।	स्वीकरण=स्वीकार करना ।
धावति=वह दौड़ता है ।	धावसि=तू दौड़ता है ।
धावामि=दौड़ता हूँ ।	इच्छया=इच्छा से ।

१ वृष्णं=गरम । २ सह=साथ । ३ काव्य=कवितामय पुस्तक । ४ हिमगिरि=हिमालय । ५ प्रभवति=उत्पन्न होती है । ६ वृष्णं=झाला ७ वदितः=वदय हुआ । ८ व्याकरणं=व्याकरण (ग्रामर) । ९ रचितं=रचा ।

अंतरिक्षे = आकाश में ।	नगरे = शहर में ।
शीतं = ठण्डा ।	रत्नं = रत्न ।
भ्रमणं = घूमना ।	पश्यति = देखता है ।
पश्यसि = देखता है ।	पश्यामि = देखता हूँ ।
धूम्रयानेन = रेल गाड़ी से ।	विपासा = व्यास ।
द्युमुक्ता = भूख ।	व्यणं = गरम ।

वाक्य

१. स इच्छया स्वीकरिष्यति = वह इच्छा से स्वीकार करेगा ।
२. प्रकाशदेवः दद्याने व्यर्थं प्रावति = प्रकाशदेव याग में व्यर्थ दीदता है ।
३. त्वं इदानीं किमर्थं धावसि = तू अब क्यों दौड़ता है ?
४. अहं अधुना धावामि = मैं अब दौड़ता हूँ ।
५. अंतरिक्षे सूर्यं पश्यति किं = आकाश में सूर्य को देखना है क्या ?
६. रात्रौ सूर्यं न पश्यामि = रात्रि में सूर्य को नहीं देखता हूँ ।
७. विश्वामित्रः भ्रमणाय सायं गमिष्यति किं = विश्वामित्र घूमने के लिये शाम को जायगा क्या ?
८. स तत्र म्यातुं इच्छति = वह वहाँ ठहरना चाहता है ।
९. जालंधरनगरे मम गृहं अस्ति = जालंधर शहर में मेरा घर है ।
१०. भो मित्र ! तव गृहं कुत्र अस्ति = हे मित्र ! तेरा घर कहाँ है ?
११. मम गृहं पेशावरनगरे अस्ति = मेरा घर पेशावर शहर में है ।
१२. धूम्रयानेन त्वं तत्र गमिष्यसि किं = रेल गाड़ी से वहाँ जायगा क्या ।
१३. अथ किं, धूम्रयानेन अहं तत्र परश्वः गमिष्यामि = और क्या ? रेलगाड़ी से मैं वहाँ परसों जाऊँगा ।

१४. इदानीं विपासा अस्ति मह्यं शीतं जलं देहि=अब प्यास है, मुझे ठण्डा जल दे ।
१५. अधुना युमुक्ता न अस्ति, अन्नं न देहि=अब भूख नहीं है, अन्न न दे ।

शब्द

कन्या=पुत्री, लड़की ।

कुराः=दुबला ।

मित्रं=मित्र, दोस्त ।

पिष्टव्यः=बचा ।

पिबसि=तू पीता है ।

पिबति=वह पीता है ।

पिबामि=पीता हूँ ।

संघातः=समूह ।

पास्यामि=पीऊँगा ।

पास्यति=वह पीयेगा ।

नास्ति=नहीं है ।

भ्राता=भाई ।

सयोगः=मिलाप ।

स्वसा=भैन, बहिन ।

जामाता=दामाद ।

अवश्यं=अवश्य ।

नोचेत्=नहीं तो ।

सधिः=सुलह, मित्रता ।

नैव=नहीं ।

पास्यसि=तू पीयेगा ।

न एव=नहीं ।

स्पष्ट=निश्चय से ।

१. तब जामाता मेधुरं दुग्धं रात्री पास्यति=तेरा दामाद सीठा दूध रात्रि में पीयेगा ।
२. अहं रात्री दुग्धं नैव पिबामि=मैं रात्रि में दूध नहीं पीता ।
३. मम स्वसा उष्ये जलं पिबति=मेरी बहिन गरम पानी पीती है ।
४. अहं कदाचपि, उष्ये जलं पातुं न इच्छामि=मैं कभी भी गरम जल पीना नहीं चाहता ।
५. तब भ्राता गङ्गासतगरं कदा गमिष्यति=तेरा भाई महरास शहर तक आवेगा ।

६. यदि तव पिता गमिष्यति तर्हि सोऽपि गमिष्यति= अगर तेरा पिता जावेगा तो वह भी जायगा

७. नोचेत् नैव गमिष्यति=तही तो नहीं जायगा ।

८. स पीतं उत्तरीयं कदा आनयति=वह पीला डुपट्टा कब लाता है ।

९. भो मित्र ! इदानीं पीतं वस्त्रं न आनय=हे मित्र ! इस समय पीला वस्त्र न ला ।

१० मम रक्तं वस्त्रं कुत्र अस्ति जानामि हि=मेरा लाल कपड़ा कहाँ है जानते हो क्या ?

११. अत्र दीपः नास्ति, न जानामि तव रक्तं वस्त्रं=यहाँ दीप नहीं है (मैं) नहीं जानता तेरा लाल कपड़ा ।

१२. इदानीं सायंकालः जातः, भ्रमणाय गच्छ=अब शाम हो गई । घूमने के लिये जा ।

१३ त्वं कदा भ्रमणं कृष्यसि=तू कब भ्रमण करेगा ।

१४. अहं प्रातः भ्रमणाय गच्छामि न मायं=मैं सवेरे घूमने जाता हूँ शाम को नहीं ।

१५. त्वं कदा अपि न आगच्छसि=तू कभी भी नहीं आता है ।

इकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द

भूपतिः=राजा ।

नृपतिः=राजा ।

क्षेत्रपतिः=स्थान का मालिक । प्रजापतिः=ईश्वर राजा ।

प्राणपतिः=प्राणों का स्वामी । सुमतिः=उत्तम बुद्धि वाला

मारुतिः=हनुमान् ।

मुरारिः=विष्णु ।

पतिः=तापसी ।

पद्भिः=भाग ।

सेनापतिः=फौज का बड़ा अफसर ।

दुर्मतिः=बुरी बुद्धि वाला ।

मुनिः=तपस्वी ।

प्यति । १५) यत्र जगद्दीशचन्द्रः गमिष्यति तत्र विष्णुदत्त
 अवि गमिष्यति पव । (१६) अहं ओदनं नैव भक्षयिष्यामि
 (१७) स दुग्धं एव पिबति कदापि अन्नं नैव भक्षयति । (१८)
 स व्यर्थं तत्र गतः, तस्य पुस्तकं तत्र नास्ति ।

पाठ १३

मंद = पुस्त ।	मूकः = गूंगा ।
उपरि = ऊपर ।	अधः = नीचे ।
मध्ये = बीच में ।	शवैः = आहिस्ता, धीरे २
वदामि = बोलता हूँ ।	वदमि = (तू) बोलता है ।
वदति = (वह) बोलता है	दि एहमः = डोल ।
अगदः = दवाइ ।	उधैः = उंचे से ।
नीचैः = नीचे से ।	ववहुं = बोलने के लिये ।
उक्त्वा = बोल कर ।	वदिष्यामि = बोलूँगा ।
वदिष्यामि = तू बोलोगा ।	वदिष्यमि = वह बोलोगा ।

वाक्य

१. त्व उपरि गच्छ अह अधः गमिष्यामि = तू ऊपर जा मैं नीचे जाऊंगा ।
२. न, अह उपरि तिष्ठामि, त्वं अधः गच्छ = नहीं, मैं ऊपर ठहरता हूँ तू नीचे जा ।
३. ओ मित्र ! इदानीं शनैः शनैः अधः गच्छ = हे मित्र ! अब धीरे धीरे नीचे जा ।
४. स सदा तत्र तिष्ठति उधैः वदति च = वह हमेशा वहाँ बैठता और उंचे से बोलता है ।

५. त्वं किं सर्वदा नीचैः एव वदसि=तू कया हमेशा धीमे ही बोलता है ?
 अहं सदा नीचैः एव वक्तुं इच्छामि=मैं हमेशा धीमे ही बोलना चाहता हूँ ।
७. भो मित्र ! त्वं मध्ये किमर्थं तिष्ठसि=हे मित्र ! तू बीच में किसलिये ठहरता है ।
८. अहं जलं पीत्वा रात्रौ उपरि गमिष्यामि=मैं जल पीकर रात्रि में ऊपर जाऊँगा ।
९. अहं रात्रौ नैव जलं पिबामि=मैं रात्रि में जल नहीं पीता
१०. किं त्वं रात्रौ उष्णं मिष्टं च दुग्धं न पास्यसि=क्या तू रात्रि में गरम और मीठा दूध नहीं पीयेगा ।
१. कुतः न ? पास्यामि एव=क्यों नहीं, पीऊँगा ही ।
२. अत्तिष्ठ, इदानीं तस्मै फलं देहि=उठ अब उसके लिये फल दे ।
३. फलं स्वादु नास्ति, कथं दास्यामि=फल मीठा नहीं है कैसे दूँगा ?
३. यथा अस्ति तथा एव देहि=जैसा है वैसा ही दे ।

शब्द

- | | |
|-----------------------------|---------------------------|
| इति=ऐसा । | पर्यन्तं=तक । |
| वा=अथवा; या । | क्रीडामि=खेलता हूँ । |
| अथवा | क्रीडसि=तू खेलता है । |
| किंवा= ,, | क्रीडति=वह खेलता है । |
| अवश्यं=अवश्य जरूर । | मुष्टु=ठोक अच्छा । |
| धरं=भ्रेष्ठ, अच्छा । | कंदुकः=गेंद । |
| क्रीडयिष्यति=खेलेगा । | क्रीडयिष्यामि=तू खेलेगा । |
| क्रीडयिष्यामि=मैं खेलूँगा । | मदीयः=मेरा । |

वाक्य

१. देवदत्तः तत्र क्रीडति=देवदत्त वहाँ खेनता है ।
२. स तत्र सायं काले गत्वा क्रीडयिष्यति=वह वहाँ शाम के जाकर खेलेगा ।
३. स तत्र प्रातः गमिष्यति न वा=वह वहाँ सवेरे जायगा वा नहीं ?
४. अहं तत्र सायंकाल पर्यंतं स्थास्यामि=मैं वहाँ शाम तक ठहरूंगा ।
५. एवं अवश्यं आगच्छतु=तू अवश्य आ ।
६. स कन्दुरेण सुष्ठु क्रीडति=वह गेंद से अच्छा खेलता है ।
७. स न तथा सुष्ठु क्रीडति यथा विष्णुमित्रः=वह वैसा अच्छा नहीं खेलता जैसा विष्णुमित्र ।
८. सत्यं अस्ति=सत्य है ।
९. यथा वदसि तथा एव अस्ति=जैसा तू बोलता है वैसा ही है ।
१०. रात्रौ जल उपरि नयसि न वा=रात्रि में जल ऊपर ले जाते है या नहीं ?
११. अवश्यं नेष्यामि सत्यं वदामि=अवश्य ले जाऊंगा सत्य बोलता हूँ ।
१२. यदि एवं सत्यं वदसि नेष्यसि एव=अगर तू सच बोलता तो ले जायगा ही ।
१३. वरं यथा वदसि तथा कुरु=अच्छा, जैसा बोलता वैसा कर ।
१४. इदानीं भोजनं कर्तुं इच्छामि, अन्नं आनय=अब भोजन कर चाहता हूँ, अन्न ले आ ।

१५ अन्न नास्ति, मोदक अस्ति=अन्न नहीं है, लड्डू है ।

यहाँ तक पाठक जान चुके हैं कि अकारान्त तथा इकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द कैसे चलते हैं । अब उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप बनाना पाठकों ने सीखना ही आशा है कि पूर्व का ज्ञान न भूल कर शठक आगे पढ़ेंगे —

उकारान्त पुल्लिङ्ग 'भानु' शब्द के रूप

१ प्रथमा	भानु	भानु (सूर्य)
२ द्वितीया	भानुम्	भानु को
३ तृतीया	भानुना	भानु ने
४ चतुर्थी	भानवे	भानु के लिये
५ पचमी	भानो	भानु से
६ षष्ठी	,	भानु का
७ सप्तमी	भानौ	भानु में
सम्बोधन	हे भानो	हे भानु

इकारान्त तथा उकारान्त पुल्लिङ्गी शब्दों के पचमी तथा षष्ठी के कवचन के रूप एक जैसे होते हैं । पाठकों ने यह बात रवि, पति, मुनि इन शब्दों में पृ० ५२ पर देखी होगी तथा भानु शब्द श्लोकों में इस पाठ में स्पष्ट हो गई होगी । पचमी षष्ठी के रूप समान होते हैं इस कारण षष्ठी के स्थान (,) ऐसा चिह्न दिया है जिसका मतलब यह है कि यहाँ का रूप पूर्व की विभक्ति समान ही है । आशा है कि पाठक इस विशेषता को ध्यान रखेंगे ।

उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द

भानु =सूर्य ।

गुरु=अध्यापक ।

कारुः=कारीगर ।

अयुः=किरण ।

सिंधुः=नमुद्र, दर्या ।

वसुः=घन ।

शमुः=शिवजी ।

त्रिषुः=विजय शील ।

क्रतुः=यज्ञ ।

साधुः=सन, महात्मा ।

शंकुः=ढोने वाला पदार्थ ।

स्नायुः=पुट्टा, रग ।

विष्णुः=विष्णुदेव ।

तरुः=दरवृक्ष ।

मरुः=रेत वाला देश, मारवाड़ ।

शत्रुः=दुश्मन ।

अगरुः=चन्दन ।

मृत्युः=मौत ।

वाहूः=दाय पुत्र ।

वद्द्दुः=वद्द्दु, पेड़ा ।

शतनुः=मीनपितामह का पिता ।

ये सब शब्द पूर्वोक्त भानु शब्द के समान ही चलते हैं ।

वाच्य

१. गुरुः पाठशालां गच्छति=प्रथम पद पाठशाला को जाता है ।

२. भानोः अंशुं पश्य=सूर्य का किरण देव ।

३. सिंधोः जलं अ नयति=दर्या से जल लाता है ।

४. मरु देशे जलं नास्ति=रेत के देश में जल नहीं है ।

५. मृत्युवे ि दास्यसि=मौत के लिये क्या देओगे ।

६. शत्रुं पश्यसि किम्=दुश्मन को देखते हो क्या ?

७. शतनुः राजा आसीत्=शतनु राजा था ।

८. शतनुना क्रतुः समाप्तः=शतनु ने यज्ञ समाप्त किया ।

९. शमुना राजसी हतः=शिवजी ने राजस मारा ।

१०. साधुना नवदेशः कृतः=साधु ने नवदेश किया ।

११. तरोः फलं पतितं=दरवृक्ष से फल गिरा ।

अब थोड़े से ऐसे वाक्य देते हैं कि जो पाठक स्वयं जान सकते हैं:—

स तं मार्गं पृच्छति । मृगः मृगेण सह गच्छति मनुष्यः
 मनुष्येण सह न गच्छति । सदा मूर्खं, मूर्खेण सह वदति । वानरः
 वने धावति । विष्णुः सर्वत्र अस्ति । ईश्वर सदा सर्वं पश्यति ।
 नृपः रक्षक वदति । स नगरात् धनं आनयति । वसिष्ठस्य चरणं
 पश्य । बालकाय मोदकं देहि । ब्राह्मणाय धनं देहि । तस्मै जलं देहि
 शम्भुः राक्षसं हन्ति । उद्याने तरुः अस्ति । शत्रुः प्रामे नास्ति । कारु
 गृहं करोति । भानु प्रकाशं ददाति । स कदापि न तुष्यति । पुष्प
 आनयति । पुष्प जले पतितम्, तस्य पुत्रं कूपे पतितः । तस्य
 बाहुः शोभनः अस्ति । स कन्दुकेन क्रीडति । तत्र गत्वा तं पश्य ।
 बालकः आधुना न आगतः । त्वं गच्छ भोजनं च कुरु ।

भाषा के निम्न वाक्यों के संस्कृत वाक्य कीजिए :—

१ वह आख से देखता है । २ कैसे वह बालक गया । ३ बालक
 धूप में गया । उसकी यहा लेआ । ४ अब राजा कदा । ५ नौकर ने
 हाथ में सोटी ली । ६ गांव में शत्रु है । ७ वह फूल लाता है । ८
 वहां जाकर देख । ९ वह दुर्मति के साथ मित्रता करता है । १०
 जहां राम जायगा वहां कृष्ण जायगा । ११ जहां मैं जाऊंगा वहां
 तू जा ।

पाठ १४

श्रमः=कष्ट

अतः=इसलिये ।

कुत=किसलिये ।

यतः=जिसलिये ।

साडयति=वह पीटता है । साडयति=तू पीटता है ।

साडयामि=पीटता हूँ । उत्रितः=उत्र से पीडित ।

१ ददाति देता है । २ तुष्यति-खुरा होता है । ३ शोभनः-उत्तम ।

दुर्बलः=बलहीन ।	अतीव=बहुत ।
परिश्रमः=मेहनत ।	एतत्=यह ।
यद्=जो कि ।	तत्=वह ।
ताडयिष्यति=पीटेगा ।	ताडयिष्यसि=पीटेगा ।
ताडयिष्यामि=पीटूँगा ।	केवलं=केवल, सिर्फ ।
अल्पं=थोड़ा ।	नीरोगः=स्वस्थ, तन्दुरुस्त ।

वाक्य

१. यज्ञदत्तः किमर्थं न पठति=यज्ञदत्त क्यों नहीं पढ़ता ।
२. स उवरेड् पीडितः अस्ति, अतः न पठति=वह उवर से पीड़ित है, इस कारण नहीं पढ़ता ।
३. किम् एतत् सत्यमस्ति यत् स उवरेण पीडितः अस्ति=क्या यह सत्य है कि वह उवर से पीड़ित है ।
४. अथ किं, स न केवलं उवरितः अस्ति, परन्तु स अतीव दुर्बलः अपि अस्ति=और क्या ? वह न केवल उवरित है, परन्तु वह बहुत दुर्बल भी है ।
५. किं स अन्नं भक्षयति न वा । कथय=क्या वह अन्न खाता है वा नहीं । कह ।
६. न भक्षयति परन्तु अल्पं अल्पं दुग्धं पिबति=नहीं खाता परन्तु थोड़ा थोड़ा दूध पीता है ।
७. कदा स पुनः नीरोगः भविष्यति=कब वह फिर स्वस्थ होगा ?
८. एतद् अहं न जानामि=वह मैं नहीं जानता ।
९. स किं किं वदति=वह क्या, २ बोलता है ?
१०. स किमपि न वदति=वह कुछ भी नहीं बोलता ?
११. यदा स पुनः नीरोगः भविष्यति=जब वह फिर नीरोग होगा ।
१२. तदा स अन्नं भोगमिष्यति एव=तब वह यहाँ आवेगा ही

१३. पाठं च पठिष्यति=और पाठ पढ़ेगा ।

वाक्य

स्वपिति=वह सोता है ।

स्वपिमि=सोता हूँ ।

दशघण्टासमये=दस बजे ।

पथ.=यह ।

इतिहासः=इतिहास ।

खादसि=तू खाता है ।

भवति=वह होता है ।

भवामि=होता हूँ ।

भृत्यः=सेवक ।

स्वपिपि=तू सोता है ।

दश-वाद्दने=दस बजे ।

तदानीं=उस समय ।

शोभने=उत्तम ।

खादति=वह खाता है ।

खादामि=खाता हूँ ।

भवसि=तू होता है ।

परिद्रः=निधन ।

मेरुः=मेरुपर्वत ।

वाक्य

१. त्वं रात्री कदा स्वपिपि=तू रात्री कब सोता है ।

२. अहं दशघण्टासमये स्वपिमि=मैं दस बजे सोता हूँ ।

३. परन्तु विश्वनाथः तदानीं न स्वपिति=परन्तु विश्वनाथ उस समय नहीं सोता ।

४. यदि स न स्वपिति तर्हि तदा स हिं करोति=अगर वह नहीं सोता तो वह तब क्या करता है ।

५. स तदानीं पुस्तकं पठति अतीव कोलाहलं च करोति=तब वह पुस्तक पढ़ता है और बहुत शोर मचाता है ।

६. स किमर्थं कोलाहलं करोति=वह क्यों कोलाहल करता है ।

७. स उच्चैः पठति अतः कोलाहलः भवति=वह ऊँचे से पढ़ता है इसलिये शोर होता है ।

८. कोलाहलं न कुरु इति स्व तं वद=गड़ बड़ न कर, ऐसा तू ऊँको कह ।

६. स मध्याह्ने किं किं मद्यति किं किं पिबति च=वह मध्याह्न में क्या २ खाता है और क्या २ पीता है ।

१०. स प्रातः काले दुग्धं पिबति मध्याह्ने च स्वादु भोजनं खादति= वह सवेरे दूध पीता है और दुपहर को उत्तम भोजन खाता है ।

११. स इदानीं तं किमर्थं ताडयति=वह अब उस को क्यों पीटता है ।

१२. यतः स न लिखति=किस कारण वह नहीं लिखता ।

१३. एष शोभनः समयः भ्रमणाय गच्छामि=वह उत्तम समय है घूमने के लिये जाता हूँ ।

१४. स दरिद्रः अस्ति अतः द्रव्यं न ददाति=वह निर्धन है इसलिये पैसा नहीं देता है ।

उकारान्त शब्दों के रूप बनाने का प्रकार पिछले पाठ में आ चुका है । अब ऋकारान्त शब्दों के रूप इस पाठ में बनायेंगे:—

ऋकारान्त पुलिग 'घातृ' शब्द

१ घाता	महा
२ घातारं	महा को
३ घात्रा	महा ने
४ घात्रे	महा के लिये
५ घातुः	महा से
६ घातुः	महा का
७ घातदि	महा से
सं० (हे) घातः	हे महा

ऋकारान्त पुलिग शब्द

घातृ=महा, विश्वकर्ता, उत्पन्न कर्ता ।

घातुं=बनाने वाक्या । नेतृ=ले जाने वाला ।

शास्त्र=शासन करने वाला ।	उद्गात्र=गाने वाला ।
गात्र=गाने वाला ।	नष्ट्र=पोता ।
गंत्र=जाने वाला ।	दात्र=देने वाला ।
वक्त्र=बोलने वाला ।	द्रष्ट्र=देखने वाला ।
श्रोत्र=सुनने वाला ।	भोक्त्र=खाने वाला ।
स्रष्ट्र=उत्पन्न करने वाला ।	पात्र=रक्षा करने वाला ।
द्वेष्ट्र=द्वेष करने वाला ।	ध्यात्र=ध्यान करने वाला ।

वाक्य

१. धाता सकलं विश्वं रचयति=ब्रह्मा सब विश्व को रचता है ।
२. दातुः इच्छा कीदृशी अस्ति=दाता की इच्छा कैसी है ।
३. भोक्त्रे मोदकं देहि=खाने वाले को लड्डू दे ।
४. नप्रा भोजनं न कृतं=पोते ने भोजन नहीं किया ।
५. मम द्वेषारं पश्य=मेरे द्वेष करने वाले को देख ।
६. ध्याता ईश्वरं ध्यायति=ध्यान करने वाला ईश्वर का ध्यान करता है ।
७. मूपकः धान्यं खादति=चूहा धान खाता है ।
८. वक्ता सत्यं वदति=बोलने वाला सच बोलता है ।
९. भुवनस्य कर्तारं ईश्वरं कुत्र पश्यसि = जगत् के कर्ता ईश्वर को कहाँ देखता है ।
- १० अहं भुवनस्य कर्तारं ईश्वरं वन्दे = मैं जगत्कर्ता ईश्वर को नमस्कार करता हूँ ।

(१) एवं तं प्रामं गच्छसि । (१२) एवं तं प्राम कदा गमिष्यसि
 (३) एवं तं प्रामं किमर्थं न गच्छसि । (४) एवं तं प्रामं गत्वा किं
 ज्ञानेष्यसि । (५) एवं तं बहुशीभनं प्रामं गत्वा शीघ्रं अत्र आगच्छ ।
 (६) एवं तं शीभनं त्र्यपुर नामकं नगरं गत्वा सव मित्रं दृष्ट्वा शीघ्रं

एव अत्र आगच्छ । (७) हे धातः ! त्वं भुवनस्य कर्ता असि त्वया
एव सर्वं एतत् निर्मितम् । (८) ब्राह्मणाय घन, दुग्धं च देहि ।
(९) ब्राह्मण अत्र एव अस्ति । १० तं अत्र जानय ।

पाठ १५

साधु = साधु, फकीर ।

धावति = वह दौड़ता है ।

धावामि = दौड़ता हूँ ।

कदमे = कीचड़ में ।

दुकूल = रेशमी वस्त्र ।

यद्य = यद्वा ।

हसति = तू हँसता है ।

वृद्धः = बूढ़ा ।

बाल = लड़का ।

वेतन = तनखाह ।

धावसि = तू दौड़ता है ।

पतितः = गिर गया ।

स्खलितः = फिसल गया ।

अजन = सुरमा, अंजन ।

हसति = वह हँसता है ।

हसामि = हँसता हूँ ।

मुवा = जवान ।

पट्टाः = वस्त्र ।

वाक्य

१. स किमर्थं हसति = वह क्यों हँसता है ।

२. यतः विष्णुदत्तः तत्र कदमे पतितः = क्योंकि विष्णुदत्त वहाँ
कीचड़ में गिर गया है ।

३. कथं स कदमे पतितः = कैसे वह कीचड़ में गिर पड़ा ।

४. स पूर्वं स्खलितः पश्चात् पतितः = वह पहिले फिसला और पीछे
गिर गया ।

५. त्वं तथा धावसि किं पथा अहं धावामि = क्यों तू वैसा दौड़ता
है जैसे मैं दौड़ता हूँ ।

- ६ स्व अपि तथा न लिखसि यथा विष्णुशर्मा लिखति=तू भी वैसा नहीं लिखता जैसा विष्णुशर्मा लिखता है ।
७. यदा स्वं पठसि तदा अह क्रीडामि=जब तू पढ़ता है तब मैं खेलता हूँ ।
- ८ स कन्दुकेन वर क्रीडति=वह गेंदे से अच्छा खेलता है ।
९. यदा स कन्दुकेन क्रीडति तदा स धावति=जब वह गेंद से खेलता है तब वह खेलता है ।
- १० यदा स धावति तदा अह हसामि=जब वह दौड़ता है तब मैं हँसता हूँ ।
११. मद्य आस्र देहि=मुझे आम दे ।
१२. किम् अद्य त्वम् आस्र भक्षयिष्यसि=क्या तू आज आम खायगा ?
- १३ किम् अद्य अस्ति=आज क्या है ?
१४. अद्य उष्ण दिन अस्ति अत आस्र न भक्षय=आज गर्म दिन है इसलिये आम न खा ।
१५. तर्हि शीत दुग्धम् देहि=तो ठण्डा दूध दे ।
१६. स्वीकुरु, अत्र शीत मिष्ट च दुग्ध अस्ति=ले, यहाँ ठण्डा और मीठा दूध है ।

शब्द

खनति=(वह) खोदता है ।	खनति=(तू) खोदता है ।
खनामि=खोदता हूँ ।	रक्षसि=वह रक्षा करता है ।
रक्षसि=तू रक्षा करता है ।	रक्षामि=मैं रक्षा करता हूँ ।
भूमि=भूमि की ।	व्यर्थ=व्यर्थ ।
गां=गाय की ।	गायनं=गाना ।

स्वकीय=अपनी ।

परकीय=दूसरे की ।

कूप=कुएँ की ।

नर्तन=नाचना ।

घाव्य

१. तस्य पिता अतीव वृद्धः अस्ति=उसका पिता बहुत ही वृद्ध है।

२. परन्तु तस्य भ्राता युवा अस्ति=परन्तु उसका भाई जवान है ।

३. स भूमिं किमर्थं अथ खनति=वह भूमि को आज किस लिये खोदता है ।

४. स अथ व्यर्थं खनति=वह आज व्यर्थ खोदता है ।

५. स स्वकीयां भूमिं रक्षति न वा=वह अपनी भूमि की रक्षा करता है वा नहीं ।

६. स स्वकीयां गा आनयति=वह अपनी गाय को लाता है ।

७. स गृहं रक्षति किं=वह घर की रक्षा करता है क्या ?

८. अथ किं, स न केवलं गृहं रक्षति=और क्या ? वह न केवल घर की रक्षा करता है ?

९. परन्तु उद्यान अपि घर रक्षति=परन्तु बाग की भी अच्छी तरह रक्षा करता है ।

१०. स न तथा रक्षति यथा देवप्रियः=वह नहीं वैसी रक्षा करता जैसी देवप्रिय ।

११. देवप्रियः अतीव बालः अस्ति=देवप्रियः अत्यन्त बालक (छोटा) है ।

१२. परन्तु भद्रसेनः युवा अस्ति=परन्तु भद्रसेन जवान है ।

१३. अतः स प्रातः काले मुष्टु घावति=इस कारण वह प्रातः अन्ध्रा बीकता है ।

यामि=(तू) जाता है । याति=(वह) जाता है ।
 उदकं=जल । : -- गुणः=गुण ।

संस्कृत वाक्य

यत्र धूमः तत्र अग्निः अस्ति । अहं तं प्रामं गच्छामि, यत्र
 वेदस्य ज्ञाता वसति । तस्मै गुगुवे नमः । नृपतिः शास्त्रस्य ज्ञाने द्रव्यं
 ददाति । यस्य बुद्धिः बलं अपि तस्य पव । शत्रुं भूयतिः जयति
 अहं मायं नगराद् बहिः गच्छामि । तस्य हस्तात् माला पतिता ।
 स एव पर्यतः यत्र वसिष्ठः मुनिः वसति । 'व्याघ्रात् भयं भवति ।
 गुरोः ज्ञानं भवति । मृगः वनात् वनं गच्छति । ।

भाषा के निम्न वाक्यों को संस्कृत कीजिये:—

(१) ऊचे से न बोल । (२) तू पम गांव को जा । (३) उसका
 धन दे । (४) मुझे धन दे । (५) मैं ऊपर ठहरता हूँ । (६) मैं गर्म
 जल कभी नहीं पीता । (७) उठ तेरे गुरु के लिये फल दे । (८)
 अब तू खेल । (९) आज मैं नहीं खेलूँगा । (१०) तू सब
 बोलता है ।

पाठ १६

शब्द

यस्य=जिसका ।

अस्य=इसका ।

दूरं=दूर ।

सर्वस्य=सब का ।

देवस्य=ईश्वर का ।

पादत्रायां=जूता, बूट ।

वैद्यः=वैद, डाक्टर ।

कस्य=किसका ।

क=कहाँ ।

नियमः=नियम ।

मित्रस्य=मित्र का ।

नितान्तं=बिलकुल ।

मिष्टं=मिठाई ।

१. यस्य पुस्तकं अस्ति तस्मै देहि=जिसकी पुस्तक है उसी को दे ।
२. एतत् कस्य गृहं अस्ति=यह किसका घर है ।
३. एतत् मम मित्रस्य गृहं अस्ति=यह मेरे मित्र का घर है ।
४. त्वं कथं जानासि=तू कैसे जानता है ।
५. यद् अहं वदामि तत् सत्यं अस्ति=जो मैं बोलता हूँ वह सच है ।
६. तस्य माता किं वदति=उसकी माता क्या बोलती है ।
७. मम पादत्राणं आनय=मेरा जूता ले आ ।
८. कुत्र अस्ति तव पादत्राणं=वहाँ है तेरा जूता ?
९. तत्र अस्ति तत् परय=वहाँ है वह देखा ।
१०. स दूरं गच्छति हि=वह दूर जाता है क्या ।
११. स मिष्टं भक्षयति=वह मिठाई खाता है ।
१२. अथ लेखनी कुत्र अस्ति=उसकी कलम कहाँ है ?
१३. त्वं इदानीं किं लिखसि=तू क्या लिखता है ?
१४. स रक्तं पुत्रं परयति=वह लाल फूल देता है ।

शब्द

करपट्टिकां=रोटी, फुलका ।	तत्रं=छाछ, उरसी दही की
पुंड्रलिनी=जलेबियां ।	दधि=दही ।
कथिका=कड़ी ।	व्यंजनं=पटनी ।
गृह्णामि=लेता हूँ ।	गृह्णामि=तू लेता है ।
गृह्णाति=वह लेता है ।	वैशं=नसीब ।
नवनोद=मकलन ।	पुत्रं=पुत्र ।
दुग्ध=दूध ।	सुदं=दाल ।
गृह्णाण=ले ।	वद=लिख ।
लिख=लिख ।	दुर्दणं=दुर्भाग आच्छ ।

१. मह्यं इदानीं एव करपट्टिकां देहि=मुझे अभी रोटी दे ।
२. त्वं प्रातः तर्कं पिबसि किं=तू सवेरे लहसी पीता है क्या ।
३. स प्रातः कुंडलिनीः भक्षयति=वह प्रातः जलेबियां खाता है ।
४. मह्यं कथिकां ददासि किं=मुझे कढ़ी देगा क्या ?
५. स व्यंजनं भक्षणार्थं इच्छति=वह चटनी भक्षण करना चाहता है ।

६. एतत् नवनीतं गृहाण=यह मन्खन ले ।

७. घृतं तत्र किमर्थं नयसि वद=घी वहां किस लिये ले जाता है, कह ।

८. अहं भक्षणार्थं घृतं दधि च नयामि=मैं खाने के लिये घी और दही ले जाता हूँ ।

९. यदि त्वं सूपं इच्छसि तर्हि गृहाण=अगर तू दाल चाहता है तो ले ।

१०. स बहु व्यंजनं भक्षयति तत् न वरं=वह बहुत चटनी खाता है, यह अच्छा नहीं ।

११. वद त्वं कुत्र गच्छसि=बोल तू कहां जाता है ।

पूर्व पाठों में ऋकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप बनाने का प्रकार दिया है । कई ऋकारान्त शब्दों के रूप भिन्न २ प्रकार से भी होते हैं । विशेष भिन्नता नहीं होती है केवल एक रूप में भेद होता है :—

ऋकारान्तः पुल्लिङ्गः 'पितृ' शब्दः ।

१ प्रथमा	पिता	पिता
२ द्वितीया	पितर	पिता को
३ तृतीया	पित्रा	पिता ने

४ चतुर्थी	पित्रे	पिता के लिये
५ पंचमी	पितुः	पिता से
६ षष्ठी	,	पिता का
७ सप्तमी	पितरि	पिता में
सम्बोधन	(हे) पितः	हे पिता

पिता शब्द में और धाता शब्द में इतना ही फरक है कि धाता शब्द का द्वितीया का एकवचन 'धातार' हुआ है और पिता शब्द का 'पितर' हुआ है। शब्द 'पितार' नहीं हुआ। यही विशेषता निम्न शब्दों में हुआ करती है। पाठकों को उचित है कि वे इस बात को स्मरण रखें।

पितृ शब्द के समान चलने वाले ऋकारान्त पुलिग शब्द

भ्रातृ=भाई	जामातृ=दामाद।
नृ=नर, पुरुष।	देवृ=देवर।
सस्तृ=स्तुति करने हारा।	सव्येष्टृ=गाड़ीवान।

वाक्य

- १ पिता पुत्रं पश्यति=पिता लड़के को देखता है।
- २ पुत्र पितरं पश्यति=लड़का पिता को देखता है।
- ३ पित्रा पुत्राय वस्त्रं दत्तं=पिता ने पुत्र के लिये वस्त्र दिया।
- ४ भ्राता भ्रातरं द्वेषति=भाई भाई से द्वेष करता है।
- ५ भ्रात्रा धनं दत्तं=भाई ने धन दिया।
- ६ जामात्रे वस्त्रं देहि=दामाद के लिये वस्त्र दे।
- ७ पित्रे नमः कुरु=पिता को नमस्कार कर।

इस प्रकार पाठक कई वाक्य बना सकते हैं। उक्त वाक्यों के निषेध अर्थ के वाक्य—

१ पिता पुत्रं न पश्यति । २ पुत्रः पितरं न पश्यति । ३ पित्रा पुत्राय वस्त्रं न दत्तम् । भ्राना भ्रातर न द्वेष्टि । ४ भ्रात्रा धनं न दत्तम् । ६ जामात्रे वस्त्रं न देहि ।

निम्न वाक्यों का संस्कृत कीजिए:—

वह गांव को जाता है । २ जहां तू जाता है, वहां मैं जाता हूं । ३ क्या तू सदा बाग में जात है । ४ तू कहां जाता है । ५ वह दिन मैं नगर को जाता है और रात में घर को जाता है । ६ हरिश्चन्द्र फल खाता है ।

निम्न वाक्यों के भाषा के वाक्य बनाइए:—

१ अहं इदानीं फलं नैव भक्षयामि । २ हरिश्चन्द्रः पुस्तकं तत्र नयति । ३ किमर्थं त्वं अपूपं तत्र नयामि । ४ अहं गृहं गत्वा मम धौतं वस्त्रं आनयिष्यामि । ५ गृहि, यज्ञ प्रयः कुत्र अस्ति ।

पाठ १७

शक्तिः=सामर्थ्य ।

शक्यः=सुमकिन ।

शक्नोमि=सकता हूँ ।

शक्नोषि=(तू) सकता है ।

शक्नोति=(वह) सकता है ।

वक्तुं=बोलने के लिये ।

स्वभाषा=अपनी भाषा ।

नारंगः=संगतरह का वृक्ष ।

चन्द्रः=चाँद ।

संस्कृतं=संस्कृत भाषा ।

अंगलभाषा=अंग्रेजी भाषा ।

देश भाषा=देशी भाषा ।

नवीनं=नवीन. नई ।

पुगण=पुराना ।

मातृभाषा=मातृभाषा (मातृ) जपान ।

आसनं=आसन ।

नारंगं=संगतरह (फल)

वाक्य

१. त्वं संस्कृतं वक्तुं शक्नोषि किं ?=क्या तू संस्कृत भाषा बोल सकता है ?
२. नहि नहि, अहं आरंभ भाषा वक्तुं शक्नोमि=नहीं नहीं, मैं आरंभ ही बोल सकता हूँ ।
३. किं एतत् वरं अस्ति यत् त्वं स्वभाषां वक्तुं न शक्नोषि ?=क्या यह अच्छा है कि तू अपनी भाषा नहीं बोल सकता ?
४. कः एतं वदति ?=कौन ऐसा कहता है ?
५. तर्हि संस्कृतं किं न पठसि ?=तो संस्कृत क्यों नहीं पढ़ाते ?
६. अहं पठामि एव=मैं पढ़ता ही हूँ ।
७. त्वं तत्र गन्तुं शक्नोषि किं ?=क्या तू वहाँ जा सकता है ?
८. स क्व क्वितुं शक्नोति=वह खोज सकता है ।
९. अहं लेखितुं न शक्नोमि=मैं लिख नहीं सकता ।
१०. स वरं लेखितुं शक्नोते=वह अच्छा लिख सकता है ।
११. स नवीन पुस्तकं लिखति किम् ?=क्या वह नवीन पुस्तक लिखता है ।
१२. तस्य गृहं अतीव सुगणं अस्ति=उसका घर बहुत ही सुगना है ।
१३. ओ मित्र ! एतत् आसनं गृहाण=हे मित्र ! यह आसन ले ।

शब्द

अनृतं=असत्य ।

प्रियं=प्रिय ।

अलंकारः=भूषण, जेवर ।

अभ्यापनः=उद्दाने वाक्ता ।

यत्ता=बोलने द्वारा ।

स्त्रियः=स्त्रिय ।

अप्रियं=अप्रिय ।

भव=हो ।

आ व र्यः=गुरु, शिक्षक ।

तूष्णीं=चुप चाप ।

प्रियावाद्=प्रिय बोलने वाला ।

घृथा=व्यर्थ ।

असत्यवादी=असत्य बोलने वाला ।

आमः=कच्चा ।

१. किमर्थं अनृतं वदसि=क्यों असत्य बोलता है ।

२. अह कदापि असत्य नैव वदामि=मैं कभी असत्य बोलता ही नहीं ।

३. स वक्ता सदा एव अप्रिय वदति=वह बोलने वाला सदा अप्रिय बोलता है ।

४. किं त्वम् अलंकारं गृह्णासि=क्या तू जेवर लेता है ।

५. आचार्यः सत्वरं आगमिष्यति=गुरु शीघ्र आवेगा ।

६. स अध्यापकः शीघ्रं न गमिष्यति=वह अध्यापक शीघ्र नहीं जावेगा ।

७. सत्यं प्रियं च वद=सत्य और प्रिय बोल ।

८. स तत्र तूष्णीं तिष्ठति=वह वहाँ चुप चाप रहता है ।

९. बालकः तूष्णीं नैव तिष्ठति=बालक चुप नहीं रहता है ।

१०. स आचार्य सदा पुस्तकं पठति=वह शिक्षक सदा पुस्तक पढ़ता है ।

११. स एव वृथा वदति=वह ऐसा व्यर्थ बोलता है ।

१२. स प्रियवादी आचार्यः कुत्र गतः=वह प्रिय बोलने वाला आचार्य कहाँ गया ?

१३. स अन्यं नगरं गच्छति=वह दूसरे शहर को जाता है ।

इस समय तक पाठकों ने अ, इ, उ, ए ये स्वर जिनके अन्त में है, ऐसे पुल्लिङ्ग शब्द चलाने का प्रकार जान लिया है। अब कुछ पुल्लिङ्ग सर्वनामों के रूप देते हैं। जिनको जानने से पाठक संस्कृत में अनेक प्रकार के वाक्य बना सकते हैं।

अकारान्तः पुल्लिङ्ग 'सर्व' शब्दः

१ प्रथमा	सर्वः	सब
२ द्वितीया	सर्वं	सब को
३ तृतीया	सर्वेण	सब ने
४ चतुर्थी	सर्वस्मै	सब के लिये
५ पचमी	सर्वस्मात्	सब से
६ षष्ठी	सर्वस्य	सब का
७ सप्तमी	सर्वस्मिन्	सब में

इन रूपों को जानने से पाठक बहुत कुछ वाक्य बना सकते

हैं। देखिये :—

१. सर्वः जनः अन्नं भक्षयति=सब लोग अन्न को खाते हैं।
२. सर्वं धनं तस्मै देहि=सारा धन उसको दे।
३. सर्वेण द्रष्टव्येण स किं करोति=सारे धन से वह क्या करता है।
४. सर्वस्मै याचकवर्गोय मोदकान् देहि=सब मागने वालों को लहइ दे।
५. सर्वस्मात् ग्रामात् जनः आगतः=सब गावों से लोग आये हैं।
६. सर्वस्य पुस्तकस्य किं मूल्यं अस्ति=सारी पुस्तक का क्या मूल्य है।
७. सर्वस्मिन् ग्रामे धर्मः प्रतिपादितः=सारे ग्राम में धर्म का प्रतिपादन किया है।

इसी प्रकार निम्न सर्वनाम चलते हैं :—

अन्य = दूसरा।

विश्व = सब।

पक्क = पक्क।

क. = होत।

पाठक इनके रूप बना सकते हैं और वाक्यों में इनको प्रयुक्त कर सकते हैं। अब नीचे कुछ वाक्य देते हैं, जो पाठक पढ़ते ही समझ जायेंगे।

१ एकस्मिन् दिवसे अहं तस्य गृहं गतः। २ अन्यस्मिन् दिने जगदीशरायः अत्र आगतः। ३. अन्यस्य घनं न स्वीकुरु। ४ देवभक्तः सर्वं द्रव्यं तस्मै न ददाति किम्। ५ यदि एकस्मात् प्रामात् पुरुषः न आगतः। ६ तर्हि अन्यस्मात् प्रामात् स कथं आगमिष्यति? ७ एकस्मिन् मार्गे यथा दुःखम् अस्ति न तथा अन्यस्मिन् मार्गे अस्ति। ८ अतः अन्येन मार्गेण एव तं प्रमं गच्छ। ९ एकेन गुरुणा एव सर्वं पुस्तकं पाठितम्। १० अन्यस्मिन् पुस्तके सा कथा नास्ति।

१ द्वारं विधेहि। २ पात्रं इदानीं कुत्र नयसि। ३ स मोदकं आम्रं च मध्याह्ने भक्षयति। ४ वृत्ते मूपकं परय। ५ नृरतिः चौरं ताडयति। ६ यदा चौरः तत्र गमिष्यति तदा एवं अपि तत्र एव गच्छ। ७ यथा एवं दुग्धं पिबसि तथा एव स पिबति। ८ स्वर्गस्य द्वारं तेन चद्रुपाटितम्। ९ हरद्वार नगरे यथा 'स्वादु दुग्धं' भवति न तथा अमृतसरे। १० यथा विहगः आकाशे गच्छति, तथा मनुष्यः अत्र गच्छति। ११ अथ कुमारः पुत्र वर्तते।

पाठ १८

गार्जनक्षेपः=सायून।

आलस्यं=आलस।

इन्धने=अकड़ो, इंधन।

पर्यंकः=पलंग।

आनन्दः=आनन्द।

शौचं=शौच।

१ दुःखं—नरुत्तोफ। २ पाठितं—पढ़ाया। ३ सा—वह।

वत्तिष्ठामि=उठता हूँ ।

वत्तिष्ठामि=(तू) उठता है ।

पंकः=कीचड़ ।

सूत्रं=घागा ।

हवनार्थं=हवन के लिये ।

इह=यहाँ ।

इति=ऐसा ।

वत्तिष्ठति=(वह) उठता है ।

हवनकुण्डं=हवनकुण्ड ।

यज्ञसामग्री=हवन सामग्री ।

१. ओ शिष्य ! वत्तिष्ठ भालस्व्यं न कुर्व=हे शिष्य ! उठ आज्ञप्त न कर ।

२. अहं वत्तिष्ठामि, शौचं स्नानं च कृत्वा हवनार्थं आगच्छामि= मैं उठता हूँ, शौच और स्नान करके हवन के लिये आता हूँ ।

३. शीघ्रं वत्तिष्ठ च तत्र सत्वरं आगच्छ=जल्दी उठ और यहाँ शीघ्र आ ।

४. तत्र हवनार्थं इन्धनं नास्ति=यहाँ हवन के लिये लकड़ी नहीं है ।

५. यज्ञकुण्डं कुत्र अस्ति=हवन कुण्ड कहीं है ।

६. अहं न जानामि=मैं नहीं जानता ।

७. तत्र एव पश्य शीघ्रं च अत्र आनय=यहाँ ही देख और शीघ्र यहाँ ले आ ।

८. ओ मित्र ! हवनकुण्डं अहं आनयामि एवं इन्धनं आनय=हे मित्र हवनकुण्ड मैं लाना हूँ तू लकड़ी ले आ ।

९. यज्ञसामग्री अत्र अस्ति=हवन सामग्री यहाँ है ।

१०. स्नानं कृत्वा एव हवनं करोमि=स्नान करके ही हवन करता हूँ ।

११. स्नानं कृत्वा एव हवनं कुरु=स्नान और संभ्या करके हवन कर ।

१२. इदानीं देवदत्तः मग्धां करोति=अब देवदत्तः संभ्या करता है ।

शब्द

आरभे=मैं आरम्भ करता हूँ ।	आरभसे=तू आरम्भ करता है ।
आरभते=वह आरम्भ करता है ।	उपास्य=उपासना करके ।
एहि=आओ ।	कुशलः=निरोगी, प्रवीण ।
मां=मुझे ।	कंवलं=कंवल ।
आज्ञापयति=आज्ञा करता है ।	आज्ञापयसि=आज्ञा करता है ।
आज्ञापयामि=आज्ञा करता हूँ ।	त्वां=मुझे ।
तं=उसको ।	शुभं=अच्छा ।
इति=ऐसा, यह ।	ऊर्णावस्त्र=उत्ती कपड़ा ।

वाक्य

१. रामचन्द्रः इदानीं कुशलः अस्ति=रामचन्द्र अब कुशल है ।
२. स प्रातः एव संध्यां उपास्य बहिः गच्छति=वह सवेरे ही संध्या करके बाहर जाता है ।
३. स मध्याह्ने आगच्छति तदा भोजनं च करोति=वह दोपहर (के समय) आता है और तब भोजन करता है ।
४. स मां आज्ञापयति=वह मुझे आज्ञा करता है ।
५. अहं त्वां न आज्ञापयामि=मैं तुम्हें नहीं आज्ञा करता ।
६. स तं किमर्थं आज्ञापयति=वह उसको किस लिये आज्ञा करता है ?
७. स कदापि तं न आज्ञापयति=वह उसको कभी नहीं आज्ञा करता ।
८. एहि पश्य एतत्=आ इसको देख ।
९. स शुभं कर्म इदानीं आरभते=वह श्रेष्ठ कार्य अब आरम्भ करता है ।

१०. अहं इदानीं संस्कृतं पठितुं आरभे=मैं अब संस्कृत पढ़ना प्रारंभ करता हूँ ।
११. एवं अपि किं न आरभसे=तू भी क्यों नहीं आरम्भ करता ।
१२. समयः न अस्ति अतः न आरभे=समय नहीं है इसलिये नहीं आरम्भ करता ।
१३. त्व इदानीं कुशलः अस्ति किं ?=तू अब कुशलपूर्वक है क्या ?
१४. स तत्र गत्वा भूमिं स्ननति=वह वहाँ जाकर जमीन रोदता है ।
१५. तत्र न गच्छ इति स त्वा आज्ञापयति=वहाँ तू न जा येखी वह तुझे आज्ञा करता है ।

पुल्लिङ्ग में "किं" शब्द के रूप

१. प्रथमा	क	कौन
२. द्वितीया	कं	किसको
३. तृतीया	केन	किसने
४. चतुर्थी	कस्मै	किसके लिये
५. पंचमी	कस्मात्	किस से
६. षष्ठी	कस्य	किसका
७. सप्तमी	कस्मिन्	किस में

गत = गया । आलेख्यं = चित्र, तसधीर ।

मंदिरं = घर, तसधीर । आलिर्यं = लिख कर ।

ददाति = (वह) देता है । ददासि = (तू) देता है ।

भवति = (वह) होता है । भवसि = (तू) होता है ।

भवाति = होता है । मत्वा = मान कर ।

गृहीत्वा = लेकर । भूत्वा = होकर ।

१. क' तत्र अस्ति = कौन वहाँ है ?

२. त्व कं पर्यसि = तू किसको देखता है ?

३. केन मार्गेण स गतः=किस मार्ग से वह गया ?
४. कस्मै धनं ददासि=किसके लिये धन देते हो ?
५. कस्मात् प्रामात् स आगच्छति=किस गोंव से वह आता है ।
६. कस्य इतत् पुस्तक अस्ति=किस की यह पुस्तक है ?
७. कस्मिन् पुस्तके तत् आलेख्यम् अस्ति=किस पुस्तक में वह तस वीर है ?
८. कः तत्र न गच्छति=कौन वहाँ नहीं जाता ?
९. कस्मै कारणाय त्वं धनं न ददासि=किस कारण से तू धन नहीं देता ?
१०. कस्मिन् स्थाने तस्य पाठशाला अस्ति=किस स्थान में उसकी पाठशाला है ?

किं कृष्णः मंदिरं न गच्छति ? अथ कृष्णः मंदिरं नैव गच्छति । देवदत्तः यदि रामचन्द्राय पुस्तकं न ददाति तर्हि कस्मै ददाति । एवं कुत्र गत्वा इदानीं अत्र आगतः । मित्रं, परमं तस्य गृहं अत्र एव अस्ति । मम गृहं अत्र नास्ति । तत्र वस्त्रं मलिनम् । कं प्रणम्य स आगतः । स गुरुं प्रणम्य अत्र आगतः ।

निम्न वाक्यों के संस्कृत वाक्य बनाइए ।

हे बिष्णुदत्त तू कब आवेगा । मैं शाम के समय सध्या करके वहाँ जाऊँगा । तू वहाँ क्यों नहीं जाता, कह । यदि तू जायगा तो मैं अवश्य जाऊँगा । वह तुम को पीटता है । रामचन्द्र यज्ञदत्त के लिये पुस्तक नहीं देता । देख, मेरा घर कैसा उत्तम है । मैं ठंडे पानी से स्नान करके आया । तू अब पुस्तक पढ़ । मैं भोजन करके पत्र पढ़ूँगा ।

पाठ १६

मसूराः=मसूर ।	यवाः=जौ ।
तिलाः=तिल ।	गोधूमाः=गेंहूँ, कनक ।
मनुष्यः=मनुष्य ।	जनः=मनुष्य ।
पुरुषः=मनुष्य ।	काषः=शीशा ।
कलमः=कलम, लेखनी ।	तदुक्ताः=चायल ।
मुद्गाः=मूँग	मापाः=माप, माँह ।
स्त्री=स्त्री ।	सन्ति=हैं ।
कृष्णाः=काले ।	अर्घः=भाधा ।

वाक्य

१. स पुरुषः नगरं गत्वा जलं आनयति=वह पुरुष शहर जाकर जल लाता है ।
२. तत्र गोधूमाः सन्ति परन्तु यथा न सन्ति=वहाँ गेंहूँ हैं परन्तु जौ नहीं हैं ।
३. तिलाः कृष्णाः सन्ति तथा एव मापा अपि=तिल काले हैं वैसे ही माप भी ।
४. मापाः न तथा कृष्णाः यथा तिलाः=माप वैसे काले नहीं, जैसे तिल ।
५. परय, अत्र पुरुषः अस्ति=देख यहाँ मनुष्य है ।
६. अत्र पुरुषः अस्ति परन्तु स्त्री नास्ति=यहाँ मनुष्य है परन्तु स्त्री नहीं है ।
७. दुर्गादासः किं करोति=दुर्गादास क्या करता है ?
८. श्यामरामः तत्र तिष्ठति किञ्चित् च=श्यामराम वहाँ ठहरता है और निजता है ।

६. तव दूतः लिखितुं न शक्नोति=तेरा दूत लिख नहीं सकता ।
 १०. मम स्त्री संस्कृतं वक्तुं शक्नोति=मेरी स्त्री संस्कृत बोल सकती है ।
 ११. तत्र उपविश, यत्र बालकः स्वपिति=वहाँ बैठ, जहाँ बालक सोता है ।
 १२. अत्र बालकः नास्ति=यहाँ बालक नहीं है ।
 १३. तर्हि स कुत्र अस्ति इति अहं न जानामि=तो वह कहा है यह मैं नहीं जानता ।
 १४. स इदानीं उपरि अस्ति=वह अब ऊपर है ।
 १५. त्वं नीचैः गच्छ=तू नीचे जा ।

शब्द

त्यजति=छोड़ता है ।	त्यजसि=तू छोड़ता है
त्यजामि=छोड़ता हूँ ।	त्यजस्व=छोड़कर ।
त्यक्तुं=छोड़ने के लिये ।	हस्तौ=दोनों हाथ ।
प्रक्षालयति=(वह) धोना है ।	प्रक्षालयसि=(तू) धोता है ।
प्रक्षालयामि=धोता हूँ ।	प्रक्षालयितुं=धोने के लिये ।
प्रक्षालय=धो ।	मुखं=मुँह ।
पादौ=दोनों पाँव ।	प्रक्षालनं=धोना ।
कठिनं=सखत ।	त्यज=छोड़ ।
प्रथमं=पहिले ।	जहः=मूर्ख

१. स हस्तौ पादौ च प्रक्षालयति=वह हाथ और पाँव धोता है ।
 २. अहं वस्त्रं प्रक्षालयामि=मैं कपड़ा धोता हूँ ।
 ३. त्वं किं इदानीं प्रक्षालयसि=तू क्या अब धोता है ?
 ४. त्व इदानीं एव किमर्थं तत् प्रक्षालयसि=तू अभी किस लिये उसे धोता है ।

५. अथ सायक ले जल आनय वस्त्रं च प्रक्षालय=आज साय-
काल जल ला और वस्त्र धो ।

६. त्व अचूतं किमर्थं न त्यजसि=तू असत्य बोलना क्यों

७. स असत्य शीघ्रं एष त्यजति=वह असत्य को जल्दी ही
छोड़ देता है ।

८. प्रथमं हस्ती पादौ च प्रक्षालय=पहिले हाथ और पाव धो ।

९. पश्चात् भोजनं कुरु=पीछे भोजन कर ।

१०. प्रातः एव उत्तिष्ठ मुरा च प्रक्षालय=सवेरे ही उठ और
मुँह धो ।

११. स प्रातः उत्तिष्ठति बहिः गच्छति तत्र मुरा प्रक्षालयति=वह
सवेरे ही उठकर बाहर जाता है और
वहाँ मुँह धोता है ।

१२. स वर्ष्यां जलं न पिबति=वह गरम जल नहीं पीता ।

१३. अहं शं त जलं न पिबामि=मैं ठंडा जल पीता हूँ ।

१४. त्वं तत्र गच्छ वस्त्रं च प्रक्षालय=तू वहाँ जा और कपड़ा धो ।

१५. जहं न पठति=मूर्ख नहीं पढ़ता ।

१६. स धातकः मूढः नैव अस्ति=यह धातक मूढ़ नहीं है ।

पुङ्गिगः "अस्मत्" शब्दः ।

१ प्रथमा	अहं	मैं
२ द्वितीया	मां	मुझे
३ तृतीया	मया	मैंने
४ चतुर्थी	मह्य	मेरे लिये
५ पंचमी	मत्	मेरे से
६ षष्ठी	मम	मेरा
७ सप्तमी	मयि	मुझ में

किं करोति ? स प्रातः उत्थाय तपः आचरति । यज्ञमित्रः भूमिप्रस्य पुत्रः अस्ति । स तं मुनिं प्रणम्य अत्र आगच्छति । स मुनिः कस्मात् स्थानात् अत्र आगतः इति त्वं जानासि किम् ? स मुनिः कस्मात् माम् दू अत्र आगतः अहं नैव जानामि । यज्ञमित्रः जानाति । हे मित्रं किं त्वं जानासि ? स मुनिः अयोध्यानगरात् अत्र आगतः । कदा आगतः इति अहं न जानामि । स सर्वं शास्त्रं जानाति ।

पाठ २०

पाठक ! इस समय तक आपके उन्नीस पाठ हो चुके हैं, और आपके पास उपयोगी अर्थात् नित्य व्यवहार में उपयुक्त होने वाले बहुत शब्द आ चुके हैं, अगर आपने ये शब्द स्मरण किये होंगे तथा उस उस पाठ में जो जो वाक्य दिये हैं, उनकी पद्धति की ओर ध्यान देकर, उन वाक्यों को अच्छी प्रकार पढ़ लिया होगा, तो निःसन्देह दैनिक व्यवहार के उपयोगी कतिपय वाक्य आप पढ़ सकेंगे । प्रत्येक पाठ में आपके पास दस बीस उपयोगी शब्द आते हैं, और जो पाठक इनका उपयोग अधिक करेंगे वे संस्कृत भाषा जल्दी सीख सकेंगे ।

आज के पाठ में कोई नया शब्द नहीं दिया जाता, परन्तु जो शब्द और वाक्य पूर्वोक्त उन्नीस पाठों में आ चुके हैं उन्नीस की आज द्वारा याद कीजिये, ताकि वे भूल न जाय । अगर आप विचित्रा भूलेंगे तो आप अगे नहीं बढ़ सकेंगे, हम ऐसे क्रम से वाक्य देने का यत्न करते हैं कि शब्दों को पढ़ कर बिना ही शब्द आप ही स्मरण हो जाय । तथापि हमारा प्रयत्न सफल होने के लिये आप का दृढ़ अध्ययन भी तो होना चाहिये ।

आप नये संस्कृत वाक्य बनाने के समय धरते होंगे, कि शापद

परीक्षा

सूचना—पाठकों के इस समय तक बीस पाठ हो चुके हैं। यहाँ उचित है कि पाठक पूर्व पाठों को दुबारा पढ़ कर सब शब्द तथा वाक्य स्मरण करें। और इन प्रश्नों का उत्तर देने के पश्चात् इकाईसवें पाठ को प्रारम्भ करें।

परीक्षा के प्रश्न

(१) निम्न स्वरो के सन्धि कीजिये:—

इ + ई	आ + औ
आ + इ	उ + अ
अ + ए	इ + आ
ओ + आ	ऐ + इ

(२) निम्न शब्दों की सातों विभक्तियों के एकवचन के रूप कीजिये:—

रामः । देवदत्तः । प्रामः । इन्द्र । नृपति । भूपतिः । भानुः ।
कर्तुः । कर्तृ । धर्तृ ।

(३) निम्न शब्दों के पंचमी के एक वचन के रूप लिखिये:—
नरपतिः । विश्वमानुः । वसुः । कः । अस्मद् । भोक्तृ ।
पातृः । रथः । कविः । शत्रुः ।

निम्न वाक्यों के अर्थ कहिये ।

(१) किं त्व अद्य माम् न गच्छसि ? (२) स तत्र गत्वा किं
किं करोति ? (३) अहं रात्रौ मामाद् बहिः न गच्छामि । (४)
स दिवा यत्र शुभ्र अवि भ्रमति । (५) अहं परश्वः हरिद्वारं गत्वा
गंगाजलं आनेष्यामि । (६) पर्यंतस्य शिखरं रमणीयं नास्ति ।
(७) तेन उत्तमं पुस्तकं रचितम् । (८) स हनन्त्या पठति, पठित्वा
भोजनं करोति । (९) रवेः प्रकाशो भवति । (१०) नृपतेः प्रसादेन

तेन घनं प्राप्तम् । (११) मुनिना भोदकः न भक्षितः । (१२) स
रात्रौ भोजनं न करोति । (१३) सेनापतिना सैन्यं अत्र आनीतम् ।
(१४) वह्निना सर्वं गृहं दग्धम् । (१५) वाल्मीकिना रामायणं
रचितम् । (१६) व्यासेन महाभारतं लिखितम् ।

(५) निम्न वाक्यों का संस्कृत कीर्तिपः—

१ क्व वह नगर को जायगा । २ अथ तू कहां जाता है ।
३ भोज, तू वहां क्यों नहीं जाता । ४ हे भाई ! तू वहां शीघ्र
जा । ५ जहाँ तू दिन में जाता है वहां वह रात्री में जाता है ।
६ वहां वह कैसे परसों जा सकता है । ७ तू अथ यन को जा,
मैं नगर को जाऊंगा और मेरा भाई गांव को जायगा । ८ मैं घर
जाऊंगा । ९ तू वहाँ जल्दी जा । १० आज विष्णु शर्मा आ गया
११ मैं परसों स्नान करूँगा ।

पाठ ११

रेखा=लकीर ।

सिद्धं=तैयार ।

षायुः=दवा ।

स्वभावः=आदत ।

मार्जारं=बिल्ली को ।

आकाशः=आकाश ।

लोमः=तालच ।

शुद्धं=स्यच्छ ।

नगरे=शहर में ।

येपः=पहनाव ।

अरवं=च दे को ।

तारकाः=तारागण ।

१. तव भोजनं सिद्धं अस्ति इति त्वं जानासि किंतेरा भोजन
तैयार है ऐसा तू जानता है क्या ?
२. भो मित्र ! अहं न जानामि=हे मित्र ! मैं नहीं जानता ।
३. एतत् ज्ञात्वा भोजनाय कथं न आगमिष्यामि=यह जानकर

भोजन के लिये कैसे नहीं आऊँगा ।

४. प्रातः एव उत्तिष्ठ । व्यायाम च कुरु=सवेरे ही उठ और व्यायाम कर ।
५. त्वं प्रातः वनं किमर्थं गच्छसि=तू सवेरे वन को क्यों जाता है ।
६. तत्र प्रातः शुद्धः वायुः भवति=वहाँ सवेरे शुद्ध हवा होती है ।
७. किं नगरे शुद्धः वायुः न भवति=क्या शहर में शुद्ध वायु नहीं होता ।
८. नगरे शुद्धः वायुः कदापि न भवति=शहर में शुद्ध वायु कभी नहीं होती ।
९. एवं अत्र सायंकाल पर्यन्तं स्थातुं शक्नोति किम्=तू यहाँ शाम तक ठहर सकता है क्या ?
१०. स अतीव दुर्बलः जातः अतः गन्तुं न शक्नोति=वह बहुत दुर्बल हो गया है, इसलिए चल नहीं सकता ।
११. त्व इदानीं ऊ्वरितः असि, अतः अल्पं अन्नं भक्षय=तू अब उबर चुका है, इसलिये थोड़ा अन्न खा ।
१२. स किमर्थं मार्जारं ताडयति=वह किस लिये बिल्ली को मारता है ?
१३. स कदा नीरोगः भविष्यति=वह कब नीरोग होगा ?
१४. आकाशे तारकाः पश्य=आकाश में तारे देख ।
१५. मालकः वने श्लोढति किम्=मालक वन में खेलता है क्या भानु =सूर्य । अस्तसमये=सूर्य डूबने के समय उदयसमये=उदयकाल में उदयते=उगता है । हसन=हसना । प्रतिमा=मूर्ति ।

रजकः=धोबी । गृहीत्वा=लेकर ।

दुग्धपानार्थं=दूध पीने के लिये ।

गोदुग्धं=गाय का दूध ! नमनं=नमस्कार ।

— आलोकचित्रं=फोटोग्राफ ।

१. एष भानुः आकाशे उदयते ! = यह सूर्य आकाश में निकलता है ।
२. यदा भानुः उदयते तदा आकाशः रक्षो जायते = जब सूर्य निकलता है तब आकाश लाल होता है ।
३. यथा उदय-समये. तथा अस्त-समये अपि भवति = जैसा उदय काल में वैसा अस्त समय में भी होता है ।
४. भद्रसेनः अतीव दरिद्रः अस्ति इति त्वं न जानासि . किम् = भद्रसेन अत्यन्त दरिद्र है, यह तू नहीं जानता क्या ।
५. पश्य स किमर्थं हसति = देख वह क्यों हंसता है ।
६. अहमदः मार्गं पतित अतः स हसति = अहमद रास्ते पर गिर पड़ा इसलिये वह हंसता है ।
७. किं पतद् वरं अस्ति = क्या यह ठीक है ।
८. एवं हसनं वरं नैव अस्ति = इस प्रकार हंसना ठीक नहीं है ।
९. इदानीं सः रजकः वस्त्रं कुत्र नयति = अब वह धोबी वस्त्र कहां ले जाता है ।
१०. रजकः प्रातः एव वस्त्रं गृहीत्वा कूर्पं गच्छति = धोबी सुबेरे ही वस्त्र लेकर कूर्प पर जाता है ।
११. स तत्र गत्वा वस्त्रं प्रक्षालयति = वह वहां जाकर वस्त्र धोता है ।
१२. स परकीयां गौं किमर्थं गृहं आनयति = वह दूसरे की गाय किस लिये घर में लाता है ।

१३. स दुग्धपानार्थं गां आनयति=बहू दूध पीने के लिये गाय लाता है।

१४. गोदुग्धं त्वं पिबसि किं=गाय का दूध तू पीता है क्या ?

१५. गोदुग्धं मिष्टं भवति अतः नद् एव अहं पिबामि=गाय का दूध मीठा होता है। इसलिये वही मैं पीता हूँ।

१६. श्रुणु ! अथ अहं तत्र नैव गच्छामि=सुन ! आज मैं वहाँ नहीं जाऊँगा।

पुल्लिग में 'युष्मत्' शब्द

१. प्रथमा	त्वं	तू
२. द्वितीया	त्वां	तुम्हें
३. तृतीया	त्वया	तू ने
४. चतुर्थी	तुभ्यं	तेरे लिये
५. पंचमी	त्वत्	तुम्ह से
६. षष्ठी	त्वा	तेरा
७. सप्तमी	त्वयि	तुम्ह में

स्थातुं=बैठने के लिये।

उस्थातुं=उठने के लिये।

असितुं=बैठने के लिये।

भोक्तुं=खाने के लिये।

पातुं=पीने के लिये।

स्वप्तुं=सोने के लिये।

जेतुं=विजय पाने के लिये।

वक्तुं=बोलने के लिये।

स्वीकर्तुं=स्वीकार करने के लिये।

चोरयितुं=चोरने के लिये।

गणयितुं=गिनने के लिए।

पाठितुं=पढ़ने के लिए।

हसितुं=हंसने के लिये।

ताडयितुं=मारने के लिये।

माण्डुं=मांजने के लिये।

चिन्तयितुं=बिचार करने के लिये।

आगरितुं=आगने के लिये।

चिन्तयितुं=बिचार करने के लिये।

- इच्छुं=देखने के लिये । इमर्तुं=याद करने के लिये ।
भक्षयितुं=खाने के लिये ।

वाक्य

१. त्वं प्रष्टुं गच्छ=तू पूछने के लिये जा ।
२. स तत्र अन्नं भोक्तुं गच्छति=वह वहाँ अन्न खाने के लिये जाता है ।
३. अहं जलं पातुं अत्र आगतः=मैं जल पीने के लिये यहाँ आया ।
४. ईश्वरदत्तः स्वप्नुं स्वगृहं गतः=ईश्वरदत्त सोने के लिये अपने घर गया ।
५. बालकः पठितुं न इच्छति=बालक पढ़ने के लिए नहीं चाहता ।
६. सेनापतिः जेतुं वयमं करोति=सेनापति विजय पाने के लिये सयोग करता है ।
७. एवं अर्थापहस्य समीपे तं प्रश्नं प्रष्टुं गच्छसि किं ? इत्युक्तं - गुरु के पास वह प्रश्न पूछने के लिये जाते हो क्या ?
८. आः ! विष्णुसार्मा तत्र शीघ्रं गन्तुं यावति=आरे ! विष्णुसार्मा वहाँ जलदी जाने के लिये दीड़ता है ।
९. स गुरुं प्रणम्य अभ्ययनं करोति=वह गुरु को नमन कर के अभ्ययन करता है ।

सरल वाक्य

१ किं त्वं तस्य गृहे तिष्ठसि ? । २ अहं अर्थापहस्य समीपे त्वं पठितुं नायं गच्छामि । ३ एवं तस्मात् स्थानात् अयातुं न इच्छसि हिम् । ४ स आसनं प्रयातुं अत्र न इच्छति । ५ एवं कदा मार्गं गन्तुम् इच्छसि । ६ अहं वने गत्वा व्यामं हन्तुं इच्छामि । ७ केव

सह त्वं वनं गमिष्यति । ८ अहं अद्य रात्रौ सरदार-दिलीपसिंहेन सह वनं गमिष्यामि । ९ केन दिलीपसिंहेन सह त्वं गन्तुम् इच्छसि ।

१० यः दिलीपसिंहः अमृतसर-नगरे निवसति । ११ कस्य स पुत्रः ।

१२ स सरदार कर्तारसिंहस्य पुत्रः ज्वालासिंहस्य च भ्राता अस्ति ।

१३ अहं अपि तं द्रष्टुं आगमिष्यामि । १४ देवशर्मा इदानीं कुत्र गतः । १५ यत्र विश्वदेवः गतः तत्र एव देवशर्मा अपि गतः । १६ देवदत्तः पुष्पमालां गृहीत्वा धावति । १७ किमर्थं स धावति । १८ स शीघ्रं गृहं गन्तुम् इच्छति अतः एवं धावति । १९ तेन द्रव्यं दत्त्वा पठितम् । २० परंतु मया द्रव्यं अदत्त्वा एव पठितम् । २१ यदि स वेदं पठति तर्हि त्वं अपि वेदं पठ । २२ प्रातःकाल उत्थाय ईश्वरस्य स्मरणं कर्तव्यम् । २३ प्रातःकाल उत्थाय विद्याभ्यासः कर्तव्यः । २४ प्रातःकाले अभ्यासे कृते विद्या सत्त्वरं आगमिष्यति । २५ विद्यां विना व्यर्थं जीवनम् । २६ स तत्र गत्वा आगतः किं ?

१ क्या तू उसके घर रहता है । २ मैं गुरु के पास वेद पढ़ने के लिये हमेशा जाता हूँ । ३ तू उस स्थान से उठना नहीं चाहता है क्या । ४ वह आसन से उठना भी नहीं चाहता । ५ तू कब गाँव को माना चाहता है । ६ मैं घन जाकर बाघ को मारना चाहता हूँ ।

१ निवसति=रहता है । २ भ्राता=भाई । ३ द्रष्टुं=देखने के लिये । ४ अदत्त्वा=न देकर ।

५ स्मरण=याद । ६ विद्याभ्यासः=पढ़ना । ७ अभ्यासे कृते=अभ्यास करने पर । ८ व्यर्थं जीवनं=जिंदगी व्यर्थ है ।

७ किसके साथ तू बन को जायगा । ८ में आज सरदार दिलीपसिंह के साथ जाना चाहता हूँ । ९ कौन से दिलीपसिंह के साथ जाना चाहते हो । १० जो अमृतसर में रहता है ! ११ किसका वह लड़का है । १२ देवदत्त आज यहाँ नहीं है । १३ तू पर जा मैं नीचे जाता हूँ । १४ जलदी जलेबियाँ ले आ ।

पाठ २२

स्मृत्वा=स्मरण करके

सदाचारः=सदाचार

स्मरति=वह स्मरण करता है

स्मरामि=स्मरण करता हूँ

स्थान=जगह

विषये=विषय में ।

स्मरिष्यति=स्मरण करेगा ।

स्मरिष्यामि=स्मरण करूँगा ।

ज्ञानं=ज्ञान

शृंगवेरं=अदरक

स्मरसि=तू स्मरण करता है

गणयति=वह गिनता है

सकलं=सम्पूर्ण

शास्त्रस्य=शास्त्र का ।

स्मरिष्यसि=तू स्मरण करेगा

चोरयति=चुराता है ।

वाक्य

१. स स्मृत्वा स्मृत्वा वदति=वह स्मरण कर करके बोलता है ।
२. यस्य ज्ञानं नास्ति तस्मिन् विषये सः किमर्थं वदति=जिसके ज्ञान नहीं है उस विषय में वह क्यों बोलता है ।
३. सदाचार एव धर्मः अस्ति=सदाचार ही धर्म है ।
४. शृंगवेरं त्वं भक्षयसि किं=अदरक तू खाता है क्या ?
५. देवदत्तस्य स्थानं त्वं जानासि किं=देवदत्त का स्थान तू जानता है क्या ?
६. इदानीम् तु न जानामि=अब तो नहीं जानता ।
७. परन्तु स्मृत्वा वदिष्यामि=परन्तु स्मरण करके बताऊँगा ।

८. तस्य गृहं अतीव दूरं अग्नित्=उसका घर बहुत ही दूर है ।
 ९. तत्र त्वं इदानीं किमर्थं गन्तुम् इच्छसि=वहाँ तू अब क्या जाना चाहता है ?
 १०. स शस्त्रस्य सर्वं ज्ञानं जानाति=वह शास्त्र का सब ज्ञान जानता है ।
 १. यदि त्वं तद् ज्ञातु इच्छसि तर्हि आगच्छ=अगर तू उसे जानना चाहता है तो आ ।
 २. त्वं घृतं कथं पिबसि=तू घी कैसे पीता है ?
 ३. अहं तु न पातु शक्नोमि=मैं तो नहीं पी सकता ।
 ४. पश्य कथं अहं पिबामि=देख कैसे पीता हूँ ।

शब्द

व पुः=शत्रु ।

त्तः=हाथ

क लिन्यः=मलीनता ।

क्रीय=वेच कर ।

णासि=तू खरीदता है ।

द लोक्यति=देखता है ।

इ=यदि ।

=अथवा ।

केशः=केश ।

रोचते=पसन्द है ।

मापवटीः=कचीरी ।

क्रीणाति=बह खरीदता है ।

क्रीणामि=खरीदता हूँ ।

कृष्णः=काला ।

मा=नहीं ।

विलोक्यति=देखता है ।

- वि . मालिन्यं चरं नास्ति=मलीनता अच्छी नहीं है ।
 स . तस्य केशः अतीव कृष्णः अस्ति=उसके केश बहुत काले हैं ।
 गं . यदि रोचते तर्हि गृहाण=अगर पसन्द है तो ले ।
 (५) . न रोचतेऽचेत् मा कुरु=अगर पसन्द नहीं है (करी) न कर ।

भे . ऋ 'चेत्' इति वाक्य के पश्चात् आना है, परन्तु उसका मैं अर्थ पहिले लिया जाता है तथा 'तो' यह शब्द संस्कृत हुआ भी भाषा में अर्थ से बोला जाता है ।

५. किं इदानीं क्रीणासि पुष्पं फलं वा=क्या अब खरीदता है फूल या फल ?
६. न अहं इदानीं पुष्पं क्रीणामि नापि फलम्=न मैं अब फूल खरीदता हूँ न फल ।
७. तर्हि किमर्थं अत्र मार्गं तिष्ठसि=तब क्यों यहाँ मार्ग पर ठहरता है ?
८. मम मित्र इदानीम् अत्र आगमिष्यति=मेरा मित्र अब यहाँ आवेगा ।
९. स किं आनेष्यति=वह क्या लायेगा ?
१०. स इदानीं मापवतीः भक्षयार्थं आनेष्यति=वह अब कचौरी खाने के लिये लायेगा ।
११. स दुग्धं विक्रीय आगच्छति=वह दूध बेच कर आता है

दकारान्तः लिंगः 'तद्' शब्दः

१ प्रथमा	सः	वह
२ द्वितीया	तं	उसको
३ तृतीया	तेन	उसने
४ चतुर्थी	तस्मै	उसके लिये
५ पंचमी	तस्मात्	उस से
६ षष्ठी	तस्य	उसका
७ सप्तमी	तस्मिन्	उस में

दकारान्तः पुलिगो 'यद्' शब्दः

१ प्रथमा—	यः	जो
२ द्वितीया	यं	जिसको
३ तृतीया	येन	जिसने

३ चतुर्थी	यस्मै	-	जिस के लिये
५ पंचमी	यस्मात्		जिससे
६ षष्ठी	यस्य		जिसका
७ सप्तमी	यस्मिन्		जिसमें

१. येन सह त्वं वदसि स न साधुः अस्ति=जिसके साथ तू बोलता है, वह उत्तम मनुष्य नहीं (है) ।
२. यस्मै त्वं धनं दातुं इच्छसि तत्र नास्ति=जिसके लिये तू धन देना चाहता है, वह वहाँ नहीं है ।
३. यस्य गृहं अग्निना दग्धं, स अत्र आगतः=जिस का घर आग से जला, वह यहाँ आ गया है ।
४. यस्मिन् पात्रे दुग्धं रक्षितं, तत् पात्रं भिन्नम्=जिस : बरतन में दूध रखा था वह बरतन टूट गया ।
५. यस्मात् ग्रामात् त्वं इदानीम् आगतः तस्य किं नाम अस्ति= जिस गाँव से तू अब आया उसका क्या नाम है ?
६. यं त्वं पश्यसि सः कः अस्ति=जिसको तू देखता है वह कौन है ।
७. यः पुस्तकं पठसि स एव मम भ्राता अस्ति=जो पुस्तक पढ़ता है वह भी मेरा भाई है ।
८. यस्मै धनं दातुं इच्छसि सिं स दरिद्रः अस्ति=जिसको धन देना चाहते हो क्या वह दरिद्र है ?
९. येन सह वदसि तं एवं कथय=जिसके साथ बोलते हो उसको ऐसा कह ।
१०. यः कूपस्य जलं पातुम् इच्छसि तस्मै कूपस्य एव जलं वेद्मि=

जो घूपं का जल पीना चाहता है उसके लिए घूपं का ही जल दे ।

११. तथा यः गंगाजलं पातुम् इच्छति तस्मै शुद्धं गंगाजलं देहि=
वैसा ही गंगाजल पीना चाहता है उसके लिये शुद्ध गंगाजल दे ।
सरल वाक्य

१ श्रीगमपन्द्रस्य पत्रं आगतम् । २ अहं पत्रं पठामि । ३ देव-
दत्तः कंदुपेन क्रीडति । ४ पश्य ? स युष्मा लक्ष्मणशर्मा अत्र
आगतः । ५ विष्णुदत्तेन रामायणं नाम पुस्तकं आर्यभाषायां
लिखितम् । ६ तेन शूरेण व्यासः हतः । ७ स आचार्यः सदा
अत्र पद्य निवसति । ८ यदा स पाठशालां गच्छति सदा दर्श-
वादन-समयः भवति । ९ यदा त्वं गंगाजलं आनेष्यसि तदा
फूपस्य जलं अपि आनय । १० मध्याह्नममयः जातः ।

पाठ २३

“क्रीणाति” “स्वरीदता है” इस के बदले “वि” लगाने से
“वेचता है” ऐसा अर्थ होता है, देखो:—

क्रीणाति=बहु स्वरीदता है क्रीणासि=तू स्वरीदता है

क्रीणामि=स्वरीदता हूँ क्रीत्वा=स्वरीद कर

सूची=सुई नौरा=किरती, वेदा

विक्रीणीते=बहु वेचता है विक्रीणीषे=तू वेचता है

विक्रीणे=वेचता हूँ । विक्रीष्य=वेचकर ।

१ आगतं=आया । २ नाम=नामक । ३ आर्यं भाषा=हिन्दी
भाषा । ४ दश यजे ।

समीपं=पास

कंठः=गला .

वाक्य

१. अधुना त्वं आपणं गत्वा किं क्रीणासि=अब तू बाजार जाकर जाकर क्या खरीदता है ।
 २. अहं पुस्तकं मसीपात्रं लेखनीं च क्रीणामि=मैं पुस्तक, दवात और कलम खरीदता हूँ ।
 ३. यत्र त्वं स्थास्यसि अहमपि तत्र स्थातुं इच्छामि=जहाँ तू ठहरेगा मैं भी वहाँ ठहरना चाहता हूँ ।
 ४. यत् त्वं लेखितुं इच्छसि, तद् अत्र लिख=जो तू लिखना चाहता है, वह यहाँ लिख ।
 ५. नवनीतं विक्रीय, घृतं च क्रीत्वा, आगच्छ=मकखन बेचकर और घी खरीद कर, आ ।
 ६. अद्यश्चः आपणो पुराणं मलिनं च घृतं मस्ति=आज-कल बाजार में पुराना और मलीन घी है ।
 ७. यदि तत्र नवीनं शुद्धं स्वादु च घृतं नास्ति=अगर वहाँ नया शुद्ध और मीठा घी नहीं है ।
 ८. तर्हि तद् न आनय=तो उसको न ला ।
 ९. अहं शुद्धं घृतं एव भक्षयामि=मैं शुद्ध घी ही खाता हूँ ।
- पूर्व स्थल में कहा है कि स्वर आगे आने से अनुस्वारका 'म' बन जाता है, उदाहरण देखिये:—

ॐ "अहं+अपि" इन दो शब्दों का जोड़ "अहमपि" ऐसा होता है । शब्द के अन्त में जो नुक्ता होता है उसको अनुस्वार कहते हैं, जैसा "घृतं दुग्धं" इत्यादि इस अनुस्वार के आगे स्वर आने से उसका "म्" बनता है, जैसा "दुग्धं+अस्ति" इसका "दुग्धमस्ति" ऐसा होता है ॥

अहं अस्मि	अहमस्मि	मैं हूँ ।
त्वं इच्छसि	त्वमिच्छसि	तू चाहता है ।
दुग्धं आनय	दुग्धमानय	दूध ले आ ।
घृतं उत्तमं अस्ति	घृतमुत्तममस्ति	घी उत्तम है ।
त्वं औषधं आनय	त्वमौषधमानय	तू दवा ले आ ।

इस प्रकार संस्कृत में जोड़ होते हैं, इनको देख कर पाठकों को घबराना नहीं चाहिये, इस समय तक हमने जोड़ (जिन को संस्कृत में सन्धि कहते हैं) नहीं बताया, परन्तु अब घताना चाहते हैं, यदि पाठक थोड़ा सा ध्यान देंगे, तो उनको कोई कठिनता नहीं प्रतीत होगी। जो जो जोड़ (सन्धि) हम देंगे उनको अलग अलग शब्द हम नीचे टिप्पणी में देंगे, जिस से किन किन शब्दों का वह जोड़ है, यह पाठक जान सकेंगे, जैसे—

त्वमत्र आगच्छ=तू यहां आ

स दुग्धमानयति=वह दूध लाता है ।

त्वमिदानीं कुत्र गच्छसि=तू अब कहां जाता है ।

अहमत्र तिष्ठामि=मैं यहां ठहरता हूँ ।

जहां जहां इस प्रकार का जोड़ आवेगा, वहां वहां पाठकों को सोचना चाहिये कि किन २ शब्दों का यह जोड़ (सन्धि) हो सकता है ॥

पाठकों ने इस समय तक पुरिल्लग शब्दों को चलाने का प्रकार जान लिया है। प्रायः पन्द्रह शब्द सातों विभक्तियों में चलाकर

टिप्पणी—(१) त्वं अत्र, (२) दुग्धं आनयति (३) त्वं इदानीं
(४) अहं अत्र

बताये हैं। अगर पाठक उनको ठीक स्मरण रखेंगे तो उनके समान शब्दों के रूप बनाने में उनके लिये कोई दिक्कत कहीं होगी। अब स्त्रीलिंग शब्दों के रूप किस प्रकार होते हैं यह बताना है। स्त्रीलिंग शब्दों के विषय में पाठकों को ध्यान में रखना चाहिए कि कोई आकारान्त शब्द स्त्रीलिंग में नहीं है। आकारान्त शब्द स्त्रीलिंग हुआ करते हैं। जैसे जमा, कृपा, दया भर्या, जाया, पालिका, गंगा, ब्रह्मपुत्र, विद्या, माला, लता, प्रविष्टा इत्यादि शब्द आकारान्त हैं। इनको आकारान्त इसलिये कहते हैं कि इनके अंत में 'आ' रहता है। अब इनके रूप देखिये—

आकारान्तः स्त्रीलिंगी 'विद्या' शब्द ।

१ प्रथमा	विद्या	विद्या
२ द्वितीया	विद्या	विद्या को
३ तृतीया	विद्याया	विद्या ने
४ चतुर्थी	विद्यायै	विद्या के लिये
५ पंचमी	विद्यायाः	विद्या से
६ षष्ठी	विद्यायाः	विद्या का
७ सप्तमी	विद्यायां	विद्या में
सम्बोधन	(हे) विद्ये	(हे) विद्ये

विद्या के समान चलने वाले आकारान्त स्त्रीलिंग शब्द

कृपा=दया	दया=कृपा, मेहरबानी
भार्या=स्त्री	बाला=लड़की
पालिका=लड़की	गंगा=गंगाजी
यमुना=यमुनाजी	शत्रु=माला
शत्रु=गृह, घर	ब्रह्मपुत्रा=ब्रह्मपुत्र नदी

लता=बेज	माजा=माजा
पुत्री=लड़की	जाया=छो, धर्मपत्नी
प्रतिष्ठ=यश	सुता=लड़की
शकैरा=रक्षा, मिथी	पाठशाला=पाठशाला
धर्मशाला=धर्मशाला, सराय	प्ररा=पियाऊ

वाक्य

१. दयां कुरु=दया कर
२. भार्यया सह रामचन्द्रः वनं गतः=छो के साथ रामचन्द्र वन को गया ।
३. यमुनायाः जलं आनीतम्=यमुनाजी का जल लाया ।
४. यालिकायाः वस्त्रम् आनय=लड़की का कपड़ा ले आ ।
५. सुता कुत्र गता=लड़की कहां गई ?
६. दुग्धाय शकैरां देहि=दूध के लिये मिथी दे ।
७. शकैरया मिष्टं भवति=मिथी से मीठा होता है ।
८. धर्मशालायाः रक्षकः कुत्र अस्ति=सराय का चौकीदार कहां है ?
९. धर्म्या यालिकया सह अद्य प्रारंभं न गता=माता लड़की के साथ आज गांव को नहीं गई ।
१०. गंगायाः जलम् आनयामि=गंगा का जल लाता हूं ।
११. ईश्वरस्य दया अस्ति=ईश्वर की दया है ।
१२. ईश्वरस्य कृपया सर्वं शुभं भवति=ईश्वर की कृपा से सब शुभ होता है ।
१३. तस्य शाला उत्तमा अस्ति=उसका मकान उत्तम है ।
१४. या कृष्णस्य सुता सा पालकस्य भार्या=जो कृष्ण की लड़की वह पालक की धर्मपत्नी ।
१५. तस्या कल्याणं दयानात् सा पुत्रमाणा आनीता=बुम ने जिस

स्थान से वह फूँलों की माला लाई ।
सरल वाक्य .

१ स तत्र तिष्ठति । २ अहं अत्र क्रीडामि । ३ स पाठशालां
गत्वा पुस्तकं पठति । ४ त्वं शुद्धं गंगाजलं पिबसि । ५ त्वं तत्
स्मरसि किम् । ६ स स्वगृहं गत्वा अन्नं भक्षयति । ७ रामः तम्
एवं वदति । ८ शृणु, इदानीं हरिः देहली-नगरं गन्तुम् गच्छति ।
९ इदानीं तत्र न गन्तव्यमिति त्वं तं कथय । १० नरः ग्रामं गच्छति
किम् । अथकिम् स अद्य एव ग्रामं गमिष्यति । ११ चोरः धनं
चोरयति । पंडितः पुस्तकं पठति । धेनुः वनं गमिष्यति । १२ सा
पुत्रिका पुष्पमालां करोति । रामः फलं भक्षयति । १३ या गच्छति सा
एव गंगा भवति । १४ अद्य सा बालिका अम्भया सह वनं गता ।
१५ रामेण सह लक्ष्मण- वनं गतः । सीतया सह रामः वनं गतः ।
लक्ष्मणेन सह रामः वनं गतः ।

पाठ २४

पादुके=जूता

मेपः=मेढा

शृणोपि=तू सुनता है

मस्तकपीडा=सिर दर्द

घटिका=घड़ी

श्रुत्वा=सुन कर

श्रुतं=सुना

वृषभः= बैल

शृणोति=वह सुनता है

शृणोमि=सुनता हूँ

धूम्रयानं=रेल गाड़ी

अश्वः=घोड़ा

श्रोतुं=सुनने के लिये

स्मरणपुस्तकं=डाय

वाक्य

१. मम पादुके गृहाण तस्मै च देहि=मेरा खड़ाऊं ले और
उसको दे ।

२. पश्य तत् धूम्रयानं कथं शीघ्रं गच्छति=देख वह रेल गाड़ी

कैसी जल्दी जाती है ।

३. मेघः घावति परन्तु अश्वः तिष्ठति=मेढा दौड़ता है, परन्तु घोड़ा रुड़ा है ।

४. इह इदानीं श्रीकृष्णः हवनार्थं आगमिष्यति=यहां अब श्रीकृष्ण हवन करने को आवेगा ।

५. स इदानीं सन्ध्यां उपास्य पठनं आरभते=वह अब सन्ध्या करके पढ़ना आरम्भ करता है ।

६. एवं मां अधुना किं आज्ञापयसि=तू मुझे अब क्या आज्ञा करता है ?

७. शृणु, त्वम् इदानीं वनं न गच्छ, अत्र एव तिष्ठ=सुन, तू अब वन को न जा (और) यहां ही ठहर ।

८. किं एवं कुशलः असि इदानीम्=क्या तू निरोग है अब ?

९. अहमिदानीं कुशलः अस्मि=मैं अब कुशल हूँ ।

१०. भो मित्र ! वैकुण्ठा पुत्र सन्ति=हे मित्र चावल वहां हैं ।

११. स यथा श्रुतमस्ति तथा एव वदति=वह जैसा सुना है वैसे ही बोलता है ।

१२. यथा यथा स मालिन्यं त्यजति तथा तथा शुद्धो भवति=जैसे जैसे वह मलिनता छोड़ता है वैसे वैसे शुद्ध होता है ।

शब्द

कथां=कथा

उपदेशं=उपदेश

व्याख्यानं=व्याख्यान की

पंडितः=पंडित

अश्रयणाय=सुनने के लिये

उपासने=आराधना में

टिप्पणी—(१) अहं इदानीं (२) अतं अस्ति ।

शिवालये=शिवालय में	दास्यति=वह देगा
दास्यसि=तू देगा	दास्यामि=दूँगा
त्यक्त्वा=छोड़ कर	दृष्ट्वा=देख कर
स्थापय=रख	जल=चल, जल

वाक्य

१. त्वम् इदानीं पुत्रं गन्तुं इच्छसि ?=तूँ अब कहीं जाना चाहता है ?
२. अहमद्य ऋ उपदेशं श्रोतुं गच्छामि=मैं आज उपदेश सुनने के लिये जाता हूँ ।
३. पुत्र अस्ति उपदेशः अद्य=रुहा है उपदेश आज ?
४. तत्र पद्याने पंडितः विश्वामित्रः उपदेशं दास्यति=वहा बाग में पंडित विश्वामित्र उपदेश देगा ।
५. न तत्र, पद्याने उपदेशः नास्ति, शिवालये अस्ति=नहीं नहीं, बाग में उपदेश नहीं है, शिवालय में है ।
६. कः वरं व्याख्यानं ददाति=कौन अच्छा व्याख्यान देता है ।
७. पंडितवरः देवव्रत एव उत्तमं व्याख्यानं ददाति=पंडित ही अच्छा व्याख्यान देता है ।
८. व्याख्यानं श्रवणाय आलस्यं त्यक्त्वा गच्छ=व्याख्यान सुनने के लिये आलस्य छोड़कर जा ।
९. प्रथमं शुद्धं जलं आनय पश्चाद् भोजनं कुरु=पहिले शुद्ध जल ला पीछे भोजन कर ।
१०. स अश्वं दृष्ट्वा किं स्मरति=वह घोड़ा देख कर क्या सोचता है ?

११. तत्रवायु' नास्ति, जलमपिच्छे नैवास्ति=वहाँ वायु नहीं है और जल भी नहीं है ।
- १२ मदिरे मार्जार. नास्ति अतः दुग्ध तत्र स्थापय=मदिर में बिल्ली नहीं है इस लिये दूध वहाँ रख
१३. त्व गोदुग्ध गृहीत्वा पव शिवालय गच्छ=तू गाय का दूध लेकर ही शिवालय को जा ।
- १४ स पंडितः कुत्र अस्ति इदानी=वह पंडित कहाँ है अब ?

आकारान्तः स्त्रीलिङ्गो 'प्रतिज्ञा' शब्दः

१. प्रथमा	प्रतिज्ञा	प्रतिज्ञा
२. द्वितीया	प्रतिज्ञा	प्रतिज्ञा को
३. तृतीया	प्रतिज्ञया	प्रतिज्ञा से
४. चतुर्थी	प्रतिज्ञायै	प्रतिज्ञा के लिये
५. पञ्चमी	प्रतिज्ञाया	प्रतिज्ञा से
६. षष्ठी	"	" का
७. सप्तमी	प्रतिज्ञाँ	प्रतिज्ञा में
सप्तम्यन्त	(हे) प्रतिज्ञे	(हे) प्रतिज्ञा

आकारान्त स्त्रीलिङ्गी शब्दों के पञ्चमी तथा षष्ठी के एक घचन के रूप एक जैसे ही होते हैं । इसलिये षष्ठी के रूप के स्थान पर (,,) ऐसा चिह्न दिया है । इसका मतलब यह है कि वहाँ का रूप ऊपर के रूप के समान ही होता है । आगे भी जहाँ जहाँ रूपों के नीचे (,,) ऐसा चिह्न दिया होगा, वहाँ वहाँ पाठक समझें की वहाँ का रूप पूर्ववत् ही होता है ।

आकारान्त स्त्रीलिङ्गी शब्द

इच्छा=खाहिश	कामात्मता=विषयीपन, कामीपन
चिन्ता=फिकर	जिह्वा=जबान
दीक्षा=प्रत	मुष्ण=मोती
रेखा=लकीर	बन्या=लड़की
निद्रा=नींद	पूजा=सत्कार
पापाणुदृष्टि=स्लोट	मूर्खता=पागलपन
मलिनता=गंदगी	लुधा=भूख
कथा=कहानी	गीता=गीता_जी
देवत=देवी-	चेष्टा=प्रयत्न
आज्ञा=हुक्म	वाटिका=बाग
जरा=बुढ़ापा	अपूजा=सत्कार न करना
पत्रिका=पत्र, खत	पूपला=खांड की पूरी
रूक्षता=रूखापन	सन्ध्या=ध्यान
हरिद्रा=हल्दी	

वाक्य

१. स इच्छां करोति=वह इच्छा करता है ।
२. त्वया सा मुष्ण कुत्र स्थापिता ?=तू ने वह मोती कहाँ रक्खा ?
३. गीतार्थां किम् उक्तम् ?=गीता में क्या कहा है ?
४. तस्य आज्ञया अहं इदं कार्यं करोमि=उसकी आज्ञा से मैं यह कार्य करता हूँ ।
५. त्वं देवतायाः पूजां कुरु=तू देवता की पूजा कर ।
६. तेन पत्रिका प्रेषिता किम् ?=उसने पत्र भेजा क्या ?
७. जरार्ये किम् औषधम् ? बुढ़ापे के लिये क्या दवा ?

८. हरिद्रायाः पीतः वर्णः=हल्दी का पीला रंग ।

९. तस्य कन्यया मुक्ता न आनीता=उसकी लड़की ने मोती नहीं लाया ।

१०. मनुष्यः जिह्वया वदति=मनुष्य जवान से बोलता है ।

सरल वाक्य

१—रामः मित्रेण सह कुत्र तिष्ठति । आचार्यः शिष्येण सह वदति । गुरुः कुमारिकया सह कथां वदति । २—कन्यया सह स मनुष्यः उद्यानं गच्छति । किं स मनुष्यः प्रतिदिनं कन्यया सह उद्यानं गच्छति । अथकिम् । स पुरुषः प्रतिदिनं सायंकाले पञ्च-वादन समये श्रमणाय कन्यया सह उद्यानं गच्छति । ३—तदा तत्र त्वं अपि गच्छसि किम् । अथकिम् । अहं अपि तस्मिन् एव समये उद्यानं गच्छामि । ४—रामाय नमः । ईश्वराय नमः । नमः ते । नमस्ते । तस्मै नमः । अंबायै नमः । ५—वृक्षात् फलं पतति । पर्वतात् घृक्षः पतति । नगरात् जनः आगच्छति । तडागात् जलं आनयामि । उद्यानात् पुष्पं आनयति । आपणात् वस्त्रं आनय ।

पाठ २५

स्थापयति=बहू रखता है ।

स्थापयामि=रखता हूँ

नित्यं=नित्य

पृतं=किया

स्रवति=चूता है

स्थापयितुं=रखने के लिये

मध्यः=टेबल, मंजा

गतः=गया

स्थापयति=बहू रखता है

प्रत्येकं=हर एक

परमेश्वरं=ईश्वर की

स्थापनं=रखना

स्थापयित्वा=रख कर

स्थापनाय=रखने के लिये

विष्टरः=फुरसी

आगतः=आ गया

सस्थाप्य=रख कर

विरोध =मुकाबला

वाक्य

- १ नित्य परमेश्वर स्मृत्वा कर्म कुरु=नित्य परमेश्वर का स्मरण करके कार्य कर ।
- २ स मम पुस्तकं कुत्र स्थापयति=यह मेरी पुस्तक कहाँ रखता है ?
- ३ यत्र मञ्च अस्ति तत्र स तत् स्थापयति=जहाँ टेबल है वहाँ वह उसे रखता है ।
- ४ स तत्र दीप स्थापयितु गत =वह वहाँ दीप रखनेके लिये गया है।
- ५ त्व मसीपात्र कुत्र स्थापयितु इच्छसि=तू दवात कहाँ रखना चाहता है ?
- ६ स तत्र फल स्थापयित्वा अत्र आगत =वह वहाँ फल को रख कर यहाँ आया ।
- ७ कृत कर्म स्मरं=किया कर्म स्मरण कर ।
- ८ अत्र स्थित्वा कर्म कुरु नोचेत् अत्र न तिष्ठ=यहाँ रह कर कार्य कर, नहीं तो यहाँ न बैठ ।
- ९ यदि वर कर्म कर्तुमिच्छसि तर्हि एव अत्र तिष्ठ=अगर श्रेष्ठ कार्य करना चाहता है तो ही यहाँ रह ।
१०. नोचेद् यत्र इच्छसि तत्र द्रत गच्छ=नहीं तो जहाँ चाहता है वहाँ शीघ्र जा ।
११. अह निर्धन अस्मि पुस्तक पठितुमिच्छामि=मैं निर्धन हू पुस्तक पढ़ना चाहता हूँ ।
१२. स मचं गृहीत्वा अत्र एव आगच्छति=वह टेबल लेकर यहाँ ही आता है ।

 ❀ कर्तुं इच्छसि ।

(१) पठितु इच्छामि ।

शब्द

आलेख्य=तस्वीर	कस्य=किसका
सस्य=उसका	उपविश=बैठ
उपविशति=(वह) बैठता है	उपविशसि=(तू) बैठता है।
उपविशामि=बैठना हूँ	उपविश्य=बैठकर

वाक्य

१. पतञ्ज कस्य आलेख्यम् अस्ति=यह किस का चित्र है।
२. स पुरुषः श्रुतमपि न स्मरति=वह मनुष्य सुना हुआ भी नहीं स्मरण रखता।
३. एवं तस्य व्याख्यानं शृणोपि किम्=तू उसका व्याख्यान सुनता है क्या ?
४. अत्र एव उपविश व्याख्यानं च शृणु=यहाँ ही बैठ और व्याख्यान सुन।
५. स तत्र एव उपविश्य सर्वं पश्यति=यह वहाँ ही बैठकर सब कुछ देखता है।
६. कः अत्र उपविश्य आलेख्यं करोति=कौन यहाँ बैठकर तस्वीर खींचता है।
७. श्रीधरः अत्र स्थित्वा आलेख्यम् आलिखति=श्रीधर यहाँ ठहर कर चित्र खींचता है।
८. स षट्पदे पुनः पुनः वदति=वह कदा कदा ही फिर फिर बोलता है।
९. यदि त्वम् अत्र एव उपविशसि तर्हि अहं त्वां द्रव्यं दास्यामि=

अगर तू यहां बैठेगा तो मैं तुझे द्रव्य दूंगा ।

१०. रा किमर्थं सदा शिवालयं गच्छति=वह क्यों हमेशा मन्दिर जाता है ।

११. स तत्र गत्वा संध्यामुपास्ते, ईश्वरं च स्मरति=वह वहां जाकर संध्या करता है और ईश्वर का स्मरण करता है ।

१२. अहं गम रथम्, अत्र न स्थापयामि=मैं अपनी गाड़ी. यहाँ नहीं रखूंगा ।

१३. मम विष्टरः कुत्र अस्ति=मेरी कुर्सी कहां है ।

१४. यत्र ह्यः स्थापितः तत्र एव अस्ति=जहां कल रखी थी वहाँ ही है ।

ईकारान्त स्त्रीलिंग 'नदी' शब्दः ।

१ प्रथमा	नदी	नदी
२ द्वितीया	नदीम्	नदी को
३ तृतीया	नद्या	नदी ने
४ चतुर्थी	नद्यै	नदी के लिये
५ पञ्चमी	नद्याः	नदी से
६ षष्ठी	"	" का
७ सप्तमी	नद्याम्	नदी में

सम्बोधन (हे) नदि हे नदी

नदी शब्द के समान चलने वाले शब्द—

मातुलानी, मातुली=मामा की स्त्री

पितृभगिनी=पिताकी बहिन मातृभगिनी=माताकी बहिन

(१) सन्ध्यां उपास्ते ।

मातामही=माता की माता	भगिनी=बहिन
सर्वा=पृथ्वी	ब्राह्मणी=ब्राह्मण क स्त्री
पितामही=पिता की माता	कुंडलिनी=जलेबी
नीली=नीला रंग	कुमारी=लड़की
कमलिनी=कमल की बेल	

इन के सब विभक्तियों के रूप बनाकर पाठक उन से बद्धत वाक्य बना सकते हैं ।

सरल वाक्य

१ यज्ञदत्तात् देवदत्तः पुस्तकं गृह्णाति । २ सोमदत्तात् ब्राह्मणः धनं गृह्णाति । ३ प्र. ब्राह्मणः लडागात् रक्तं कमलं आनयति । ३ रामस्य रावणेन सह युद्धं भवति । रावणस्य रामेण सह युद्धं भवति । भीमस्य जरासंधेन सह युद्धं जातम् । जरासंधस्य भीमसेनेन सह युद्धं जातम् । ४ सत्र हरिः अरित । तं हरिं परय । हरिणा पुस्तकं लिखितम् । हरये नमः कुरु । हरेः लेखनीम् आनय । इदं हरेः गृहं अस्ति । हरी भक्तिं कुरु ।

पाठ २६

आक्रोशति=बिज्ञाता है	पुरी=नगर, शहर
गर्जति=बह गरजता है	गर्जसि=तू गरजता है
गर्जामि=गरजता हूं	कीटर्शा=कैसा
षादं=निश्चय से	सिंहः=शेर

१ भवति—होता है । २ जातं—हो गया । ३ हरेः—हरी से । ४ हरेः—हरी का ।

षलयं=गोल

अंगमं=आंगन

वपधि=स्टूल

घटिका=घड़ी

वृथा=व्यर्थ

शूकर=सूअर

तूष्णीं=चुपचाप

महिष=भैसा

वाक्य

१. वने सिंहः गर्जति, ग्रामे शूकरः गर्जति=घन में शेर गरजता है ग्राम में सूअर गरजता है ।
२. त्वं वृथा किमर्थं गर्जसि=तू व्यर्थ क्यों गरजता है ?
३. आकाशे मेघः अधुना गर्जति=आकाश में मेघ अब गरजता है ।
४. वने सिंहः साय प्रातः च गर्जति=बाग में शेर सायंकाल तथा प्रातःकाल गरजता है ।
५. यदि त्वं तत्र न गमिष्यसि तर्हि तत् कथं ज्ञास्यसि=अगर तू वहाँ न जायगा तो उसे कैसे जानेगा ।
६. त्वं इदानीमेव ओपघालयं गच्छ ओपधं च आनय=तू अभी पचाखाने को जा और पका ले आ ।
७. यदि त्वं मुद्गौदनं भक्षयिष्यसि तर्हि वरं भविष्यति=अगर तू खिचड़ी खायेगा तो अच्छा होगा ।
८. स अपूपं दुग्धं च भक्षयितुमिच्छति=वह पूडा और दूध खाना चाहता है ।
९. सिंहः कदापि अन्नं न भक्षयति=शेर कभी अन्न नहीं खाता है ।
१०. अहं इदानीमेव स्नात्वा शीघ्रमागमिष्यामि=मैं अभी स्नान कर के जल्दी आऊँगा ।

टिप्पणी—१ इदानीं एव । २ भक्षयितु इच्छति । ३ शीघ्रं आगमिष्यामि ।

११. शुद्धं घृतं वस्त्रं देहि=शुद्ध, घोया हुआ वस्त्र मुझे दे ।
 भोजनात्=भोजन से अभ्यन्तरे=अन्दर
 परिचारकः=नौकर नगरात्=शहर से
 ग्रामात्=गाँव से गृहात्=घर से
 कृपात्=कृपे से प्रायः=बहुधा

वाक्य

१. श्रुहि, एवं सन्ध्यां करोषि न वा=बोल, तू सवेरे सन्ध्या करता है या नहीं ?
२. वद. एवं तत् पुस्तकं पठसि वा=बतजा, तू वह पुस्तक पढ़ता है वा नहीं ?
३. यद् अहं स्वामाज्ञापयामि तत् कर्म शीघ्रं कुरु=जो मैं तुझे आज्ञा करता हूँ वह कार्य जल्दी कर
४. नोचेत् स्वाम् अधुना पय ताडयामि=नहीं तो तुझे अभी ताड़ना करूँगा ।
५. अहं भोजनात् पूर्वं क्विपि कर्म कर्तुं न इच्छामि=मैं भोजन के पूर्व कोई भी कार्य करना नहीं चाहता ।
६. हे परिचारक ! कपाटं दृष्ट्वा त्वं अहमभ्यन्तरे आगन्तुमिच्छामि=हे नौकर ! दरवाजा खोल मैं अन्दर आना चाहता हूँ ।
७. यद् अहं वदामि तत् एवं न शृणोषि किञ्चो मै बोधता हूँ वह तू नहीं सुनता है क्या ?
८. यदि त्वं वदसि तदा अहं तत्र भाषणं श्रोतुं शक्नोमि=अगर तू कैं.वा बोलेगा तो मैं तेरी बात सुन सकूँगा ।

- ६ स नगरात् नगरं गच्छति=वह (एक) शहर से (दूसरे) शहर को जाता है ।
- १० स मामाद् बहिः गत्वा बने गतः=वह गाँव से बाहर जाकर बने को गया ।
- ११ स मनुष्यः कूपात् जलमानयति=वह मनुष्य कूएँ -से जल लाता है ।
- १२ स इदानीमेव? गृहात् बहिर्गतः=वह अभी घर से बाहर गया है ।
- १३ स पुनः कदा गृहमागमिष्यति=वह फिर कब घर आयेगा ।
- १४ स प्रायः सायंकालमागमिष्यति? =वह प्रायः शाम को आयेगा ।
- १५ सुतः रक्षति=लड़का रक्षा करता है ।
- १६ कुमारी तिष्ठति=झड़की ठहरती है ।
- १७ अहम् अत्र लिखामि=मैं यहाँ लिखता हूँ ।
- १८ मातामही नीचेः स्वपिति=माता की माता नीचे सोती है ।
- १९ तस्य भ्राता वरं न लिखति=उसका भाई अच्छा नहीं ।
- २० कः त्वम्=कौन तू (है) ?
- २१ स कः अस्ति=वह कौन है ?
- २२ स दूरं तिष्ठति=वह दूर ठहरता है ।
- २३ तव उपानत कुत्र अस्ति=तेरा जूता कहाँ है ?
- २४ तस्य भ्राता शीघ्रं न आगमिष्यति=उसका भाई जल्दी नहीं आयेगा ।

ॐ जलं आनयति ।

? इदानीं घव ।

ॐ गृह आगमिष्यति ।

? काल आगमिष्यति ?

२५. एष कः अस्ति ?=यह कौन है ?

२६. तव भ्राता क अस्ति=तेरा भाई कहां है ।

२७. स किं लिखति=वह क्या लिखता है ।

सरल वाक्य

- (२) तस्मै कुंडलिनीं देहि । (२) तस्य सुतः दुग्धं पिबति ।
(३) तस्य भ्राता गृहं न गच्छति । (४) धनं दत्त्वा फलं गृहाण ।
(५) मित्राय पत्रं लिख । (६) तस्मै पुष्पं देहि । (७) यदा त्वं
स्वपिपि तदा तव भ्राता कुत्र भवति । (८) स वनं गत्वा फलं
भक्षयति । (९) यदा स वनं गतः तदा अहं न गतः । (१०) स
मां न ताडयति । (१२) स तं एव किमर्थं ताडयति । (१२) त्वं
तस्य पुस्तकं गृहीत्वा शीघ्रम् अप्र आगच्छ । (१३) स त्वां न
जानाति किम् ? (१४) तस्य पुत्रः पुस्तकं चोरयति । (१५) कः
त्वाम् अद्य भोजनं दास्यति ।

पाठ २७

अटति=वह घूमता है

अटामि=घूमता हूँ

अटितु=घूमने के लिये

अटिष्यसि=(तू) घूमेगा

पक्कं=पका हुआ

अटसि=तू घूमता है

अटित्वा=घूम कर

अटिष्यति=(वह) घूमेगा

अटिष्यामि=घूमूँगा

पठितं=पढ़ा हुआ

शब्द

१. कृष्णचन्द्रः नित्यं ग्रामाद् ग्रामं अटति=कृष्णचन्द्र नित्य
(पक) गाँव से । दूसरे] गाँव को घूमता है ।

२. तं कुमारं पश्य किं स करोति इति=उस लड़के को देख वह
क्या करता है ?

३ स भोजनाय पकळि म न पानाय जल च इच्छति=वह भोजन के लिये पका हुआ अन्न और पाने के लिये जल चाहता है।

४. स पठितमपि पाठ न स्मरति=वह पढ़े हुए पाठ को भी नहीं स्मरण करता।

५ स द्रव्य दत्त्वा धान्य क्रीणाति=वह द्रव्य देकर धान खरीदता है।

६ स रात्रौ किमपि न भक्षयति=वह रात्रि में कुछ भी नहीं खाता।

७ सूर्य दृष्ट्वा जन उत्तिष्ठति=सूर्य को देखकर मनुष्य उठता है।

८ तथा तारका दृष्ट्वा मनुष्य स्वपिति=वैसा ही सितारे देख कर मनुष्य सोता है।

९ स सर्वदा घृया अदितुमिच्छति=वह हमेशा व्यर्थ घूमना चाहता है।

१०. स इदानीं किं करोति इति अहं ज्ञातुमिच्छामि=वह अब क्या करता है यह मैं जानना चाहता हूँ।

११. शीघ्रं रथमानयत् अहं अन्यं नगरगतुमिच्छामि=जल्दी गाड़ी ले आ मैं दूसरे गाँव को जाना चाहता हूँ।

१२ इदानीं मेघ गर्जति अत यदि न गच्छ=अब मेघ गरजता है, इस कारण बाहर न जा।

शब्द

महू =पालक

पीडयति=वह दुःख देता है

पीडयति=दुःख देता है

पीडयामि=दुःख देता हूँ

ऊर्ध्वं=ऊपर, पश्चाद्

उपरि=ऊपर

ः पक अन्न। † अदितु इच्छामि। ‡ ज्ञातु इच्छामि।

? रथ मानय। † गतु इच्छामि।

यति=सन्यासी

वृत्तस्य=वृत्त के

प्रतीयते=मंजूम होता है

पट्ट=पट्ट

श्रात=यकृद्दिश

तड=तुड

वाक्य

१. पश्य स बालः कथं शीघ्रं शीघ्रं घावसि=देख 'वह' बालक
कैसा जल्दी जल्दी दौड़ता है ।
२. भो मित्र इदानीं मां बुभुक्षा अतीव पीडयति=हे मित्र ! अब
मुझे भूख बहुत दुःख देती है ।
३. त्वं महा पद्मम् अत्र दातुं शक्नोसि किम्=तू मुझे पद्म हुआ
अत्र दे सकता है क्या ?
४. भोजनं तु उच्यते त्वं शीतं जलमपि पातुमिच्छसि किं=
भोजन के पश्चात् ठण्डा जल भी पीना चाहता
है क्या ?
५. यदि त्वं शीतं जलमपि आनेतुं शक्नोसि तर्हि शीघ्रं आनय=
अगर तू ठण्डा जल भी ला सकता है तो जल्दी
ले आ ।
६. यद् त्वं इच्छसि तद् अहमानेव्यामि=जो तू चाहता है वह
मैं लाऊँगा ।
७. एतद् अत्र अतीव उष्णम् अस्ति=यह अत्र बहुत गरम है ।
८. मम भ्राता इदानीं कुत्र गतः न जानामि=मेरा भाई अब कहाँ
गया है मैं नहीं जानता ।
९. स उद्यमे वृत्तस्य अथ इदानीं हरपिति=वह वह बाग में वृत्त
के नीचे अब सोता है ।

१०. स बहु कर्म कृत्वा श्रान्तः इति प्रतीयते=वह बहुत कार्य करके थका है ऐसा मालूम होता है।
११. स तत्र तूष्णीमेव स्थितः किमपि न वदति=वह वहाँ चुपचाप बैठा है कुछ भी नहीं बोलता।
१२. स स्वपाठं स्मरति इति प्रतीयते=वह अपना पाठ स्मरण करता है ऐसा मालूम होता है।
१३. स स्वगृहमिदानीं रक्षति अतः बहिः गन्तुं न शक्नोति=वह अब अपने घर की रक्षा करता है इसलिये बाहर जा नहीं सकता।

उकारान्त स्त्रीलिङ्ग 'धेनु' शब्द

१. प्रथमा	धेनुः	गौ
२. द्वितीया	धेनुँ	गौ को
३. तृतीया	धेनुना	गौ ने
४. चतुर्थी	धेनुवे धेनुवै	गौ के लिये
५. पञ्चमी	धेनोः धेनुनाः	गौ से
६. षष्ठी	धेनोः धेनुवाः	गौ का
७. सप्तमी	धेनौ धेनुवाम्	गौ में
सं०	(हे) धेनो	हे गौ

चतुर्थी से सप्तमी पर्यन्त चारों विभक्तियों में संकल्पन के रूप दो दो होते हैं यह बात ध्यान में अवश्य रखनी चाहिये।

रज्जु=रस्सा

धनु=दृष्टी

तनु=शरीर

वाक्य

१. मातृदेवो भव=माता को देवता समझ ।
२. पितृदेवो भव=पिता को देवता समझ ।
३. आचार्यदेवो भव=गुरु को देवता समझ ।
४. अतिथिदेवो भव=अतिथि को देवता मान ।
५. सत्यं श्रूयत्=सच बोल ।
६. प्रियं श्रूयात्=प्रिय बोल ।
७. सत्यं अप्रियं न श्रूयात्=अप्रिय सत्य न बोल ।
८. प्रियं असत्यं न श्रूयात्=प्रिय असत्य न बोल ।
९. सत्यात् परः धर्मः नास्ति=सत्य से परे दूसरा धर्म नहीं ।
१०. असत्यसमः न कः अपि अधर्म=असत्य के समान नहीं कोई भी अधर्म ।
११. इह पृथि=पृथि आ ।
१२. श्वः विसृष्टिः अस्ति=कल छुट्टी है ।
१३. शास्त्रेण विना मनुष्यः अन्धः=शास्त्र के विना मनुष्य अन्धा (है) ।

सरल वाक्य । संवादः ।

रामः—हे मित्र ! त्वं पुत्र गच्छसि इदानीम् ?

विष्णुः—इदानीमहं भ्रमणार्थं गच्छामि ।

रामः—कः समयः इदानीम् ।

वि०—इदानीं सप्तवादन-समयः ।

रामः—इदानीं भ्रमणाय यदि गत्वा पुनः कदा स्वगृहमागतमिष्यसि

वि०—अहमवश्यमष्ट वादनसमये स्वगृहमागमिष्यामि ।

रा०—तर्हि अहमपि त्वया सह आगच्छामि ।

वि०—आगच्छ तर्हि शीघ्रम् । समय गच्छति ।

राम०—शीघ्रमागत । क्षुण्णं तिष्ठ ।

पाठ २८

“स्मर” के पूर्व “वि” लगाने से “विस्मर” रूप बनता है और उसका अर्थ ‘भूलना’ ऐसा होता है, देखिये —

स्मरति=स्मरण करता है

स्मरसि=स्मरण करता है

स्मरामि=स्मरण करता हूँ

स्मरिष्यति=स्मरण करेगा

स्मरिष्यसि=तू स्मरण करेगा

स्मरिष्यामि=स्मरण करूँगा

त्वया=तूने

मया=मैंने

। तेन=उसने

विस्मरसि=वह भूलता है

विस्मरसि=तू भूलता है

विस्मरामि=भूलता हूँ

विस्मरिष्यति=भूलेगा

विस्मरिष्यसि=तू भूलेगा

विस्मरिष्यामि=भूलूँगा

घ लफेन=लड़के ने

। पुरुषेण=मनुष्य ने

पुत्रेण=पुत्र ने

वाक्य

१ यत् त्व पठसि तत् सर्वदा स्मरसि न वा=जो तू पढ़ता है उसे सदा स्मरण करता है वा नहीं ।

२ यद् अहं पठामि तद् कदापि न विस्मरामि=जो मैं पढ़ता हूँ वह कभी नहीं भूलता ।

३ यदित्त्वपद्यविस्मरिष्यसि तर्हि कथ पठिष्यति=अगर तू इस

प्रकार भूलेगा तो कैसे पढ़ेगा ।

४. अहं अतः ऊर्ध्वं न विस्मरिष्यामि=मैं इसके पश्चात् नहीं भूलूँगा ।

५. यथा तव गुरुः आज्ञापयति तथा कुरु=जैसा तेरा गुरु आज्ञा करता है वैसा कर ।

६. स मां घृणा पीडयति=वह मुझे व्यर्थ दुःख देता है ।

७. अतः अहं तं अवश्यं ताडयिष्यामि=इसलिए मैं उसको अवश्य पीटूँगा ।

८. स महिषः कस्य अस्ति=वह भैंसा किसका है ?

९. स महिषः नास्ति घृणभः अस्ति=वह भैंसा नहीं है, बैल है ।

शब्द

गर्तं=गया	आगर्तं=आ गया
भक्षितं=खाया	दत्तं=दिया
स्वीकृतं=स्वीकार किया	वक्तं=बहा
नीतं=लिया	आनीतं=लाया
कृतं=किया	पीतं=पिया
ज्ञातं=ज्ञान किया	दृष्टं=संज्ञित
जातं=उत्पन्न हुआ	उत्थितं=उठा हुआ
स्थितं=ठहरा हुआ	ताडितं=ताडना किया हुआ
गृहीतं=लिया	आशापितं=आशा की
स्मृतं=स्मरण किया	विस्मृतं=भूला
श्रुतं=सुना	दृष्टं=देखा
पठितं=पढ़ा	उदात्तं=उठीला
विहितं=बन्ध किया	लिखितं=लिखा

ज्ञातं = जाना	विज्ञातं = जाना
प्रक्षालितं = धोया	क्रीडीत = खेला
रक्षित = रक्षा की	आरब्ध = आरम्भ किया
क्रोतं = खरीदा	विक्रीत = बेचा
अटित = घूमा	कथित = कहा

वाक्य

१. त्वया फलं नीत किं = क्या तू ने फल लिया ?
२. मया तत् अद्यापि न दृष्टम् = मैंने वह अब तक नहीं देखा ।
३. बालकेन वस्त्रं प्रक्षालितं = बालक ने कपड़ा धोया ।
४. मया शोभनं कर्म आरब्धम् = मैंने श्रेष्ठ कार्य आरम्भ किया ।
५. त्वया तत् कथं विस्मृतं = तूने वह कैसे भुला दिया ।

शुद्धकारान्तः स्त्रीलिंग 'मातृ' शब्दः

१. प्रथमा	माता	माता
२. द्वितीया	मातर	माता-की
३. तृतीया	मात्रा	माता ने
४. चतुर्थी	मात्रे	माता के लिये
५. पंचमी	मातुः	माता से
६. षष्ठी	"	" का
७. सप्तमी	मातरि	माता में
सम्बोधन	(हे) मातृ	(हे) माता

माता शब्द के समान चलने वाले शब्दः—

दुहितृ = लड़की

यातृ = चलने वाली

ननान्त = ननद, पति की बहिन

ननट = ननद, पति की बहिन

ॐ अथ अपि ।

वाक्य

१. सर्वदा उद्यमः कर्तव्यः=सदा उद्योग करना चाहिए ।
२. उद्यमेन एव सुखं भवति=उद्योग से ही सुख होता है ।
३. भुक्त्वा मदरीफलं भक्षणीयम्=भोजन करके बेर खाना चाहिए ।
४. अभुक्त्वा आमलकः पथ्यः=भोजन न करके आंवला हितकर (है)
५. त्वं बालकेन सह क्रीडसि=तू लड़के के साथ खेलता है ।
६. अहं तु न क्रीडामि=मैं तो नहीं खेलता ।
७. स तव किमर्थं क्रोधाहलं करोति ?=वह वहां क्यों शोर करता है ?
८. यदि अहं क्रीडामि तर्हि गुरुः मां ताडयिष्यति=अगर मैं खेलूँगा तो गुरु मुझे मारेगा ।
९. तव मातुः किं नाम अस्ति=तेरी माता का क्या नाम है ।
१०. तस्य पितुः नामः यज्ञदत्तशर्मा इति=उसके पिता का नाम यज्ञदत्तशर्मा ऐसा (है) ।
११. दुग्धं पीत्वा फलं भक्षयामि=दूध पीकर फल खाऊँगा ।
१२. अरतः शीघ्रं धावति=घोड़ा जल्दी दौड़ता है ।

सरल वाक्य

(१) किमर्थं त्वं तत्र गत्वा क्रीडकं भक्षयति । (२) मया मत्तं कर्म न कृतम् । (३) दुर्जनः अन्यस्मै दुःखं ददाति । (४) सुजनः अन्यस्मै सुखं ददाति । (५) आद्यशो वदति पश्य । (६) पाठशाला सदा नियमेन गंतव्यम् । (७) मित्रेण सह कलहः न कर्तव्यः । (८) यदा गुरुः पाठं कथयति तदा तत्र चित्तं देयम् । (९) इत्यस्ततः न द्रष्टव्यम् । (१०) सहाकर्तुं दुग्धं पेयम् ।

तत्=यह

कर्म=उद्योग

अन्यस्मै=दूसरे के लिये

कलहः=मगड़ा

देयं=देने योग्य	द्रष्टव्यं=देखने योग्य
पेयं=पीने योग्य	दुर्जनं=दुष्ट मनुष्य
सुजनः=सज्जन	नियमः=नियम
चित्तं=मन, दिल	इतस्ततः=इधर उधर
सशर्करं=खाड के साथ	बदरीफल=बेर

सरल वाक्य

१ स यत् पठति तत् कदाऽपि न विस्मरति । २ अहं यत् शृणोमि तत् कदापि न विस्मरामि । ३ यथा गुरुः मां आज्ञापयति तथैव अहं करोमि । ४ त्वं बालकेन सह-किमर्थं मीडसि इदानीम् । ५ तं पुरुषं त्वं पश्यसि किम् ? ६ यदा यदा प्रकाशः न भवति तदा तदा दीपं प्रज्वालयेत् ।

पाठ २६

१. इदानीं त्वया किं कृतं=अब तूने क्या किया ?
२. गृहं गत्वा अधुना मया अन्नं भक्षितं=घर जाकर अब मैंने अन्न खाया ।
३. तस्य पुस्तकं त्वया नीतं किं=उसका पुस्तक तूने लिया क्या ?
४. तेन तन् वरं अद्यापि न कृतम्=उसने वह अच्छा काम अब तक नहीं किया ।
५. तत् सर्वं शोभनं जातं=वह सब ठीक हुआ ।
६. यत् त्वया पुस्तकं गृहीतं तत् मम अस्ति=जो तूने पुस्तक लिया वह मेरी है ।
७. यत् त्वया आज्ञां पितृ तत् मया न श्रुतम्=जो तूने आज्ञा की

१ सुनता हूँ । २ वैसा ही । ३ जलामो ।

वह मैंने नहीं सुनी ।

८. किं त्वया न स्मृतं यत् तेन उक्तम्=क्या तुझे स्मरण नहीं जो उसने कहा था ।

९. यत् तेन उक्तं तत् सर्वं मया पूर्वं एव विस्मृतम्=जो उसने कहा यह सब मैंने पहिले ही भुना दिया ।

१०. यत् त्वया तत्र दृष्टं तत् सर्वं कथय=जो तूने वहाँ देखा वह सब कह ।

११. यदि त्वया तद् ज्ञातं तत् मामपि वद=अगर तूने उसे जान लिया तो मुझे भी कह ।

१२. यदि त्वया स्वर्गहं रक्षितं तदि वरं कृतं=अगर तूने अपने मकान की रक्षा की तो अच्छा किया ।

१३. यदि त्वया अद्यापि वस्त्रं न विक्रीतम्=अगर तूने अब तक कपड़ा नहीं बेचा ।

१४. तदि तद् मया देहि=तो उसे मुझे दे ।

१५. यदि त्वया इदानीं पर्यंत द्वारं न शूद्रादितं=अगर तूने अब तक दरवाजा नहीं खोला ।

१६. तत् केन उदूषादितं तत् शीघ्रं कथय=तो किसने उसे खोला यह शीघ्र कह ।

१७. तद् अहं न जानामि=वह मैं नहीं जानती ।

१८. त्वया जलं पीतं किम्=तूने जल पिया क्या ?

शब्द

ज्ञानिः=शिथिलता

रत्नम्=निश्चय से

सत्यात्=सत्य से

अभ्युत्थानं=उदाई

मूलं=मूल

परः=प्रेष, दूसरा, भिन्न

प्रतिष्ठित=स्थित है

पिटक =डबलरोटी

वाक्य

१. यदा यदा धर्मस्य रजानिः भवति=जब जब धर्म की शिथिलता होती है ।
२. तदा तदा अधर्मस्य अभ्युत्थानं भवति=तब तब अधर्म की चढ़ाई होती है ।
३. सत्यात् परः धर्मः नास्ति=सत्य से श्रेष्ठ दूसरा धर्म नहीं ।
४. असत्यात् परः अधर्मं न कः अपि अस्ति=असत्य से भिन्न अधर्म कोई भी नहीं है ।
५. त्वं सत्यं वदसि इति वर करोषि=तू सत्य बोलता है । यह ठीक करता है ।
६. कदापि असत्य न वद=कभी असत्य न बोल ।
७. सर्वं खलु धर्ममूलं सत्ये प्रतिष्ठितं=सब धर्म का मूल सत्य में स्थित है ।
८. यः सत्यं न वदति स असत्यवादी भवति=जो सत्य नहीं बोलता है वह असत्यवादी होता है ।
९. असत्यात् दारिद्र्यं वर अस्ति=असत्य से गरीबी अच्छी है ।
१०. त्व सर्वदा असत्य किमर्थं वदसि=तू सर्वदा असत्य क्यों बोलता है ?
११. मया कदापि असत्य न उक्तं=मैंने कभी असत्य नहीं कहा ।
१२. यत् द्रव्यं मया रक्षितं तत् सर्वं त्वया त्यक्तं=जो द्रव्य मैंने रखा था वह सब तूने छोड़ दिया ।
१३. पुनः पुनः श्रुतम् अपि लिखितुं न शक्नोमि=फिर फिर सुना हुआ भी (मैं) लिख नहीं सकता ।

१४. यत् जलं स्वया आनीतं तत् शुद्धं नास्ति=जो जल तू ने लाया है वह शुद्ध नहीं ।

१५. मया कृपात् जलम् आनीतम् अस्ति, अतः तत् शुद्धम् एव अस्ति=मैं कुँवे से जल लाया हूँ, इस लिये वह शुद्ध ही है ।

दकारान्तः स्त्रीलिङ्ग 'तत्' शब्द

१. प्रथमा	सा	वह	[स्त्री]
२. द्वितीया	सां	उसकी	[,]
३. तृतीया	तया	उसने	[,]
४. चतुर्थी	तस्यै	उसके लिये	[,]
५. पञ्चमी	तस्याः	उससे	[,]
६. षष्ठी	"	उसका	[,]
७. सप्तमी	तस्यां	उस में	[,]

तद् शब्द के पुलिङ्ग रूप पाठ २२ पृष्ठ ११७ पर दिये हुए हैं । पाठकों की चाहिये कि वे पुलिङ्ग रूपों में जो भिन्नता है उसकी ठीक प्रकार ध्यान में रखें । पुलिङ्ग शब्द के बदले पुलिङ्ग रूप आयेंगे और स्त्रीलिङ्ग रूप आयेंगे ये नियम हैं । निचले वाक्य ध्यान से देखने से इस नियम का पूरा पता लग जायगा :—

वाक्य

१. यः पुरुषः माम् दू आगतः स इदानीं अत्र नास्ति=जो पुरुष गाँव से आया वह अब यहाँ नहीं ।
२. या बालिहा नगरं गता सा कस्य पुत्री ?=जो लड़की शहर गई वह किसकी पुत्री ?
३. तं पुत्रं तस्मिन् स्थाने पर्य=उस पुत्र को उस स्थान में देय ।
४. तां पुत्रीं तस्मिन् स्थाने पर्य=उस लड़की को उस स्थान में देय ।

४. अत्र तेन शोभनं व्याख्यानं दत्तम्=यहां उस ने अच्छा व्याख्यान दिया ।
५. स वरं व्याख्यानं ददाति=वह अच्छा व्याख्यान देता है ।
६. एवम् अत्र न कः अपि वक्तुं शक्नोति=इस प्रकार यहां कोई भी नहीं बोल सकता ।
७. स संस्कृतभाषायाम् प्रवीणः अस्ति=वह संस्कृत भाषा में प्रवीण है ।
८. यथा स्वामी सर्वदानन्दः प्रवीणः अस्ति=जैसा स्वामी सर्वदानन्द प्रवीण है ।
९. न तथापंडितः विश्वामित्र शर्मा=नहीं वैसा पं० विश्वामित्र शर्मा
१०. त्वया तस्य व्याख्यानं श्रुतं किम्=क्या तूने उसका व्याख्यान सुना ?
११. कदा स पुनः स्वनरं गमिष्यति=कब वह फिर अपने गांव को जायगा ।
१२. स इदानीं नैव गमिष्यति=वह अब नहीं जायगा ।
१३. अत्र स्थित्वा स किं कर्तुमिच्छति=यहां ठहर कर वह क्या करना चाहता है ।
१४. अत्र स्थित्वा स धर्मप्रचारं करिष्यति=यहाँ ठहर कर वह धर्म का प्रचार करेगा ।
१५. यदि स अत्र स्थास्यति तर्हि वरं भविष्यति=अगर वह यहां रहेगा तो अच्छा होगा ।

दकारान्तः स्त्रीलिङ्ग 'यद्' शब्दः

१ प्रथमा	या	जो	स्त्री
----------	----	----	--------

(१) कर्तुं इच्छति ।

२ द्वितीया	यां	जिस को	स्त्री
३ तृतीया	यया	जिस ने	"
४ चतुर्थ	यस्यै	जिस के लिये,	"
५ पञ्चमी	यस्याः	जिस से	"
६ षष्ठी	"	जिसका	"
७ सप्तमी	यस्यां	जिस में	"

स्त्रीलिङ्गः 'किम्' शब्दः

प्रथमा	का	कौन	(स्त्री)
२ द्वितीया	कां	किस को	"
३ तृतीया	कया	किस ने	"
४ चतुर्थी	कस्यै	किस के लिये	"
५ पञ्चमी	कस्याः	किस में	"
६ षष्ठी	"	किस का	"
७ सप्तमी	कस्यां	किस में	"

वाक्य

१. का पुत्रिका पुस्तकं पठति=कौन सी लड़की पुस्तक पढ़ती है
२. या बालिका पाठशालां गच्छति सा एव पठितुं शक्नोति=जो लड़की पाठशाला को जाती है वह ही पढ़ सकती है।
३. यया पुस्तकं पठितं तस्यै धनं वस्त्रं च देहि=किस (स्त्री) ने पुस्तक पढ़ा है उसके लिये धन और कपड़ा दे।
४. यस्याः कृते त्वं तत्र गतः, सा न आगता किम्=जिसके कारण तू वहाँ गया, वह नहीं आई क्या ?
५. यस्यां पाठशालायां मम पुत्रः पठति, तव अपि तस्यां

५. तव धर्मपत्नी अत्र अस्ति किं । यदि अस्ति तर्हि तया किं
इदानीं कर्तव्यम्=तेरी धर्मपत्नी यहाँ है क्या ? अगर है तो उसने
क्या अब करना है ।

६. तस्मै जल देहि=उसके लिये जल दे ।

७. तस्याः वस्त्रे कुत्र अस्ति=उसका कपड़ा कहाँ है ?

८. तां पाठशालां पश्य तस्यां मम पुत्रः पठति=उस पाठशाला की
देख उसमें मेरा लड़का पढ़ता है ।

९. यत्र त्वं गच्छसि तत्र स न गच्छति किम् ?=जहाँ तू जाता है
वहाँ वहाँ नहीं जाता क्या ?

पाठ ३०

गजः=हाथी

लवपुरं=लाहौर

विद्यालयं=पाठशाला की

शब्दः=शब्द

प्रयत्नः=उद्योग

प्रकाशः=प्रकाश

घण्टानादः=घण्टे की आवाज

प्रथमः=पहिला

सर्वं=सारा

नैव=नहीं

ब्रह्मचारी=ब्रह्मचारी

उच्यते=कहा है, निकलता है

अधिकारः=अधिकार

अंधकारः=अंधेरा

एकः=एक

द्वितीयः=दूसरा

वाक्य

१. पुस्तकं लेखनीं मसीपात्रं च मह्यं देहि=पुस्तक, कलम और
दवात मुझे दे ।

२. कोलाहलं न कुर्व इति हरिदत्तं कथय=कोलाहल न कर ऐसा
हरिदत्त को कह ।

३. यत्र भूमिप्रः अस्ति तत्र त्वं शीघ्रं गच्छ=जहाँ भूमिप्र है

एव पठति=जिस पाठशाला में मेरा लड़का पढ़ता है तो भी वहाँ ही पढ़ता है ।

६. तस्या देवताया भक्तिं धारय=उस देवता में भक्ति धारण कर ।

७. पठनस्य काले तस्या' शब्द महान् भवति=पढ़ने के समय उस (स्त्री) का शब्द बड़ा होता है

परीक्षा

अब तीस पाठ हो चुके हैं । अब आज पाठकों की परीक्षा होनी है । अगर पाठक सब प्रश्नों के ठीक ठीक उत्तर दे सकेंगे तो वे आगे बढ़ सकते हैं । अन्यथा उनको चाहिए कि वे पूर्व के तीस पाठ प्रारम्भ से दुबारा पढ़ें और सब को ठीक ठीक स्मरण करें । जब तक विद्यज्ञा स्मरण न होगा तब तक आगे बढ़ने से कोई लाभ नहीं होगा ।

परीक्षा के प्रश्न ।

(१) निम्न शब्दों के सातों विभक्तियों के एकवचन के रूप दीजिये —
पुल्लिगी शब्द ।

मार्ग । देव । भाग । घनगयः । कवि । अरि । भानुः ।
पितृ । भ्रातृ । सर्व ।

स्त्रीलिङ्गी शब्द ।

-सपासना । दया । मातृ । विद्या । जिहा । नासिका । किम्
यद् । धेनु । नदी ।

(२) निम्न शब्दों के पंचम, छठीया, चतुर्थी तथा पञ्चमी के एकवचन के रूप लिखिये :—

राम । देवता । विष्णु । कर्तृ । अस्मत् ।

(३) निम्न वाक्यों का भाषा में अर्थ लिखिये :—

स त्वां न जानाति किम् ? यदा स आगत तदा एव त्वं गतः ।
दशरथस्य पुत्रः श्रीरामचन्द्रः अस्ति । विश्वामित्रेण सह रामचन्द्रः
यनं गतः । तत्र का अथ वृत्तिं भक्षयति । सा बाला वस्मिन् गृहे
न पठति ।

(४) निम्न वाक्यों के उत्तर संस्कृत में ही दीजिये ।

तव किं नाम अस्ति ? इदानीं त्वं किं पठति ? श्रीकृष्णचन्द्रः
कस्य पुत्रः आसीत् ? श्रीरामचन्द्रेण केन सह युद्धं कृतं ? धर्मेण
किं भवति ?

(५) निम्न भाषा के वाक्यों के संस्कृत वाक्य बनाइये :—

मैं मदरसे को जाता हूँ । वह मुझे देखता है । राजा ने उसके
लिये धन दिया । सूर्य आकाश में आया । प्रातःकाल में सन्ध्या
कर । सवेरे उठ और स्नान कर ।

(६) आप कोई एक कथा संस्कृत में ही लिखने का यत्न कीजिये ।

(७) निम्न शब्दों के अर्थ कीजिये :—

उत्तिष्ठ । व्यायामः । पंचवादनसमयः । नागः । याचनः ।
मैत्रिकः । रविः । कीलाहलः । स्वपिम्बि । युवा । कुशलः ।
शुभं । जाया ।

पाठ ३१

हे मुविदा पाठको ! इस समय तक आपने ३० पठ स्मरण
किये हैं और व्याकरण के नियमों का विरोध शान न होते हुए भी
आपने व्यापहारिक घातघीत संस्कृत भाषा में करने की कुछ योग्यता
प्राप्त की है ।

अब इसके पश्चात् थोड़ा थोड़ा व्याकरण का परिचय आप को
करने की आवश्यकता है, व्याकरण के जानने के लिये प्रथम संस्कृत
कण्ठों की घनायत पर तथा शब्दों की घटना पर एक दृष्टि डालनी

चाहिये अन्यथा व्याकरण के नियम ठीक ठीक ध्यान में नहीं आ सकते ।

व्यञ्जन और स्वर मिलकर संस्कृत के तथा भाषा के अक्षर बनते हैं जैसा देखिये :—

क+अ=मिलकर क बनता है ।

म+अ= ,, म बनता है

ल+अ= ,, ल ,, ,,

अर्थात् "कमल" शब्द की बनावट "क+अ+म+अ+ल+अ" इतने वर्णों से हुई है, इसी प्रकार :—

(र्+आ)+(म्+अ)=मिलकर "राम" शब्द बनता है ।

(प्+इ)+(त्+आ)=मिलकर "पिता" शब्द बनता है ।

(ष)+(द्+य्+आ)+(न्+अ+म्)=मिलकर "अज्ञान" शब्द बनता है ।

(ई)+(श्+य्+अ)+(र्+अ.)=मिलकर "ईश्वरः" शब्द बनता है ।

(प्+उ)+(स्+त्+अ)+(क्+अ+म्)=मिलकर "पुस्तक" शब्द बना है ।

(य्+अ+ + त्)=मिलकर "यत्" शब्द बना है ।

(द्+उ)+(घ्+अ.)=मिलकर "देव." शब्द बना है ।

पाठकों को बचित है कि वे इस अक्षर घटना तथा शब्द घटना को स्मरण में रखें । संस्कृत के अक्षर तथा शब्द जैसे लिखे जाते हैं, वैसे ही बोले जाते हैं, और जैसे बोले जाते हैं वैसे ही लिखे जाते हैं, उर्दू अंग्रेजी के समान "लिखना कुछ और बोलना कुछ" वाली बात यहाँ नहीं है, इसलिये संस्कृत की शब्द घटना (Spelling स्पेलिंग—हिजे) उर्दू अंग्रेजी की अपेक्षा सुगम है ।

संस्कृत में व्यञ्जन और स्वर आगने सामने आते ही जुड़

जाते हैं, जैसे देखिये :—

सं अपि=तमपि (तम्+अपि)

त्वं भागच्छ=त्वमागच्छ (त्वम्+भागच्छ)

यत् अस्ति=तदस्ति (यद्+अस्ति)

यत् अस्ति=यदस्ति (यद्+अस्ति)

इस प्रकार जोड़ हम आगे के पाठ में लिखेंगे इसलिये पाठकों को उचित है कि वे इस जोड़ की व्यवस्था को ध्यान में रखें, जहां जहां जोड़ आवेगा वहां वहां पृष्ठ के नीचे टिप्पणी देकर उस शब्द को खोलकर भी बतायेंगे। अस्तु। जोड़ के विषय में इतना ही पर्याप्त है।

अब कुछ वाक्य दिये हैं उनकी ओर पाठकों को ध्यान देना चाहिये, इन वाक्यों के अन्दर उक्त प्रकार के जोड़ दिये हैं:—

वाक्य

१. यदस्ति तत्र तदत्र त्वमानय=जो है वहाँ, वह यहाँ तू ले आ।
२. रामः शीघ्रमागच्छति=राम जल्दी आता है।
३. त्वमधुना पुस्तकं देहि=तू अब पुस्तक दे।
४. तदधुना तत्र नास्ति=वह अब वहाँ नहीं है।
५. स कदापि नैव असत्यं वदति=वह कभी असत्य नहीं बोलता।
६. स पुत्रमानयति=वह फूल लाता है।

(१) यद्+अस्ति। (२) तद्+अत्र। (३) त्वम्+आनय। (४) शीघ्रम्+आगच्छ। (५) त्वम्+अधुना। (६) तद्+अधुना। (७) न+अस्ति। (८) वदा+अपि। (९) न+इव। (१०) पुस्तक+आनय।

५. त्वं कस्मिन् धनं ददासि	त्वं कस्यै धनं ददासि
६. यस्मै त्वं इच्छसि	यस्यै त्वं इच्छसि
७. येन मनुष्येण जलं पीतम्	यया पुत्रिकया जलं पीतम्
८. तस्मै देहि	तस्यै देहि
९. यः गच्छति	या गच्छति
१०. कः पर्वं वदति	का पर्वं वदति
११. सः वदति	सा वदति
१२. केन न पठितम्	कया न पठितम्
१३. कस्य गृहम् अस्ति	कस्याः गृहम् अस्ति

संस्कृत में पत्र लेखन

ॐ

अलमोड़ा नगरे
चैत्रस्य शुक्ल-पञ्चाय मू
रविवासरे सं० १६३५.

मो प्रियमित्र कृष्णवर्मन्

नमस्ते ! तव पत्रं अद्य एव लब्धम् । आनन्दः जातः । अहं तव
नगरं शीघ्रं न आगमिष्यामि । अत्र मम बहु कर्तव्यम् अस्ति ।
अहं श्वः हिम-पर्यटनं गच्छामि । तस्य स्थानस्य नाम त्वं जानासि
एव । तस्य पर्यटन-शिखरस्य नाम धवलगिरिः इति अस्ति । तस्य
दृश्यं अतीव सुन्दरम् अस्ति । यदि त्वं अत्र आगमिष्यसि तर्हि वरं
भविष्यति । यदि त्वं आगन्तुम् इच्छसि तर्हि वरं भविष्यति । यदि
एव आगन्तुम् इच्छसि तर्हि मम मातरम् अपि त्वया सह आनय ।

सर्वं अत्र सुखम् अस्ति । तव संदेशं पुनः इच्छामि ।

तव मित्रम्

सीत.रामः

भो=हे	नमस्ते=तुम को नमस्कार
लब्ध=प्राप्त	आनन्दः=खुशी
घर=अच्छा	बहु=बहुत
हिम=बर्फ	पर्वत =पहाड़
शिखर=(पहाड़ की)	चोटी दृश्य=सीन
कुशल=स्वास्थ्य	तपस्या=तप

सरल वाक्य

तत्र पुत्रिका कुत्र अस्ति । सा मात्रा सह हरिद्वार नगर गता । कदा सा पुन स्वगृहमागमिष्यति । यदा तस्या माता आगमिष्यति तदा एव तथा सह सा अपि आगमिष्यति । सा तत्र किं करोति । हवीकेशनानामके तीर्थस्थाने सा तपस्या करोति । कथं पुत्रिका तपस्या करोति । तत्र कन्या गुरुकुलम् अस्ति । तत्र सा अध्ययनं कर्तुम् इच्छति । तर्हि एव कथय । किमथम् असत्यं वदसि सा तत्र तपस्यां करोति इति ।

पाठ ३२

शब्द के अन्त में जो नुक्ता अर्थात् अनुस्वार होता है उस का "म्" घनता है, और उसके सामने जो स्वर आता है उसके साथ वह मिल जाता है, और कोई स्वर न आए तो "म्" ही रहता है जैसे —

देव—देवम्	} इस प्रकार अनुस्वार का "म्" घनता है ।
इदानी—इदानीम्	
त्व—त्वम्	

वाक्य

१ देव तत्र गच्छति=देव (विद्वान्) यहा जाता है ।

२. सं देवं पश्य=उस देव को देख ।
 ३. देवेन ज्ञानं दत्तम्=देव ने (विद्वान् ने) ज्ञान दिया ।
 ४. देवाय जलं देहि=देव के लिये जल दे ।
 ५. देवात् द्रव्यं गृह्णामि=देव से द्रव्य लेता हूँ ।
 ६. देवस्य पतेत् सर्वम् अस्ति=देव का यह सब है ।
 ७. देवे सर्वम् अस्ति=देव (ईश्वर) के अदर सब कुछ है ।
 ८. हे देव ! अत्र पश्य=हे देव ! यहां देख ।
 ९. रामः दशरथस्य पुत्रः अस्ति=राम दशरथ का पुत्र है ।
 १०. रामं दशरथः एव वदति=रामको दशरथ ऐसा बोलता है ।
 ११. कृष्णेन जलं दत्तम्=कृष्ण ने जल दिया ।
 १२. देवदत्ताय पुस्तकं देहि=देवदत्त के लिये पुस्तक दे ।
 १३. लवपुरात् फलं आनय=लाहौर शहर से फल लेआ ।
 १४. रामस्य गणस्य च युद्धं जातम्=राम और रावण का युद्ध हुआ ।
 १५. तस्य गृहे मम वस्त्रम् अस्ति=उस के घर में मेरा कपड़ा है ।
 १६. हे देवदत्त ! त्वं युद्धं न कुरु=हे देवदत्त तू युद्ध न कर ।
 १७. बालकः उपरि अस्ति=बालक ऊपर है ।
 १८. तं बालकं पश्य ! कथं स धावति=उस बालक को देख ! कैसे यह दौड़ता है ।
 १९. बालकेन स्नानं कृतम्=बालक ने स्नान किया ।
 २०. बालकाय मोदकं देहि=बालक को लहूँ दे ।
 २१. बालकात् पुस्तकं गृह्णामि=बालक से पुस्तक ले ।
 २२. बालकस्य वस्त्रं रक्तमस्ति=बालक का कपड़ा लाल है ।
 २३. बालके दयां पुर=बालक पर दया कर ।
 २४. हे बालक ! स्वमुक्तिं=हे बालक ! तू मुक्त ।

शब्द

पालकः=पालनकर्ता

पेटकः=संदुक

कणः=धन का कण

तन्मू=छाछ

ओदनं=चावल

कपि =शंकर

पानीयं=जल

पुच्छं=दुम

दन्तः=दांत

घृतं=घी

खट्वा=चारपाई, खटिया

वैर=रघुता

क्रिया

उज्जति=(वह) जलती है

वहति=(वह) उठता है

उज्जामि=जलता हूं

अस्ति=(तू) खाता है

कुंत्सि=(तू) कुतरता है

निसरति=(वह) निकलता है

उज्जति=(तू) जलता है

कुंत्सि=(वह) कुतरता है

अस्ति=(वह) खाता है

अस्मि=खाता हूं

कुंत्सामि=कुतरता हूं

निसरति=(तू) निकलता है

वाक्य

१. मम गृहे अश्वः अस्ति=मेरे घर में घोड़ा है।

२. तस्य पुच्छं श्वेतम् अस्ति=उसकी दुम सफेद है।

३. स घृतं नैव अस्ति=वह घी नहीं खाता है।

४. तस्य दन्तः श्वेतः नास्ति=उसका दांत सफेद नहीं है।

५. अयं तस्य पेटकः नास्ति=यह पसका टूट नहीं।

६. अहम् ओदनं भक्षयामि=मैं भात खाता हूं।

७. स ओदनं दुग्धेन सह अस्ति=वह चावल दूध के साथ खाता है।

८. त्वं कथं शंकरया सह ओदनं अस्ति=तू कैसे शंकर के साथ

चावल खाता है ?

६. अहं तस्य उत्तरं नयामि=मैं उसका उत्तर ले जाता हूँ ।
 १०. मूषकः तस्य पुच्छं कृत्वति=चूहा उसकी दुम काटता है ।
 ११. हे मित्र ! अघुना स्थानं गच्छ, तत्र मम भृत्यः अस्ति=हे मित्र
 अब बाग की जा, वहाँ मेरा नौकर है ।

सरल-वाक्य

१ एवं अत्र शीघ्रं श्रोतुम् आनय । २ अत्र जलम् अपि
 नास्ति । ३ तस्य पुस्तकं तव मित्रेण नीतम् । ४ तत्र दीपः उजलति ।
 ५ तस्य प्रकाशे पुस्तकं पठ । ६ स किं वदति इदानीम् । ७ अहं
 मम ग्रामम् अद्य गमिष्यामि । ८ यदि भूमिगः अत्र अस्ति तर्हि
 तम् अत्र आनय । ९ राजा चीरं दृष्ट्वा धावति । १० यदा मम गृहे
 धौगः आगतः तदा त्वं कुत्र गतः ।

पाठ ३३

अ सीत्=था, हुआ था	राजा=नरेण, राजा
पृतं=किया	पुच्छं=जंग, लड़ाई
द्वः=नारा, इनने किया	सह=साथ
ममू=होगया था, हुआ था	
नेत्रं=आँख	नामधेय, नाम=नामवाला
अवलम्ब्य=मवलम्बन करके	राज्यं=राज्य
अकरोत्=करता था,	भार्या=स्त्री, धर्मपत्नी
नामधेया=नाम की	साध्वी=रतिप्रता

वाक्य

१. रामचन्द्रः कः आसीत्=रामचन्द्र कौन था ?
 २. रामचन्द्रः अयोध्यानामकस्य नगरस्य राजा आसीत्=रामचन्द्र
 अयोध्या नगरी का राजा था ।

३. तेन रामेण किं कृतम्-उस रामने क्या किया ?
- ४ रामेण युद्धे रावण हत =राम ने युद्ध में रावण को मारा ।
५. रावणः कः आसीत्=रावण कौन था ?
६. रावण लक्ष्मणनामधेयस्य नगरस्य राजा आसीत्=रावण लक्ष्मण नगरी का राजा था ।
- ७ रावणेन सह रामस्य युद्ध किमर्थं अभूव=रावण के साथ राम का युद्ध किस कारण हुआ ?
८. रावण धर्मं त्यक्त्वा अधर्मम् अवलम्ब्य राज्यम् अकरोत्, अतः रावणेन सह रामेण युद्धं कृतम्=रावण धर्म को छोड़ अधर्म का अवलम्बन करके राज्य करता था, इसलिये रावण के साथ राम ने युद्ध किया ।
- ९ रामस्य का भार्या आसीत्=राम की स्त्री कौन थी ?
- १० सीता नामधेया रामस्य भार्या अतीव साध्वी आसीत्=सीता नाम वाली राम की धर्मपत्नी अत्यन्त प्रतिभ्रता थी ।
११. रामचन्द्रस्य माता का आसीत्=रामचन्द्र की माता कौन थी ?
- १२ कौशल्यानामधेया श्रीरामचन्द्रस्य माता आसीत्=कौशल्या नाम वाली श्री रामचन्द्र की माता थी ।
१३. रावणस्य धाता कः आसीत्=रावण का भाई कौन था
१४. विभीषणः रावणस्य भ्राता आसीत्=विभीषण रावणका भाई था ।
१५. रामचन्द्रस्य लक्ष्मणनामधेयः कः आसीत्=रामचन्द्र का लक्ष्मण नामक भाई था ।
- १६ तथा भरतः शत्रुघ्न अपि=उसी प्रकार भरत और शत्रुघ्न भी ।
१७. रामेण सह साध्वी सीता धनं गता आसीत्=राम के साथ

पतिव्रता सीता देवी वन में गई थी ।
 १८. रामेण सह लक्ष्मणः अपि वनं गतः=राम के साथ लक्ष्मण
 भी वन की गया था ।

१९. यथा रामेण राक्षसाः हताः तथा एव लक्ष्मणेन अपि राक्षसाः
 हताः=जिस प्रकार राम ने राक्षसों को
 मारा उसी प्रकार लक्ष्मण ने भी राक्षसों
 को मारा ।

२०. रामः धर्मेण राज्यं अकरोत्=राम ने धर्म के साथ राज्य किया ।

२१. अतः जनः रामे प्रीतिं अकरोत्=इस लिये लोग राम में प्रीति
 करते थे ।

शब्द

वार्ता=बात

नगरी=शहर

वार्तालाप=वार्तालाप, बातचीत

त्यरितं=शीघ्र

षट्कं=जल

वृष्टि=वर्षा, धरती

एष=यह

मेघः=बदल

पत्र=पत्र, रसत

रम्या=रमणीय

सा=वह

भृष्ट=ऊँट

नयनं=आँख

गति=गमन दीड़

प्रकाशः=प्रकाश, रोशनी

मुधानगरे=बम्बई में

द्रुतं=शीघ्र

पानीय=पानी

वाक्य

१. युद्धस्य वार्ता रम्या भवति=युद्ध की बात रमणीय होती है ।

२. सा नगरी अतीव रम्या अस्ति=वह शहर बहुत रमणीय है ।

३. कृष्णेन सह वार्तालापं पुरः=कृष्ण के साथ बातचीत कर ।

४. षट्स्य त्वरिता गतिः=ऊँट की दौड़ तेज (होती है)
 ५. अश्वस्य गमनमपि तथैव=घोड़े की दौड़ भी वैसी ही है ।
 ६. मेघात् वृष्टिः भवति=बादल से वृष्टि होती है ।
 ७. सूर्यात् प्रकाशः भवति=सूर्य से प्रकाश होता है ।
 ८. रात्रौ सूर्यः न भवति=रात्रि में सूर्य नहीं होता ।
 ९. अहं रामाय पत्र लिखामि=मैं राम के लिये पत्र लिखता हूँ ।
 १०. त्व पत्र शीघ्रं लिख=तु जल्दी पत्र लिख ।
 ११. पत्रस्य लेखनेन किं भविष्यति=पत्र लिखने से क्या होगा ?
 १२. एष यज्ञदत्तस्य पुत्रः=यह यज्ञरत्न का पुत्र (है) ।
 १३. तव पुत्रः कुत्र अस्ति=तेरा पुत्र कहाँ से ।
 १४. मुम्बानगरे मम पुत्रः अस्ति=बम्बई में मेरा पुत्र है ।

शब्द

पाचकः=रसोइया

यष्टिका=सोटी

द्वार=दरवाजा

अनृतं=असत्य

पर्यटः=पापड़

कर्तरी=कैची

महानसं-रसोई का स्थान

महिषः=भैंसा

यष्टि =सोटी

सूचका=सूई

गण्डूप.=चुञ्जी

कशा=वायु छ

मृत्पिण्ड =मट्टी का गोला

पटः=बख

पारितोषिकं=बक्षीस, इनाम

महिषी=भैंस, महाराणी

क्रिया

आरोहति=(वह) चढ़ता है

आरोहामि=चढ़ता हूँ ।

आरोहति=(तू) चढ़ता है

अपविशति=(वह) बैठता है

(१) गमनं + अपि । (२) तथा + एव ।

धामयसि=(तू) घुमाता है	उत्तिष्ठामि=उठता हूँ
हसति=(वह) हँसता है	निसिपति=(वह) फेंकता है
सिचते=छिड़कता है	कर्तयति=(वह) काटता है

वाक्य

१. अहं पर्पटं भक्षयामि=मैं पापड़ खाता हूँ ।
२. अयं पाचकः अस्ति=यह रमोइया है ।
३. अयं स्थानात् अश्वः आगच्छति=अश्व स्थान से घोड़ा आता है ।
४. अथ मार्गं बदमः जातः=आज मार्ग में कीचड़ हो गया है ।
५. तव वस्त्रं मलिनम् अस्ति=तेरा वस्त्र मलिन है ।
६. त्वां दृष्ट्वा स हसति=तुम्हें देख कर वह हँसता है ।
७. अहं तं दृष्ट्वा हसामि=मैं उसको देख कर हँसत हूँ ।
८. यष्टिकया मूपकं ताडय=सीटी से चूहे को मार ।
९. यदि त्वं कूरस्य जलं पातुम् इच्छसि तर्हि मया सह अगच्छ=अगर तू कूर्व का जल पीना चाहता है, तो मेरे साथ आ ।
१०. अयन्ति-नगरात् तस्य मित्रं अथ अपि न आगतम्=अयन्ति शहर से उमका मित्र आज भी नहीं आया ।

सरल वाक्य

१. परय स सूचिकायां सूत्रं निसिपति । २ स कर्तव्यां पत्र वक्तयति । ३ स पठ्याय गृहाद् अत्र एव आगतः । ४ महानमान धूमः उत्तिष्ठति । ५ अथ धूमः अस्ति तत्र न गन्तव्यम् । ६ जनस्य गंडूषेण मुखं प्रक्षालयामि । ७ तेन पारितोषितकं प्राप्तम् । ८ तस्य महिषी दुग्धं ददाति । ९ अयं सैनेकः कथाया अश्वं तायति । १० पाठशाखायां केनापि सह युद्धं न कुरु ।

भिन्न भाषा के वचनों का सम्बन्ध कीजिए —

१, उस याचक को अन्न दो। २ जो लड़की पाठशाला को जानती है, वह किसकी है। ३ मैं घटा देखता हूँ। ४ तू बादल देखता है। ५ तेरा सड़क कहा है।

पाठ ३४

अकारान्त नपुंसकलिङ्गी शब्द

गमन=जाना

आगमन=आना

भक्षण=खाना

भोज =भोजन, रोटी

क्रीडन=खेलना

पान=पीना

दान=देना

आदा =लेना

हसन=हसना

स्वीकरण=स्वीकार करना

लेखन-लिखना

पत्र=पत्र

वस्त्र-वस्त्र

पात्र=वर्तन

शरीर=शरीर

अन्न=अन्न

संस्कृत में शब्दों के तीन प्रकार के लिंग होते हैं। कई शब्द पुल्लिंग हैं, हैं कई स्त्रीलिंग हैं और कई नपुंसकलिङ्गी हैं, शब्दों के लिंग पहचानने के लिये कोई सामान्य नियम नहीं है, और जो नियम है वे इस समय पाठकों के ध्यान में नहीं आ सकते, इसलिए यहाँ नहीं दिये जाते।

सब अकारान्त नपुंसक—लिंग शब्दों के रूप अकारान्त पुल्लिंग शब्द के समान ही होते हैं, केवल प्रथमा तथा द्वितीया के रूप कुछ भिन्न होते हैं, देखिये —

अकारान्त नपुंसकलिङ्गी शब्द

१ प्रथमा

भोजन

भोजन

२ द्वितीया	भोजनं	भोजन को
३ तृतीया	भोजनेन	भोजन से
४ चतुर्थी	भोजनाय	भोजन के लिये
५ पंचमी	भोजनात्	भोजन से
६ षष्ठी	भोजनस्य	भोजन का
७ सप्तमी	भोजने	भोजन में

संशोधन

(हे) भोजन

(हे) भोजन

इसी प्रकार सब अन्य अकारान्त नपुंसकलिंग शब्दों के विषय में जानना चाहिये। इन रूपों को देख कर पाठकों ने जान लिया होगा कि, प्रथमा द्वितीया के अतिरिक्त अन्य विभक्तियाँ अकारान्त पुल्लिंग और नपुंसकलिंग शब्दों की एक ही होती हैं।

पाठकों ने देखा होगा, कि तृतीया विभक्ति का जो "न" है वह कई शब्दों में "ण" बनता है और कई शब्दों में "न्" ही रहता है, इसका पूरा पूरा नियम हम आगे द्वितीय विभाग में देंगे परन्तु पाठकों को यहाँ इतना ही ध्यान में रखना चाहिये कि जिन शब्दों में "र ष" ये अक्षर होते हैं प्रायः उन शब्दों के "न" का "ण" बनता है, परन्तु कई अस्थायण ऐमी आती हैं कि जिनमें "न" को "ण" नहीं बनता:—

(१) देवेन=देव ने	पुरुषेण=पुरुष ने
भोजनेन=भोजन से	(३) कृत्तेन=कृत्वा ने
गमनेन=गमन से	रथेन=रथ ने
(२) रामेण=राम ने	रावणेन=रावण ने
नरेण=नर ने	

(१) देव, गमन, भोजन आदि शब्दों में "र, अथवा "ष" चलने होने से "ण" नहीं हुआ (२) राम, नर इन शब्दों में "र

और प" होने से "ण" बना है (३) वृष्ण, रथ, शवण, इन शब्दों में कुछ विशेष हालत न होने के कारण "ण" बना नहीं। इस विशेष हालत का वर्णन हम आगे करेंगे, इस विशेष अवस्था की परवा न करते हुए पाठकों को रूप बनाने चाहिये और वाक्यों में उनका प्रयोग करना चाहिये।

अकारान्त नपुंसकलिङ्गी शब्द

पुण्य=पुण्य	पातक=पाप
पोषण=पुष्टि	प्रचालन=घोना
ध्यान=ध्यान	ध्रमण=ध्रमण, धूमना
शीतनिवारण=शीत का निवारण	सत्य=सत्य
स्नान=स्नान	शूर्प=छत्र
फलक=पट्टा	जीरक=जीरा
चक्र=चक्र	

वाक्य

१. द्रव्यस्य दानेन ऋि फल भवति=द्रव्य के दान से क्या फल होता है ?
२. द्रव्यस्य दानेन पुण्य भवति=द्रव्य के दान से पुण्य होता है।
३. शरीरस्य पोषणाय अन्नमस्ति ऽ=शरीर की पुष्टि के लिये अन्न है।
४. वस्त्रस्य प्रचालनाय शुद्ध जल तत्र अस्ति=कपड़ा धोने के लिये शुद्ध जल यहाँ है।
५. पत्रस्य लेखनाय मसीपात्र महा देहि=पत्र लिखने के लिये दवात मुझे दे।
६. पट्टुक. मोहनाय भवति=गेंद खेजने के लिये होता है।

७. नगरं नगरं तस्य भ्रमणं सदा भवति=(एन) शहर से
 • (दूसरे) शहर उसका भ्रमण सदा
 होता है।
८. वस्त्रेण शीतनिवारणं भवति=कपड़े से सर्दी का निवारण
 होता है।
९. तव भोजने करपट्टिना नास्ति×=तेरे भोजन में फुत्तका
 नहीं है।
१०. मम भोजने ओदन मस्तिॐ व्यंजनमपि॥ अस्ति=मेरे भोजन
 में भत है, और चटनी भी है।
११. इदानीं तत्र तस्य गमनं वगमू=अम वहाँ उसका जाना
 अच्छा है।

अकारान्त नपुंसकलिङ्गी शब्द

१. प्रथमा	ज्ञानं	ज्ञान
२. द्वितीया	ज्ञानं	ज्ञान को
३. तृतीया	ज्ञानेन	ज्ञान ने
४. चतुर्थी	ज्ञानाय	ज्ञान के लिये
५. पञ्चमी	ज्ञानात्	ज्ञान से
६. षष्ठी	ज्ञानम्य	ज्ञान का
७. सप्तमी	ज्ञाने	ज्ञान में
सम्बोधन	(हे) ज्ञान	(हे) ज्ञान

अकारान्त नपुंसक-लिङ्गी शब्द

अम=नोक	अंजनं=चञ्चल, सुरमा
पाठयं=चचलता	अभिषादनं=श्रेष्ठो को नमन

‡ अमं + अस्ति । × न + अस्ति । ॐ ओदनं + अस्ति ।

॥ व्यंजन + अपि ।

अचलोकनं=देखना
 आरोग्यं=त-दुरुस्ती
 अमीजनं=खोलना
 गानं=गाना
 चित्तं=मन
 धनं=दौलत
 दुःखं=तकलीफ
 अ-पाटवं=बीमारी
 सत्यं=सत्य

स्मरणं=याद
 उपवनं=भाग
 श्रवणं=सुनना
 चलनं=चलना
 तत्त्वं=तत्त्व
 इंद्रियं=इन्द्रिय
 आसनं=प्रासन
 क्षेत्रं=खेत
 पत्तनं=नगर
 शीलं=स्वभाव

फलं=फल
 स्थानं=जगह
 कार्यं=कृत्य, काम
 घ्राणं=नाक
 तरणं=तैरना
 नर्तनं=नाच
 अनामयं=आरोग्य
 नयनं=आँख
 असत्यं=असत्य

उत्तरं=जवाब
 सन्निद्रं=खोदने का हथियार
 पालनं=रक्षा
 जीवनं=जिन्दगी
 मूलं=जड़
 शस्त्रं=हथियार
 हवनं=हवन
 नामधेयं=नाम
 प्रतं=नियम
 हिंसनं=हिंसा, बघ

ये सब शब्द ज्ञान शब्द के समान ही चलते हैं ।

वाक्य

1. मम शरीरस्य अपाटवम् अस्ति=मेरा शरीर बीमार है ।
2. यथा आरोग्यं भवति तथा कार्यम्=स्वास्थ्य हो वैसे करना ।
3. तव चित्तं पुत्र अस्ति=तेरा मन कहीं है ।

४. ईश्वरस्य स्मरणं प्रभाते उच्यते अथर्वयं कर्तव्यम्=ईश्वर का स्मरण सवेरे ठ कर अवश्य करना चाहिये ।
५. यदा त्वं व्रतं करोषि तदा किं भक्षयसि ?=जब तू व्रत करता है, तब क्या खाता है ।
६. अश्वस्यं पालनं कुरु=घोड़े का पालन करो ।
७. यदा स घसतयं वदति तदा तस्य मुग्धं मलिनं भवति=जब वह भूठ बोलता है तब उसका चेहरा मलीन होता है ।
८. येन देनापिमार्गेण गच्छ=जिम किसी मार्ग से जा ।
९. तत्र वित्रा धनं दत्तम्=वैरे मिता ने धन दिया ।
१०. मया शास्त्रं न पठितम्=मैंने शास्त्र नहीं पढ़ा ।

सरल वाक्य

१ माता पुत्राय भोजनं ददाति । २ पुत्रः पित्रे पत्रं लिखति । ३ तेन धनं न जानंति । ४ किं स अथपि तत्रैव अस्ति । ५ किं करोति स तत्र । ६ अर्द्धं तस्मै बालकाय किम् अपि दातुं न इच्छामि, पत्रः स स्वकीये पुस्तकं न पठति, इत्यतः भ्रमति च । ७ म धुधया दुग्धितं मनुष्यं दद्यात् तस्मै पथं अन्नं ददाति । ८ देवदत्त, किं ह्ये जले तरणं जानति । ९ यदि जानासि तर्हि अथ मया सह आगच्छ नदीम् । तत्र तरया स्नानं करिष्यामि । १० इदानीं भोजनस्य समयः जातः, शीघ्रं जलं गृह्णीत्या अत्र पथ आगच्छ ।

पाठ ३५

शब्द

मुग्धं=मुँह

वर्णं=रंग

दत्तं=दाया

नेत्रं=आंख

दत्तः=दाँ

पादः=पाँ

भिन्न=अलग

आत्मा=आत्मा जीव

पकं=पका हुआ

बीज=बीज

वाक्य

- १ इह मनुष्यः दिनेऽक्षि दिने अन्नं भक्षयति=यहां मनुष्य प्रत्येक दिन अन्न खाता है।
२. नगरे जनः क्रीडां करोति=प्रत्येक शहर में मनुष्य खेलता है।
३. ग्रामे ग्रामे च्य नं भवति=प्रत्येक गांव में बोग होता है।
४. गृहे गृहे बालः प्रसन्नः भवति=हर एक घर में बालक आनन्दित होता है।
- ५ शरीरे शरीरे आत्मा भिन्नः भवति=हर एक शरीर में अलग २ आत्मा है।
६. वृक्षे वृक्षे फलं पकम् अस्ति=हर एक वृक्ष पर फल पका है।
७. राष्ट्रे राष्ट्रे राजा भवति=हर एक राष्ट्र में राजा होता है।
८. सायं सायं जलं आगच्छति=प्रति सायंकाल जल आता है।
९. मार्गे मार्गे रथः धावति=हर एक मार्ग में रथ दौड़ता है।
१०. पुस्तके पुस्तके अलेख्य भवति=हर एक पुस्तक में चित्र होता है।
११. फले फले बंज भवति=हर एक फल में बीज होता है।
१२. कूपे कूपे जलं भवति=हर एक कूँवे में जल होता है।
१३. वने वने वृक्षः भवति=हर एक वन में वृक्ष होता है।

इकारान्तो नपुंसकलिङ्गो 'वारि' शब्दः

१ प्रथमा

वारि

जल

ॐ संस्कृत में शब्दों का दुबारा प्रचारण करने से "प्रत्येक, हर एक" ऐसा अर्थ स्वयं उत्पन्न होता है।

२ द्वितीय	”	जल को
३ तृतीया	धारिणा	जल ने
४ चतुर्थी	धारिणे	जल के लिये
५ पञ्चमी	धारिणः	जल से
६ षष्ठी	”	जल का
७ सप्तमी	धारिणि	जल में
सम्बोधन	(हे) वारि	(हे) जल

इस प्रकार इकारान्त नपुंसकलिंग शब्दों के रूप होते हैं ।

वाक्य

१. मनुष्यस्य देहे प्रथम घ्राणम् इन्द्रिय, येन गन्धः गृह्यते= मनुष्य के शरीर में पहिला नाक इन्द्रिय जिससे गंध लिया जाता है ।
२. द्वितीयं चक्षुः येन मनुष्यः सर्वं पश्यति=दूसरी आँख जिस से मनुष्य सब देखता है ।
३. तृतीयं श्रोत्रं येन शब्दः श्रूयते=तीसरा कान जिससे शब्द सुना जाता है ।
४. चतुर्थम् इन्द्रियम् जिह्वा, यया अन्नस्य रसः गृह्यते=चौथी इन्द्रिय जवान, जिससे अन्न का रस लिया जाता है ।
५. पञ्चमम् इन्द्रियम् त्वक्, यया मनुष्यः स्पर्शं जानाति=पांचवीं इन्द्रिय चमड़ी है जिससे मनुष्य स्पर्श जानता है ।
६. षष्ठम् इन्द्रियं पञ्चकम् सर्वस्य ज्ञानस्य मूलम्=यह इन्द्रिय पंचक (पांच इन्द्रियाँ) सब ज्ञान की मूल है ।

नासिका=नाक

हृदयं=दिल, हृदय

उदं=पेट

पृष्ठं=पीठ

अंगुली=अंगुली

शिखा=चोटी

वाक्य

१. परय नवीनचंद्रस्य मुखं कथं अतीव मलिनम् अस्ति=देख नवीनचंद्र का मुख कैसा (बहुत) मलिन है।
२. स इदानीं मुखेन फलं भक्षयितु न शक्नोति=वह अब मुंह से फल खा नहीं सकता।
३. अहं कर्णेन तव अतीव मधुरं भाषणं शृणोमि=मैं कान से तेरा बहुत मीठा भाषण सुनता हूँ।
४. मार्गे तस्य हस्तात् पुस्तकं पतितं=मार्ग में उसके हाथ से पुस्तक गिर पड़ा।
५. मार्गे पतितं तत् पुस्तकं अधरेण गृहीतं=मार्ग में गिरी हुई पुस्तक को अधर ने लिया।
६. सः शूरपुरुषः इदानीं युद्धे पतितः=वह शूर पुरुष अब जंग में गिर पड़ा (मर गया)।
७. तस्य मलिनहस्तात् कुडलिनीः न गृह्णाण=उसके मलिन हाथ से जलेबियाँ न ले।

शब्द

नेत्राभ्यां=दोनों आँवों से

कर्णाभ्यां=दोनों कानों से

हस्ताभ्यां=दोनों हाथों से

पद्भ्यां=दोनों पैरों से

नासिक्याः=नाक से

दंभैः=दाँतों से

आरोहति=चढ़ता है

विश्वं=विश्व, सब

सुगन्धः=सुशायू

वानरः=बंदर

वृक्षः=दरखत
घाणो=भापण

शठः=ठग
विषं=झहर

वाक्य

१. अहं नेत्राभ्यां विश्वं पश्यामि=मैं (दोनों) आँसों से विश्व को देखता हूँ ।
२. स कर्णाभ्यां श्रोतुं न शक्नोति=वह (दोनों) कानों से सुन नहीं सकता ।
३. त्वं नासिकया सुगन्धं गृह्णासि किम् = क्या तू नाक से सुगन्ध लेता है ?
४. मनुष्यः पादुभ्यां घाथति=मनुष्य (दोनों) पैरोंसे दौड़ता है ।
५. जनः दतैः फल अति=मनुष्य दौतों से फल खाता है ।
६. वानरः हस्ताभ्यां, पादुभ्यां च वृक्षं आरोहति=बन्दर (दोनों) हाथों तथा (दोनों) पैरों से वृक्ष के ऊपर चढ़ता है ।
७. वानरः रात्रौ वृक्षस्य उपरि स्वपिति=बन्दर रात्रि में वृक्ष के ऊपर सोता है ।
८. शटस्य मुखे मधुरा वाणो तथा हृदये विषं भयति=ठग के मुँह में मीठा भापण तथा हृदय में विष होता है ।
९. पश्य ! वानरस्य मुखं यथं कृणाम् अस्ति=देख बन्दर का मुँह कैसा फाला है ।

शब्द

इह=यहां, इस लोक में
ससारः=संसार, दुनियाँ
राष्ट्र=राष्ट्र, कीम

अधुप्र=परलोक
जगति=जगत् में
प्रसन्न=आनन्दित

७. हे बालकः ! त्वम् किम् करोषि=हे पालक तू क्या करता है ?
८. त्वम् कदापि असत्यं मा वद । असत्य भाषणम् पापम्
घर्तते=तू कभी असत्य न बोल । असत्य
बोलना पाप है ।
९. यः असत्यम् वदति कः अपि तस्य विश्वासम् न करोति=जो
असत्य बोलता है । कोई भी उसका
विश्वास नहीं करता ।
१०. यदि कः अपि बालकः असत्यम् वदति तर्हि गुरुः तम् ताड-
यति=अगर कोई भी बालक झूठ
बोलता है तो गुरु उसको मारता है ।
११. यः सत्यम् वदति तस्य सर्वजनः विश्वासं करोति=जो सच
बोलता है उसका सब मनुष्य विश्वास
करते हैं ।
१२. सत्यं सदा सत्यं वद सत्य-भाषणं पुण्यं घर्तते=तू सदा सच
बोल, सत्य बोलना पुण्य है ।
१३. यदा बालकः सत्यं वदति तदा गुरुः तम् नैव ताडयति=अथ
वाञ्छक सत्य बोलता है तब गुरु उसको
नहीं मारता ।
१४. अतः कदापि असत्यं न वक्तव्यं । परन्तु सदैव सत्यं वक्तव्यम्=
इसलिये कभी भी असत्य न बोलना
परन्तु हमेशा सच ही बोलना ।
१५. इदम् अहं अनृतात् सत्यम् उपैमि=यह मैं झूठ से (जो छोड़
कर) सत्य को प्राप्त होया हूँ ।

पाठ ३६

पर्यं पाठों में पुलिग, स्त्रीलिग तथा नपुंसकलिग शब्दों के रूप सात विभक्तियों में कैसे होते हैं, यह देख चुके हैं, कोई अकारान्त शब्द स्त्रीलिग में नहीं है, जब कोई अकारान्त शब्द स्त्रीलिग बनता है तब उसके अकार का प्रायः "आ" बनता है, जैसे :—

पुलिग	उत्तम पुरुषः	उत्तम पुरुष
स्त्रीलिग	उत्तमा स्त्री	उत्तमा स्त्री

उसमें "उत्तम" शब्द जो पहिले वाक्य में पुलिग शब्द था वह दूसरे वाक्य में स्त्रीलिगो बना तब उसका "उत्तम" ऐसा रूप बदलते रहते हैं देखिये—

(१) पुलिगी

१. श्वेत रथ = सफेद रथ (गाड़ी) ।
२. मधुर आम्र = मीठा आम ।
३. शोभन समय = अच्छा समय ।

(२) स्त्रीलिग

१. श्वेता पुष्पमाला = सफेद फूलों की माला ।
२. मधुग कुटिलिनी = मीठी जलिवी ।
३. शोभना वेला = अच्छा समय ।

(३) नपुंसकलिगी

१. श्वेत पुष्पम् = सफेद फूल ।
२. मधुर दुग्धम् = मीठा दूध ।
३. शोभन दृश्यम् = सुन्दर दृश्य (नजारा) ।

इस प्रकार तीनों लिगों में रूप बदलते रहते हैं । विशेषतः त्रिसक्त गुण बताता है उस गुणो का जो लिग होगा वही उसके

विशेषण का भी होगा। इसी नियमानुकूल वक्त विशेषणों के लिंग गुणी के लिंगों के अनुसार बदलते हुए हैं, इसका विचार स्पष्ट होने के लिये पाठकों को दुबारा देखना चाहिये, कि ऊपर दिये हुए तीनों लिंगों के विशेषण, एक ही होते हुए, गुणी के लिंग भिन्न होने के कारण कैसे भिन्न हो गये हैं। अब इस पाठ में कुछ विशेषण देते हैं —

विशेषण के शब्द

उत्तम=उत्तम	श्रेष्ठ=श्रेष्ठ
वर=श्रेष्ठ	पीता=पीला
रक्त=नाल	नील=नीली
अध=अधा	वधिर=बहिरा
मध्यम=बीच वाला	कनिष्ठ=कनिष्ठ छोटा
चतुर=चतुर, समझदार	उद्यमशील मेहनती परिश्रम
श्वेत=सफेद	हरित=हरा
ताम्र=ताल	तरुण=नारगी
ऋण्य=काला	अलस=मालसी
रुण=रोगी	नीरोग=स्वास्थ्य
यामन=ठिगणा	उच्च=ऊँचा

इन सब शब्दों के लिङ्ग गुणी के लिङ्गों के अनुसार बदलते रहेंगे, यह आप निम्न वाक्यों में देख सकते हैं, यदि यह बात पाठकों के ध्यान में आ गई, तो आगे का व्याकरण का विषय इन के लिये बहुत ही सुगम हो जायगा *—

वाक्य

१. उत्तम वरुण शोभने प्रातःकाल सचये वसिष्ठति=उत्तम

मनुष्य अच्छे सवरे के समय में उठता है ।

२. शुद्धेन जलेन ज्ञात्वा सन्ध्योपासनं करोति=शुद्ध जल से ज्ञान करके सन्ध्योपासन करता है ।
३. यः पयं सदा करोति स एव उत्तमः मनुष्य भवति=जो इस प्रकार हमेशा करता है वही उत्तम मनुष्य होता है ।
४. या एवं सदा करोति सा अपि उत्तमा स्त्री भवति=जो इस प्रकार हमेशा काती है वह भी उत्तम स्त्री होती है ।
५. अतः प्रातः स्नानं सन्ध्योपासनं च श्रेष्ठं कर्म अस्ति इति अहं वदामि=इसलिये प्रातः स्नान और सन्ध्योपासन श्रेष्ठ कार्य है ऐसा मैं कहता हूँ ।
६. स अंधः पुरुषः रक्तं वस्त्रं ध्यानयति=वह अंधा मनुष्य लाल कपड़ा लाता है ।
७. सा अंधा स्त्री श्वेतां पुष्पमालां ध्यानयति=वह अंधी स्त्री सफेद फूलों की माला लाती है ।
८. स वृद्धः पुरुषः श्वेते रथे उपविश्य अत्र आगच्छति=वह बुढ़ा मनुष्य सफेद गाड़ी में बैठ कर यहाँ जाता है ।
९. सा वृद्धा स्त्री रक्तं वस्त्रं हस्ते गृहीत्वा धावति=वह बुढ़ी स्त्री लाल कपड़ा हाथ में लेकर दौड़ती है ।
१०. स वधमशीलः बालः यदा उत्तमं पुस्तकं पठति=वह बचपनी बालक हमेशा उत्तम पुस्तक पढ़ता है ।
११. वधमशीला बालिका सदा उत्तमां पुष्पमालां करोति=बचपनी लड़की हमेशा उत्तम पुष्पमाला करती है ।
१२. स रागः बालः मधुरं अपि दुग्धं न पिबति=वह रोगी बालक मीठा दूध भी नहीं पीता ।

१३ सा रग्णा बालिका मधुरम् अपि दुग्ध न पिचति=रह रोगी लड़की भीठा दूध भी नहीं पीती ।

विशेषण के शब्द

अखिल=सब सपूर्ण	अधिव=धीर बहुत
अध्वेतव्य=पढ़ने योग्य	अनुसप्त=सप्त से उच्च
अभिवाच=नमस्कार के योग्य	अध त=बड़ा हुआ
अनर्घ=बहु मोल	अन्तिक=पाम
अन्त्य=आखीर का	अवाच्य=बोलने के अयोग्य
अर्पित=अर्पण किया हुआ	संतुष्ट=सुख
असंतुष्ट=न सुख	कठिन=मुशकिल
कथनीय=कहने योग्य	तुल्य = समान
दृष्टव्य=देखने योग्य	निवृत्त=समीप
निखिल=सब	परिवृत्त=संस्कार किया हुआ
पूर्व=पहिला	पेय=पीने योग्य
भक्ष्य=खाने योग्य	दु खित=शीत
अविप्लुत=सदाचारी	अशिक्षित=अज्ञानी
ईदृश=ऐसा	ग्राह्य=जिजा हुआ
विन्तित=मोचा हुआ	दातव्य=देने योग्य
नष्ट=नाश को प्राप्त	पथ्य=हितकारक
पर=उत्तम, श्रेष्ठ, दूसरा	पालनीय=गलने योग्य
भोग=हरा हुआ	पूजनीय=संस्कार के योग्य
मुमुक्षित=भूया	भयाप्लुत=हरा हुआ है
मुमुक्षुः=मुग्ध से निवृत्त हुआ	

- { १. अखिल संसारः ईश्वरेण कृतः ।
 २. अखिलया सेनया युद्धं कृतम् । .
 ३. अखिलं पुस्तकं मया पठितम् ।
- { १. सत्पुत्रः राजा द्रव्यं ददाति ।
 २. सत्पुत्रा धालिका इदानीं हसति ।
 ३. सत्पुत्र मित्रं किं करोति ?
- { १. पूजनीयः गुरुः आगतः ।
 २. पूजनीया माता आगता ।
 ३. पूजने यं ज्ञानं देहि ।

पाठ ३७

नाम=नाम वाला	कश्चिद्=कोई एक
प्रज्जालय=जाला कर	स्वकीय=अपना
सत्वर=जल्दी	वर्ण=रंग
सौंदर्य=सुषुम्नगी	नित्य=हमेशा
लघु=छोटा	आहारः=भोजन
नवीन=नवीन, नया	प्राचीन=पुराणा
आकारः=राकल	पुरुषता=पदसूत्र

वाक्य

१. गंगाधरः नाम कश्चिद् बालः अतीव उद्यमशीलः अस्ति=गंगाधर नामक कोई एक बालक बहुत ही चतुरागी है।
२. स प्रातः एव उत्तिष्ठति दीपं प्रज्जालय, पुस्तकं गृहीत्वा स्वकीयं पाठं पठति=बढ़ सबेरे ही उठता है, दीप जल कर, पुस्तक लेकर अपना पाठ पढ़ता है।

३. यदा स उच्छिष्टति तदा सूर्यः अपि न उदयते=जब वह उठता है
तब सूर्य भी नहीं उगता ।

४. स स्वकीयस्य पाठस्य अध्ययनं कृत्वा स्नानं करोति, स्नात्वा च
नित्यं कर्म करोति=वह अपने पाठ का अध्य-
यन करके स्नान करता है, और स्नान करके
नित्य कर्म करता है ।

५. पश्चाद् लघु आहारं भक्षयित्वा सत्त्वरं पाठशालां गच्छति=पीछे
से थोड़ा आहार खाकर शीघ्र ही पाठशाला
को जाता है ।

६. तत्र नवीनं पाठं गृह्णीत्वा स्वकीयं गृहम् आगच्छति=वहाँ नया
पाठ लेकर अपने घर आता है ।

७. स कदापि मार्गं न कीडति = यह कभी मार्ग में नहीं खेलता है ।

८. अतः सर्वदा स प्रमन्नः भवति=इस लिये हमेशा वह खुरा
रहता है ।

पृच्छति=वह पूछता है

पृच्छसि=तू पूछता है

पृच्छामि=मैं पूछता हूँ

सम्यक्=सही प्रकार

प्रतिदिन=हर एक दिन

पृष्टं=पूछा

पृष्ट्वा=पूछ कर

प्रश्न=प्रश्न, सवाल

उदर=अंतर, जवाब

वायुसेवन=हवा खोरी

वाक्य

१. शृणु ! देवप्रतः तं किं पृच्छति=सुन ! दे देवप्रत उस की क्या
पूछता है ?

२. स उच्यैः न वदति अतः अहं तस्य भाषणां श्रोतुं न शक्नोमि=वह
कहाँ नहीं बोलता, इसलिये मैं उसका भाषण सुन
नहीं सकता ।

३. सत्वरं तत्र गत्वा शृणु=शीघ्र वहाँ जाकर सुन ।

४. मम इदानीं भ्रमणस्य समयः जातः अतः तत्र गन्तुं न शक्नोमि=
मेरा अब घूमने का समय हो गया है इस लिये
वहाँ जा नहीं सकता ।

५. किं त्वं प्रतिदिनं सायं काले भ्रमणाय गच्छसि=क्या तू प्रति-
दिन शाम को घूमने के लिये जाता है ?

६. अहं दिने दिने सायं काले वा प्रातः काले वा भ्रमणाय गच्छामि=
मैं हर एक दिन शाम को अथवा सवेरे के समय
भ्रमण के लिये जाता हूँ ।

७. सायंकालस्य भ्रमणात् प्रातः काले भ्रमण वरं अस्ति इति अहं
जानामि=शाम के घूमने से सवेरे का घूमना
अच्छा है ऐसा मैं जानता हूँ ।

क्रियाओं के तीन काल होते हैं एक वर्तमान काल, दूसरा भूत
काल और तीसरा भविष्यत् काल इन तीनों कालों में वर्तमान तथा
भविष्य पाठ हों ने जान लिया है, जैसा:—

वर्तमान काल—गच्छामि=जाता हूँ ।

भविष्य काल—गमिष्यामि=जऊंगा ।

भूत काल का सुगम रूप "स्म" शब्द से बनता है, वर्तमान
काल के रूप के आगे "स्म" रखने से उसी क्रिया का भूतकाल
है, जैसे:—

वर्तमान काल

भूतकाल

गच्छति—जाता है

गच्छति स्म—जाता था

करोति—करता है

करोति स्म—करता था

उत्तिष्ठति—उठता है

उत्तिष्ठति स्म=उठता था

वाक्य

१. रामः उद्यमे सदा गच्छति=राम चाग में हमेशा जाता है ।
२. रामः उद्यमे सदा गच्छति स्म=राम यग में हमेशा जाता था ।
३. अहं कृष्णेन सह भाषणं करोमि=मैं कृष्ण के साथ भाषण करता हूँ ।
४. त्वं तेन सह भाषणं करोषि=तू उसके साथ भाषण करता है ।
५. स मित्रेण सह भाषणं करोति स्म=वह मित्र के साथ भाषण करता था ।
६. स यात्राः मार्गे क्रीडति स्म=वह बालक मार्ग में खेलता था ।
७. राजा युद्धं करोति स्म=राजा युद्ध करता था ।
८. स कर्म करोति स्म=वह काम करता था ।
९. स फलं भक्षयति स्म=वह फल भक्षण करता था ।
१०. स प्रातः उत्तिष्ठति स्म=वह सबेरे उठता था ।

पूरे पाठ में जो विशेषण दिये हैं उनका तीनों जगों में उपयोग करके कुछ वाक्य यहाँ दिये हैं । जिनको देख कर विशेषणों का उपयोग किस प्रकार किया जाता है इसका ज्ञान पाठकों को हो सकता है । इसलिये निवेदन है कि पाठक हर एक वाक्य में जो जो विशेषण आये हैं उनकी ओर । विशेषण ध्यान से देखें और उपयोग का प्रकार जान लें ।

वाक्य

- | | |
|---|---------------------------------|
| { | १. अखिलस्य संसारस्य किं मूलम् ? |
| { | २. अखिलाया सृष्टेः किं मूलम् ? |
| { | ३. अखिलस्य जगतः किं मूलम् ? |

१. मया उत्तमाय ब्राह्मणाय मोदकः अर्पितः ।
 २. मया उत्तमायै पंडितायै पुष्पमाला अर्पिता ।
 ३. मया उत्तमाय वाजकाय पुस्तकं अर्पितम् ।

१. पश्य, तं दुःखितं बालकम् ।
 २. पश्य तां दुखितां नारीम् ।
 ३. पश्य, तं दुःखितं जनम् ।

१. तस्मै तृपिताय मनुष्याय पेयं जलं देहि ।
 २. तस्यै तृपितायै पुत्रिकायै पेयां यवागूं देहि ।
 ३. तस्मै तृपनाय मित्राय पेयं दुग्धं देहि ।

१. मया अधीतं पुस्तकं त्वं नय ।
 २. मया अधीतां कथां त्वं नय ।
 ३. मया अधीतं ग्रंथं त्वं नय ।

शब्द

संसारः=दुनियां (पुल्लिङ्ग)	सृष्टिः=दुनिया (स्त्री०)
जगत्=दुनियां (नपुंसक०)	यवागु=विच्छ, चावलों का
नारिका=छी	पानी
पंडितः=विद्वन् पुरुषः	पंडिता=विदुषी स्त्री
तृपित=व्यासा	शोमन=उत्तम
गौः=गाय	कार्य=काम, योग

सरल वाक्य

१ मया अभिवाद्यः गुरुः ज्ञानी अत्र आगच्छति । २ तेन शोमना अथ कथा कथनीया । ३ तस्य बधिराय मनुष्याय शुष्कं पुष्पं न देहि । ४ अहं तस्यै पुत्रिकायै नारिकायै उत्तमम् अन्नं पेयं च

पानीर्यं दातुम् इच्छामि । ५ यदा स पूजनीय य गुरवे अखिल धनं
दास्यति तदा स्वम् एव वद । ६ पश्य मित्र, मया अद्य प्रातःकाले
उत्तम गौः गंगाया तीरे दृष्टा । ७ यदा स्व षठिन कार्यं करिष्यसि
तदा अह तव सहाय्याय आगमिष्यामि ।

निम्न वाक्यों का संस्कृत कोजिये :—

१ राम की सीता नाम पतिव्रता स्त्री थी । २ रामचन्द्र ने रावण
का बध किया । ३ जैता मार्ग में कल कीचड़ हुआ था वैसा आज
नहीं हुआ । ४ कल य दल से पानी बहुत पड़ा था । इसलिए कीचड़
हुआ था । ५ कपडा धोने के लिये शुद्ध जल उत्तम होता है ।
यह जल अत्यन्त अशुद्ध है । इसमें कपडा कैसे धोऊँ ।

पाठ ३८

शब्द

मालाकारः = माली ।	लोहकारः = लोहार ।
काष्ठकारः = चरान ।	वैद्य = वैद्य ।
सुवर्णकारः = सुनार ।	चर्मकार = चमार ।
उपानत् = जूता ।	रथकार = तरान ।
सूत्रकारः = दर्जी ।	घटीकारः = घड़ी साज ।
रजकः = धोबी ।	चित्रकारः = चित्रकार ।
मूर्तिकार = मूर्ति बनाने वाला ।	

वाक्य

१. मालाकारः उद्याने कर्म करोति = माली याग में काम करता है ।
२. वैद्यः रुग्णाय जनाय औषधं ददाति = वैद्य रोगी मनुष्य के
लिए दवा देता है ।
३. सुवर्णकारः सुवर्णस्य आभूषणं करोति = सुनार सोने का
गहना बनाता था ।
४. चर्मकारः उपानत् करोति = चमार जूता बनाता है ।

५. चित्रकारः उत्तमं आनेख्यम् आलिलति=चित्रकार उत्तम चित्र खींचता है ।
 ६. रजकः शुद्धेन जलेन वस्त्रं प्रक्षालयति=धोबी शुद्ध जल से कपड़ा धोता है ।
 ७. घटीकारः घटीयंत्रम् करोति=घड़ीसाज घड़ी बनाता है ।
 ७. रथकारः रथं करोतिस्म=तरसान गाड़ी बनाता था ।

शब्द

- पुष्पाणि=(अनेक) फूल
 पात्राणि=(अनेक) पात्र ।
 ताम्रं=तांबा ।
 भवन्ति=होते हैं ।
 सुवर्णं=सोना ।
 रजताभ्रकं=एलोमीनियम ।
 बहूनि=बहुत ।
 वस्त्राणि=(अनेक) वस्त्र ।
 रजतं=चाँदी ।
 पित्तलं=पीतल ।
 लोहः=लोहा ।
 वंगं=रत्न ।
 मृगमयं=मिट्टी का ।
 साधुः=अच्छो प्रकार ।

१. मालाकारः रथानं गत्वा बहूनि पुष्पाणि आनयति=माली बाग में जाकर बहुत फूल लाता है ।
 २. सुवर्णकारः रजतस्य बहूनि पात्राणि अतीव मनोहराणि करोति=सुनार चाँदी के बहुत बर्तन अत्यन्त सुन्दर बनाता है ।
 ३. ताम्रस्य पात्रे जल अतीव सृशुद्धं भवति=ताँबे के बर्तन में जल अत्यन्त पवित्र होता है ।
 ४. पित्तलस्य पात्राणि पीतानि भवन्ति=पीतल के बर्तन पीले होते हैं ।
 ५. ताम्रस्य पात्राणि रक्तानि भवन्ति=यैसे ताँबे के बर्तन लाल होते हैं ।

६. रजकः रक्तम् वस्त्रं साधु प्रक्षालयितुं न शक्नोति=धोयी लाल कपड़ा अच्छी प्रकार नहीं धो सकता ।
 ७. सुवर्णमात्रं अतीव शोभनं अस्ति=सोने का बर्तन बहुत अच्छा है ।

शब्द

तडागः=तालाब ।	कूपः=कुआँ ।
समुद्रः=समुद्र ।	सागरः=समुद्र ।
समीप=पास ।	प्रपा=पानी का स्थान, पियाऊ ।
नदी=दर्या, नदी ।	स्नानगृहं=स्नान करने का स्थान ।
जलनलिका=पानी का नलका ।	

वाक्य

१. एवं तडागस्य समीपं गच्छ तत्रैव स्नानं कुरु=तू तालाब के पास जा और वहाँ ही स्नान कर ।
 २. तस्य तडागस्य जलमतीव मलिनमस्ति तेन स्नानं कर्तुं नैच्छामि=उस तालाब का जल बहुत मलिन है । उस से स्नान करना नहीं चाहता ।
 ३. तर्हि अस्य कूपस्य जलेन स्नानं कुरु=तो इस कुएँ के जल से स्नान कर ।
 ४. अस्य कूपस्य जलं बहु शीतम् अस्ति अतः अहं तेनापि स्नानं कर्तुं नैच्छामि=इस कुएँ का जल बहुत ठंडा है इसलिये मैं उस से भी स्नान करना नहीं चाहता ।

(१) तत्र+रव । (२) जलं+अतीव । (३) मलिनं+अस्ति । (४) न+इच्छामि ।

५. यदि कूपस्य शुद्धेन जलेन अपि स्नान कर्तुं नेच्छसि तर्हि मम स्नानागारे गत्वा तत्रस्थितेन स्नान कुरु=अगर कुएँ के शुद्ध जल से भी स्नान करना नहीं चाहता तो मेरे स्नान घर में जाकर वहाँ के जल से स्नान कर ।
६. शोभनं । भो मित्र ! यथा त्वया उक्तं तथा करोमि=उत्तम । हे मित्र ! जैसा तूने कहा वैसा करता हू ।

शब्द

धूलं =शठ, ठग

वक्तु=बोलने के लिये

नरपति =राजा

प्रश्ने कृते=प्रश्न करने पर

अनय =(तू) ले गया

प्रविश्य=प्रवेश करके

श्रुत्वा=सुनकर

मूलं=मूढ

शुक =तोता

नरेश =राजा

राजन्=हे राजा

वाच=वाणी को

ददी=दिये

कुपित=क्रोधित

पृष्टवान्=पूछा

पक्षिपालक =पक्षियों का पालन करने वाला ।

शिक्षित=सिखाया हुआ

कस्मिंश्चिद्=किसी एक में

अनयत्=(यह) ले गया

अनयम्=(मे) ले गया

भाषण=बोलना

स्वमदिरं=अपना महल

श्रीत=परीदा हुआ

सदेह =सराय

राज्ञा=राजा ने

राजसभा=राजा का दरबार

लक्षरूप्यकाणि=जात्य रुपये

स्थापयित्वा==रखकर

बहुमूल्य=बहुत कीमत वाला

शुक्रस्य कथा

केनचिद् धूर्तं पक्षिपालकं एकं शुक्रं मनुष्यं इयं वक्तुं शि-

चित् । कस्मिंश्चिद् अपि प्रश्ने कृते “अत्र कः संदेहः” इत्येव स शुकः
 वदति । एकदा स पत्तिपालकः तं शुकं नरेशस्य समीपम् अनयत् ।
 तत्र राजसभां प्रविश्य पत्तिपालकेन वृत्तम् । “हे राजन् ! अयं शुकः
 मनुष्य इव सर्वभाषणं वदति” । पत्तिपालकस्य एतद् वचनं श्रुत्वा
 राक्षा शुकं प्रति प्रश्नः कृतः—‘हे शुक ! किं त्वं सर्वदा मनुष्यस्य
 वाचं वदसि’ ।

शुकेन वृत्तम्—‘अत्र कः संदेहः’ इति तेन उत्तरेण अतीव संतुष्टः
 स राजा तस्मै पत्तिपालकाय लक्षरूप्यकाणि ददौ । पश्चाद् स्व-मंदिरे
 शुकं नीत्वा तत्र च उत्तमे स्थाने तं स्थापयित्वा यदा प्रश्नः कृतः
 तदा सर्वस्य अपि प्रश्नस्य ‘अत्र कः संदेहः’ इति एव एकम् उत्तरं तेन
 शुकेन दत्तम् । तदा क्रुपितेन राक्षा पुनः शुकं प्रति प्रश्नः कृतः ।

‘रे शुक ! त्वम् अत्र कः संदेहः इति एव वक्तुं जानासि ?’

शुकेन वृत्तम्—‘अत्र कः संदेहः’ इति । तदा स राजा तं शुकं
 पुनः पृष्ठवान्—‘रे शुक ! तर्हि किम् अहं मूर्खः, यत् मया बहुमूल्यात्
 त्वं क्रीतः’ ।

शुकेन वृत्तम्—‘अत्र कः संदेहः’ इति ।

विचार्य एव सर्वं कार्यं कर्तव्यम् । यथा राक्षा अविचार्य एव
 महता मूल्यात् शुकः क्रीतः । तथा केन अपि मूर्खत्वं न कर्तव्यम् ।

पाठ ३६

- शब्द

ईश्वरः=ईश्वर

जनः=मनुष्य

चौरः=चौर

पालकः=पालन करने द्वारा

घानरः=बन्दर

द्वारपालः=दरवाजे का रक्षक,

पहरे वाला ।

कर्दमः=कीचड़
सौतिकः=दर्जा
बिडालः=बिल्ली
वृषभः=बैल

तंतुवायः=जुनाहा
गोधूमः=गेहूं, कनक
मंडूकः=मेंडक

इन शब्दों के सातों विभक्तियों के रूप पूर्वोक्त "देव" शब्द के समान ही होते ।

वाक्य

१. द्वारपालकः द्वारि तिष्ठति गृहं च रक्षति=पहरे वाला दरवाजे में खड़ा रहता है, और घर की रक्षा करता है ।
२. वानरः वृक्षे स्थित्वा फलं भक्षयति=ग्रन्धर वृक्ष के ऊपर रहकर फल खाता है ।
३. ईश्वरः पालकः अस्ति सर्वं च विश्वं सर्वदा रक्षति=परमेश्वर रक्षक है और सारे ससार की सदा रक्षा करता है ।
४. ह्यः तेन द्वारपालेन चौरः अतीव ताडितः=कल उस पहरेदार ने चोर को बहुत पीटा ।
५. मंडूकः जले अस्ति, तं पश्य=मेंडक पानी में है, उसे देख ।
६. बिडालः दुग्धं पिबति=बिल्ली दूध पीती है ।
७. हे मित्र ! तत्र कर्दमः अस्ति, अतः तत्र न गच्छ, नोचेत् पति-
प्यसि=हे मित्र ! वहां कीचड़ है, इस कारण वहां
न जा नहीं तो गिरेगा ।

शब्द

पतति=(वह) गिरता है	पतसि=(तु) गिरता है
पतामि=गिरता हूं	चलति=(वह) चलेगा
पतिष्यति=(वह) गिरेगा	पतिष्यसि=(तु) गिरेगा

पतिष्यामि=गिरंगा

चलामि=चलता हूँ

चलिष्यसि=(तू) चलेगा

चलसि=(तू) चलता है

चलिष्यति=(वह) चलेगा

चलिष्यामि=चलूंगा

वाक्य

१. रामचन्द्रस्य पुत्रः अतोव धावति, अतः पतति च=रामचन्द्र का लड़का बहुत दौड़ता है, इसलिये गिरता है।
२. यदि त्वम् एवं करिष्यसि तर्हि पतिष्यसि एव = अगर तू ऐसा करेगा तो गिरेगा ही।
३. त्वं श्वः प्रातः काले भ्रमणाय चलिष्यसि किं=क्या तू सवेरे घूमने के लिये चलेगा ?
४. इदानीमेव तस्य रथस्य श्वेतः अश्वः कर्दमे पतितः स न उच्यते शक्नोति=अभी उस रथ का सफेद घोड़ा कीचड़ में गिरा वह उठ नहीं सकता।
५. अहम् इदानीं तस्य छत्रं नयामि, त्वं तं कथय=मैं अब उसका छाता ले जाता हूँ तू उसे कह।
६. तस्य गृहे अश्वः अस्ति तथा विहालः अपि अस्ति=उस के घर घोड़ा है तथा बिल्ली भी है।
७. तस्य वस्त्रं मया प्रहालितं=उसका वस्त्र मैंने धोया।

शब्द

पेङ्कः=संदूक, बेग, ट्रंक

प्रदीपः=दीवा

तर्हः=तस्सी (दही की), मठा

पचति=(वह) पकाता है

पचामि=पकाता हूँ

पानीयं=पानी

घृतं=घी

भूतं=हो गया

पचसि=(तू) पकाता है

पचिष्यसि=पकायेगा

पचिष्यसि=पकायेगा

पचिष्यामि=पकाऊँगा

वाक्य

१. वासुदेवः तस्य गृहे अन्नं पचति=वासुदेव उसके घर में अन्न पकाता है ।
२. तस्य पेटकः कुत्र अस्ति यस्मिन् तेन स्वकीयं द्रव्यं रक्षितम् अस्ति=उसका सटूक कहाँ है ? जिसमें उसने अपना धन रक्खा है ।
३. यदा स पुरुषः स्वगृहं गतः तदा तेन स्वकीयः पेटकः कुत्र स्थापितः इति अहं न जानामि=जब वह मनुष्य अपने घर गया तब उसने अपना टूंक कहाँ रखा है यह मैं नहीं जानता ।
४. भूमित्रः जानाति किं=क्या भूमित्र जानता है ।
५. हे भूमित्र ! किं त्वं जानासि=हे भूमित्र ! क्या तू जानता है ।
६. अहमपि नैत्र जानामि परन्तु सूर्यसिंहः जानाति=मैं भी नहीं जानता परन्तु सूरजसिंह जानता है ।
७. तदिं तं पृच्छ=तो उसे पूछा ।
८. स वदति तस्य पेटकः अपि तेन एव स्वगृहे नीतः इति=वह कहता है कि अपना टूंक भी वह अपने घर ले गया ।
९. ईश्वरस्य पूजन अवर्यं कर्तव्यम्=ईश्वर का पूजन अवर्य करना चाहिये
१०. अध्यापकस्य समीपं सत्वरं गच्छ=गुरु के समीप जल्दी जा ।

नपुंसकलिङ्गी सर्वनामों के रूप

	(१) सर्व	
	एकवचन	
प्रथमा	सर्वम्	सर्व
द्वितीया	"	सर्व की
	(१) किम्	
प्रथमा	किम्	कौन
द्वितीया	"	किस की
	(३) यत्	
प्रथमा	यत्	जो !
द्वितीया	"	जिसकी
	(४) तत्	
प्रथमा	तत्	वह
द्वितीया	"	उसकी

इनके शेष विभक्तियों के रूप सर्वनामों के पुलिङ्ग रूपों के समान ही होते हैं। देखिये पाठ १७ में 'सर्व' शब्द पाठ १८ में 'कि' शब्द, पाठ २२ में 'यद्' शब्द तथा २२ में 'तद्' शब्द। पाठकों को उचित है कि वे इनके रूप बनाकर लिख छोड़ें, ताकि इनको कभी भूल न सकें।

पाठ ४०

शब्द

कथयति=(बढ़) बढ़ता है
कथयामि=बढ़ता हूँ

कथयसि=(तू) बढ़ता है
कथयति=(वो/उ) बढ़ता है

बहसि=बोझ (तू) उठारा है
 शकट=गाड़ी
 महियः=भैंसा
 कथयिष्यसि=(तू) कहेगा
 वहिष्यति=(बोझ) उठायेगा
 वहिष्यामि= ,, उठाऊंगा
 छत्रं=छाता

बहामि ,, उठारा हूँ
 बलीवदः=बैल
 कथयिष्यति=(वह) कहेगा
 कथयिष्यामि=कहूँगा
 वहिष्यसि=(बोझ) तू उठायेगा
 भृत्यः=नौकर
 विष्टर=कुर्सी, स्टूल

वाक्य

१. स पण्डितः रात्रौ रामस्य कथां कथयिष्यति, त्वमपि श्रोतुम् आगच्छ=वह पण्डित रात को राम की कथा करेगा तू भी सुनने के लिये आ ।
२. बलीवदः शकटं वहति, ग्रामात् ग्रामं चलति च=बैल गाड़ी खेंचता है, और एक गाँव से दूसरे गाँव को जाता है ।
३. राज्ञस्य महियः अद्य यत्र न अस्ति यत्र कुत्र अपि गतः=धोबी का भैंसा आज यहां नहीं है, यहीं इधर उधर चला गया है ।
४. गम भृत्यः इदानीमेव आपण गतः स अद्य सायं आगमिष्यति=मेरा नौकर अभी बाजार गया है वह आज शाम को आयेगा ।
५. कथय ! हाः तेन किं किं कृतं, कथं च दिनः गतः इति=कह ! कल उसने क्या क्या किया और कैसा दिन गया ।

वाक्य

जहसि=(तू) जलता है जहामि=जलता हूँ
 जहति=(वह) जोलता है जहसि=(तू) जोलता है

जल्पामि=बोलता हूँ
 वह्निपेटिका=दियासलाई की
 ढिन्वी
 ज्वलियसि=(तू) जलेगा
 जल्पियसि=बोलेगा
 जल्पयामि=बोलेगा
 अधकारः=अंधेरा

योग्य=लायक
 वह्निशलाका=दियासलाई
 ज्वलियति=जलेगा
 ज्वलियामि=जलूँगा
 जल्पियसि=(तू) बोलेगा
 गाढः=घना
 प्रज्वालय=जला

वाक्य

1. तत्र अग्निः ज्वलित अतः तत्र त्वं न गच्छ=वहाँ आग जलती है इसलिए वहाँ तू न जा ।
2. स एषं वृथा जल्पति ततून श्रोतुं योग्यम् अस्ति=वह इस प्रकार व्यर्थ बोलता है वह सुनने योग्य नहीं ।
3. इदानीं रात्रिः आगता गाढ अंधकारः भविष्यति अतः प्रदीपं ज्वालयेयामि=अब रात्रि आ गई, घना अंधेरा हो जायगा, इसलिये दिया जलाऊँगा ।
4. तेन वह्निपेटिकां पुत्र रक्षिता इति न जानामि सा पुत्र भविष्यति=उसने दियासलाई की ढिन्वी कहाँ रखी यह मुझे पता नहीं यह कहाँ होगी ?
5. तत्र मंचके वह्निशलाका अस्ति तां गृह्णीया दीपं प्रज्वालय शीघ्रं च अत्र ज्वालयेयामि=वहाँ टेबल पर दियासलाई है उसे लेकर दिया जला, और जल्दी यहाँ ले आ ।

शुद्ध

निमित्तः=कारण
 चोरयति=(तू) चुराता दे

चोरयति=(वह) चुराता दे
 चोरयामि=चुराता हूँ

चोरयिष्यति=चुरायेगा
 चोरयिष्यामि=चुराऊँगा
 यष्टिः=सोटी
 चपेटिका=चपत
 खट्वा=चारपाई
 शिष्यं=छिष्ठा

चोरयिष्यसि= (तू) चुरायेगा
 अपहृत=चुराया
 यष्टिका=सोटी
 कटः=चटाई
 पुच्छं=पूँछ, दुम
 ब्रश्चनः=चाकू

वाक्य

१. त्वं तं कटं कुत्र नयसि=तू उस घटाई को कहाँ ले जाता है
२. अहं तं ममगृहं नयामि=मैं उसे अपने घर ले जाता हूँ।
३. तव यष्टिका कुत्र अस्ति=तेरी सोटी कहाँ है ?
४. मम यष्टिः चोरेण ह्यः अपहृता=मेरी सोटी चोर ने कल चुराई।
५. तस्य खट्वा कुत्र अस्ति=उसकी चारपाई कहाँ है ?
६. तस्य अश्वस्य पुच्छं पश्य=उस घोड़े की पूँछ देख।
७. तस्मिन् शिष्ये तेन पात्रं रक्षितं=उस छिष्के में उसने धर्तन रखा।
८. तस्मिन् पात्रे मया दुग्धं रक्षितं=उस धर्तन में मैंने दूध रखा।
९. तत् दुग्धं विहालेन अद्य पीतं, अतः तत्र दुग्धं नास्ति=ब्रह्म दूध बिल्ली ने आज पिया, इसलिये वहाँ दूध नहीं।
१०. यः लोहस्य पेटकः तेन लोहकारेण निर्मितः स अतीव शोभनः अस्ति=जो लोहे का टुकड़ा उस लोहार ने बनाया वह बहुत अच्छा है।

शब्द

भाद्रपदः=भाई

कृष्णः=कृष्णपत्र

सप्तम्यां=सप्तमी के दिन

ऊर्णा=ऊन,

उर्णावस्त्रं=दुशाला, उनीवस्त्र
यनोरम=मन को आनन्द देने
वाला

धर्मः = गरमी

नगरदर्शनाय=शहर दिखाने
के लिये

द्वंद्वं=युद्ध

काव्यं=काव्य

तैलं=तेल

शं=सुर

द्रष्टव्यं=देखने योग्य

प्रीणोक्तुं=परीदने के लिये

इतिहासः=तवारीख, इतिहास

आसीत्=था

पराकाष्ठां=ऊँचे दर्जे तक

अश्रयः=घोड़े की गादी

पदातिना=पैदल

निन्दा=निंदा

वीमुदी=बाँद की रोशनी

प्राचीनतमं=अत्यन्त पुराना

प्राचीनं=पुराणा

प्रसन्नं=आनन्दित

गुणसंपन्नः=गुणी

निश्चयः=निश्चय

अलमभतिविस्मरेण=बहुत

विस्तारबस हुआ

छिद्रं=सूगाय

प्रेषितं=भेजा हुआ

अनुमृश्य=अनुसरण करके

शर्मणः=शर्मा का

अतीव=बहुत

नाम्ना=नाम से

चिह्नं=निशान

धनादयः=पैसे वाला

तेज-वाक्पं=तेल की भाप

प्रशंसा=स्तुति

निद्रा=नींद

पर लेखनम्

ओ

देहली नगरे।

विजयीये १६६७ संवत्सर्

माद्रदस्य पृष्ण-सप्तम्या

ओ प्रिय मित्र यत्तदा !

नमाते ! एव अग्राम् अनुमृत्य अहम् अत्र अद्य प्रातः प

आगतः । अस्मिन् नगरे यत् किञ्चिद् अपि द्रष्टव्यम् अस्ति तद्
दृष्टुं श्वः वा परश्वः वा अस्मात् स्थानात् अमृतसर—नगरं गमि-
ष्यामि । यदा अहं अमृतसरं गमिष्यामि तदा तव मित्रस्य चंद्रकेतु
शर्मणः कृते एकं ऊर्णावस्त्रं केतु इच्छामि ।

भोः प्रियवयस्य ! एतत् देहलीनगरं अतीव सुन्दरम् अस्ति ।
अस्य प्राचीनतमः इतिहासः च अतीव मनोरमः । अद्य एव इन्द्रप्रस्थं
तथा 'कुतुबमीनार' इति नाम्ना प्रसिद्धं स्थानं अपि मया दृष्टम् ।
पांडवानां समये एतद् एव देहली नगरं 'हस्तिनापुर' इति नाम्नं
प्रसिद्धं आसीत् । इदानीं तु हस्तिनापुरस्य प्राचीनं किमपि चिह्नं
न दृश्यते ।

ईदृशस्य प्राचीनतमस्य स्थानस्य दर्शनेन मम मनः प्रसन्नं
भवति । पांडवकालस्य स्मरणम् अपि आनंदस्य पराकाष्ठां पुरुषं
नयति ।

अत्र तु अस्मिन् मासे शीतं न भवति । सूर्यस्य आतपेन घर्मं
एव भवति । शीतकाले बहुशीतं तथा उष्णकाले अतीव घर्मः भवति ।

अत्र अहं महाशयस्य कुंदनलालस्य गृहे स्थितः । महाशयः
कुंदनलालः अतीव धनाढ्यः पुरुषः अस्मिन् नगरे अस्ति । तस्य
पुत्रः चंदनलाल इति नामकः गुणसंपन्नः अस्ति । एष चंदनलालः
मया सह नगर-दर्शनाय भ्रमति ।

अहं न अधरथेन भ्रमामि नापि "मोटर" इति नाम्ना प्रसिद्धेन
जैथाप्प-रथेन भ्रमामि । परंतु यद् द्रष्टव्यम् अस्ति तन् सर्वं पदातिना
एव द्रष्टव्यं इति मया निश्चयः कृतः ।

इदानीम् अहम् अतिविस्तरेण । मम अग्यत पत्र अमृतसरात्
लिपितं भविष्यति । इति शम् ।

भवदीयः वयस्यः

आनंदसागरः

पाठ ४१

(पुंलिंगी)	(नपुंसकलिंगी)
अर्भकः=बालक	कुसुमं=फूल
ग्रामः=गाँव	गरलं=अहर
चरणः=पाँव	जलं=पानी
नृपः=राजा	द्वारं=दरवाजा
प्रसादः=कृपा, मेहरबानी	पर्णं=पत्ता
मार्गः=रास्ता	पत्रं=पत्ता, पत्र
मूशकः=चूहा	भूषणं=जेवर
रक्षकः=पहरे वाला	मिश्रं=दोस्त
वत्सः=बछड़ा, बालक	शरीरं=शरीर
निवास=रहना	वनं=जंगल
समुद्रः=समुद्र	पुरं=शहर

ऊपर पुंलिंगी तथा नपुंसकलिंगी शब्द दिये हैं जिनके आगे विसर्ग रखा हुआ है। वे शब्द पुंलिंगी समझने चाहिये जैसे—“मार्गः, मूशकः” इत्यादि तथा जिनके अन्त में अनुस्वार हो शब्द नपुंसकलिंगी समझने चाहिये जैसे—“पुरं, वनं” इत्यादि आगे के पाठों में हम इसी प्रकार शब्द रखेंगे कि जिससे पाठकों को शब्दों के लिंग का पता लग जायगा।

जिन शब्दों के अन्त में “भा” होता है, वे शब्द प्रायः लिंगी होते हैं देखिये :—

गङ्गा=गङ्गा नदी	यमुना=यमुना
माला=माला	फला=हुनर
देवता=देवी, देवता	रेखा=लकीर

कन्या=लड़की

सुमा=शान्ति, पृथ्वी

तारका=तारा

प्रिया=प्यारी धर्मपत्नी

वाक्य

१. मनुष्यः ईश्वरस्य प्रसादेन सर्वं सुखं प्राप्नोति=मनुष्य ईश्वर की कृपा से सब सुख प्राप्त करता है ।
२. एषः मित्रस्य गृहस्य मार्गः अस्ति=यह दोस्त के घर का मार्ग है ।
३. देवदत्तः नृपस्य प्रसादेन अतीव धनं प्राप्नोति=देवदत्त राजा की कृपा से बहुत द्रव्य प्राप्त करता है ।
४. तव मित्रस्य निवासः कुत्र अस्ति=तेरे मित्र का निवास कहां है !
५. अद्यश्चः मम मित्रस्य निवासः अमृतसरनगरे अस्ति=आज कल मेरे मित्र का निवास अमृतसर शहर में है ।
६. त्वं तं द्रष्टुं इच्छसि किम् ?=क्या तू उसको देखना चाहता है ?
७. अथ किम् ! अहं तं शीघ्रं द्रष्टुम् इच्छामि=और क्या ? मैं उसको जलदी देखना चाहता हूँ ।
८. किमर्थं तं त्वम् एवं द्रष्टुं इच्छसि ?=किस लिये -उसे तू इस प्रकार देखना चाहता है ?
९. अतीव कालः जातः यदा मया स दृष्टः अतः अहं तं द्रष्टुम् इच्छामि=बहुत समय हुआ जब मैंने उसको देखा था इस लिये मैं उससे देखना चाहता हूँ ।
१०. तर्हि अद्य मध्याह्ने गच्छ=तो आज दोपहर को जा ।
११. यदि अहं इतः मध्याह्ने चलिष्यामि, तर्हि अमृतसरनगरं कदा कदा गमिष्यामि=अगर मैं यहां से दोपहर चलूंगा तो अमृतसर शहर कब पहुँचूंगा ?
१२. यदि त्वं मध्याह्ने त्रिवादन-समये अग्निरथेन चलिष्यसि, तर्हि पंचवादन समये अमृतसरं गमिष्यसि=अगर तू

दोपहर तीन बजे के समय रेलगाडी से चलेगा तो
पाँच बजे के समय अमृतसर पहुँचेगा ।

१३. तर्हि तदा एव अहं गमिष्यामि=तो तभी मैं जाऊँगा ।

१४. यदा त्वं तत्र गमिष्यसि तदा मत पुस्तकम् अपि तत्र नय, मा
विस्मर=जब तू वहाँ जायगा तब मेरा पुस्तक भी
वहाँ ले जा, मत भूल ।

१५. गङ्गाजलं अतीव निर्मलं अस्ति, अतः तद् एव पातुं इच्छामि=
गङ्गाजल बहुत स्वच्छ है, इस किये बड़ो पीना
चाहता हूँ ।

१६. रक्षकः द्वारात् बहिः तिष्ठति=पहरे वाला दरवाजे के बाहर
रखा है ।

१७. पुरात् बहिः वनम् अस्ति=शहर से बाहर जंगल है ।

१८. तस्य पुत्रः पाठशालायां पठति=उसका लड़का पाठशाला में
पढ़ता है ।

१९. समुद्रे अतीव जलं भवति=समुद्र में जल बहुत होता है ।

२०. एवं गरलं मा पिय=तू लहर न पी ।

शब्द

पानरः=बंदर

पनिकः=पैसे वाला

लेखनं=लिखना

वाचनं=वाचन, पढ़ना

अन्य=दूसरा

विचार्यं=विचार करके

धृत्वा=पकड़ कर

पालितं=पाला हुआ

उपविश्य=बैठ कर

साहित्यं=सामान

नित्तिप्यं=रस घर

बहिः=बाहर

आसनं=पैठने का स्थान

पृष्ठं=पृष्ठ

यावत्=जब तक

तावत्=तब तक

सकवान्=बोला

स्वकीय=अपना

प्रारम्भ =आरम्भ

विलोक्य=देख कर

विहस्य=हस कर

यथापूर्वं=पहिले समान

वानरस्य-कथा

एकस्मिन् नगरे केनचिद् धनिकेन एकं वानरः पालितः । स धनिक नित्यं वानरस्य समीप एव उपविश्य लेखनं वाचनं च करोति स्म । एकदा स धनिकः लेखनस्य साहित्यं तत्र एव निक्षिप्य अन्यं कार्यं कर्तुं यहिं गतः । 'अहम् अपि धनिकवत् लिखामि' इति विचार्य वानरः धनिकस्य आसने उपविश्य एकेन हस्तेन पत्रं गृहीत्वा द्वितीयेन लेखनीं धृत्वा यावत् लेखनस्य प्रारम्भं कृतवान्, तावद्, धनिकः अपि तत्र आगतः । त वानरं विलोक्य विहस्य सकवान् ! 'भो वानर श्रेष्ठ ! इदं किं करोषि ? कस्मै पत्रं लिखसि' । इति । वानरः अपि शीघ्रं स्वकीयं स्थानं गत्वा यथापूर्वं उपविष्टः ।

पाठ ४२

विष्टं=घाटा

धुमुम=फूल

एकदा=एक समय

इतः=यहा, से

ततः =वहा से

फुत =इहा से

सर्वतः =सब ओर

अक्षः=जूवा

अक्षैः =जूये से

अमः=नोक

अमृतः=असत्य

अमृतं=सत्य

अमृतः=अमृत

अक्षरः=आकारा

अधुजः=कमल

अरण्यः=जंगल

अगरागः=उदटना

हृदयः=दिल

कंपनं=कंपना

अपराधः=गुनाह

अलंकारः=जेवर

भारवाहकः=कुली, मजदूर

अक्षरं=अक्षर, हरफ

अंजनं=सुरमा

अङ्गनं=अङ्गप

आगृहं=जेतमाना

अन्यायः=अन्याय

अभिप्रायः=मतकथ

सैनिकः=फौजी आदमी

अशुभं=पाप

अंगं=अंग, शरीर

अध्ययनं=पढ़ाई

स्नानगृहं=स्नान का स्थान

चंचल्यं=चंचलता

क्रिया

परिदधाति=वह पहनता है

परिदधामि=पहनता हूँ

परिधास्यसि=(तू) पहनेगा

यासि=जाता हूँ

याति=(वह) जाता है

यास्यसि=(तू) जायगा

परिदधासि=तू पहनता है

परिधास्यति=वह पहनेगा

परिधास्यामि=पहनेँगा

यासि=(तू) जाता है

यास्यामि=जाऊँगा

यास्यति=(वह) जायगा

वाक्य

१. एकदा अहं वनं गतः=एक समय मैं वन को गया ।

२. तत्र मया एकः वृक्षः दृष्टः=वहाँ मैंने एक वृक्ष देखा ।

३. तस्य फलं अतीव मधुरम् आसीत्=उसका फल बहुत मीठा था ।

४. तत् फलं मया भक्षितं=वह फल मैंने खाया ।

५. तस्य कन्या अलंकारं परिदधाति=उसकी लड़की जेवर पहनती है ।

६. अलंकारः सुवर्णस्य राजस्य च भवति=जेवर सोने का तथा

चाँदी का होता है ।

७. तस्य कः अपराधः आसीत्=उसका क्या दोष था ।

८. यतः स कारागृहे स्थापितः जिस कारण वह जेलखाने में रखा गया ।

९. अक्षैः मा क्रीड=जूए से न खेल ।

१०. वृथा मा अट=व्यर्थ न घूम ।

११. सदा अध्ययनं कुरु=हमेशा पढ़ ।

१२. कदापि अन्यायं न कुरु=कभी अन्याय न कर ।

१३. तस्य कः अभिप्रायः अस्ति = उसका क्या मतलब है ।

१४. अद्य अनेन मार्गेण यास्यामि=आज इस मार्ग से जाऊँगा ।

१५. तेन अद्भुतम् आलेख्यं निर्मितम्=उसने अद्भुत तस्वीर बनाई ।

१६. भारवाहकः कुत्र अस्ति येन तव पेटकः नीतः=कुली कहाँ है

जिसने तेरा ट्रंक उठाया ।

शब्द

तडागः=तालाब

चरकण्टे=समीप

समीपं=पास

प्रभूतं=बहुत

मृगं=घास

रगः=पत्नी

वाक्य

१. एकदा कश्चित् बालकः तडागस्य समीपं गतः=एक समय कोई बालक तालाब के पास गया ।

२. तेन बालकेन तत्र तडागे एकः मरूकः दृष्टः=उस बालक ने वहाँ तालाब में एक मेंढक देखा ।

३. जल-पानार्थं तत्र एकः बलीवर्दः अपि आगतः=पानी पीने के लिये वहाँ एक बैल भी आया ।

४. तेन वृषभेण प्रभूतं जल पीतं=उस बैल ने बहुत जल पिया ।

५. तेन बालकेन तस्मै वृषभाय भक्षणार्थं मृगं दत्तं=उस बालक ने उस बैल को खाने के लिये घास दिया ।

६. तत् वृणं तेन वृषभेण शीघ्रमेव भक्षितम्=ब्रह्म घास उस बैल ने जल्दी से ही खाया।

७. पश्चात्तत्र एकः रथः आगतः=रीछे से वहाँ एक पत्नी आ गया।

८. तस्मै बालकेन एकः मोदकः दत्तः=उसके लिये बालक ने एक लड्डू दिया।

संख्यावाचक शब्द

पुंलिंगी	स्त्रीलिंगी	नपुंसकलिंगी
१. एकः (एक)	एका	एकम्
२. द्वौ (दो)	द्वे	द्वे
३. त्रयः (तीन)	त्रिस्रः	त्रीणि

नीचे दिये हुए शब्दों के पुंलिंग स्त्रीलिंग तथा नपुंसकलिंग में एक जैसे ही रूप होते हैं.—

५. पंच (पाँच)	१७. सप्तदश (सतरह)
६. षट् (छे)	१८. अष्टदश (अठारह)
७. सप्त (सात)	१९. एकोनविंशतिः (बत्तीस)
८. अष्ट (आठ)	२०. विंशतिः (बीस)
९. नव (नौ)	२१. एकविंशतिः (एकतीस)
१०. दश (दस)	२२. द्वाविंशतिः (बाईस)
११. एकादश (ग्यारह)	२३. एकोनत्रिंशत् (बनतीस)
१२. द्वादश (बारह)	२४. त्रिंशत् (तीस)
१३. त्रयोदश (तेरह)	२५. एकत्रिंशत् (एकतीस)
१४. चतुर्दश (चौदह)	४०. चत्वारिंशत् (चालीस)
१५. पंचदश (द्रह)	५०. पंचाशत् (पचास)
१६. षोडश (सोलह)	६०. षष्टिः (साठ)

वारह महनों के नाम (पुलिंग)

१. चैत्रः	७. आश्विनः
२. वैशाखः	८. कार्तिकः
३. ज्येष्ठः	९. मार्गशीर्षः
४. भाद्रपदः	१०. पौष
५. श्रावणः	११. माघः
६. भाद्रपदः	१२. फाल्गुनः

तिथियों के नाम (स्त्रीलिंग)

१. प्रतिपदा	६. नवमी
२. द्वितीया	१०. दशमी
३. तृतीया	११. एकादशी
४. चतुर्थी	१२. द्वादशी
५. पंचमी	१३. त्रयोदशी
६. षष्ठी	१४. चतुर्दशी
७. सप्तमी	१५. पूर्णिमा
८. अष्टमी	३०. अमावस्या

पक्षों के नाम (पुलिंग)

शुक्लपक्षः—

जिन पन्द्रह दिनों में शाम के समय चाँद होता है ।

कृष्णपक्ष—

दूसरे पन्द्रह दिन जिन दिनों में शाम के समय चाँद नहीं होता है ।

पाठ ४३

इस पाठ में एक ब्रह्मण की कथा दी हुई है, जिस कथा के कठिन शब्दों का अर्थ पाठ के अन्त में दिया है ।

१. कस्मिंश्चिद् ग्रामे यज्ञप्रिय नामक एकः ब्रह्मणः प्रतिवसति स्म=किसी एक गांवमें यज्ञप्रिय नामक एक ब्राह्मण रहता था ।
२. स फस्मैचित् कारणाय प्कस्मिन् दिने अन्यं ग्रामं प्रस्थितः= यह किसी कारण के लिये एक दिन दूसरे गांव को चला ।
३. तदा तस्य माता तम् आह=उस समय उसकी माता ने उसे कहा ।
४. हे पुत्र ! पकाकी मा घ्न=हे पुत्र ! अकेला न जा ।
५. यज्ञप्रियः आह ! हे मातः ! भयं न कुरु । अस्मिन् मार्गे किमपि भयं नास्ति अतः अहम् पकाकी एव गमिष्यामि=यज्ञप्रिय योना । हे माता ! भय मत कर । इस मार्ग में कुछ भी भय नहीं है । इस लिये मैं अकेला ही जाऊंगा ।
६. तस्य निश्चयं क्ष.त्था एक कुक्कुर दस्ते कृत्वा माता तं आह=उसका निश्चय जानकर एक कुत्ता हाथ में धर के माता उसे बोली ।
७. यदि त्वं गन्तुम् इच्छसि तर्हि एनं कुक्कुरं गृहीत्वा गच्छ=अगर तू जाना ही चाहता है तो इसे कुत्ते को लेकर जा ।
८. तत्र वक्तं तथा करोमि इति=उसने कहा कि ऐसा ही करत. हूं ।
९. ततः स तं कुक्कुरं गृहीत्वा प्रस्थितः=अथ द वह उस कुत्ते को लेकर चला ।

१०. अथ स मार्गे गमनश्रमेण श्रान्तः कस्यचिद् वृत्तकस्य अधस्तात्
 उपविश्य प्रसुप्तः=अब वह मार्ग में चलने की थका-
 चट से थका हुआ किसी वृत्त के नीचे बैठकर सो
 गया।

११. नत्र कश्चित् सर्पः आगतः=वहाँ कोई एक साँप आ गया।

१२. सर्पः तेन कुक्कुरेण हतः=वह साँप उस कुत्ते ने मारा।

१३. यदा स ब्राह्मणः प्रबुद्धः तदा तेन दृष्टं कुक्कुरेण सर्पः हत
 इति=जब वह ब्राह्मण जागा तब उसने देखा कि
 कुत्ते ने साँप मारा है।

१४. तं हतं सर्पं दृष्ट्वा प्रसन्नः ब्राह्मणः तदा अभवीत्=उस मरे हुए
 साँप को देखकर खुश हुआ ब्राह्मण तब बोला।

१५. अरे ! सत्यं वक्तुं मम माया । पुरुषेण कः अपि सहायः
 कर्तव्यः इति=अरे ! सब कहा मेरी माता ने, कि मनुष्य को
 कोई सहायक रखना चाहिये।

१६. एकाकिना एव न गन्तव्यं इति=एकेले ही नहीं जाना चाहिये।

१७. एवम् उक्त्वा स ब्राह्मणः प्रामं गतः=ऐसा कहकर वह ब्राह्मण
 गाँव को चला गया।

१८. तत्र गत्वा स्वकीयं कर्ष्यं च तेन कृतं=वहाँ जाकर अपना कार्य
 उसने किया।

शब्द

‘चित्’ शब्द का भाषा में ‘एक’ ऐसा अर्थ होता है।

कः चित्=कोई एक ने

केनचित्=किसी एक ने

कस्मिंश्चित्=किसी एक में

कस्मिंश्चित्=किसी एक का

प्रसुप्तः=सो गया

सर्पः=साँप

हतः=मारा

प्रबुद्धः=जागा

प्राहाणः=प्राहाण
 कारणं=कारण, बजह
 एकाकी=अकेला
 प्रतति=(यह) जाता है
 प्रनामि=जाता हूँ
 निश्चयं=निश्चय
 प्रस्थितः=चला
 धांतः=धका हुआ
 एवविश्य=बैठ कर
 दृष्ट्वा=देखकर
 अमशीत्=बोला
 मात्र =मात्रा ने
 वसंत्य=करने योग्य
 गन्तव्यं=जाने योग्य
 दातव्यं=देने योग्य
 क्षेपितव्यं=झिंकारने योग्य
 अक्षयं=पाने योग्य

प्रतिषसति=रहता है
 आह=बोला
 प्रत=जा
 प्रजसि=(तू) जाता है
 मानः=हे माता
 कुक्कुरं=कुत्ते को
 श्रमः=मेहनत
 अघः=तेरे
 दृष्टं=देखा
 प्रसन्नः=खुश
 अरे=अरे
 सहायः=सहाय
 एकाकिना=अकेले ने
 यस्तव्यं=बोलने योग्य
 पठितव्यं=पढ़ने योग्य
 द्रष्टव्यं=देखने योग्य
 स्वातव्यं=रहने योग्य

मन्त्रः

विश्वानि देव सवितरुंरितानि परा सुव ।

यद् भद्रं तन्न आ सुव ॥१॥

अर्थ— हे (देव) ईश्वर, तू (सवितर) सविता सब के धरपत्र
 करने हारे ईश ! (विश्वानि) सब (दुरितानि) दुःखियों, पाप (परा)
 दूर (सुव) फेंक । (यद्) जो (भद्र) करपाए, (तन्न) वह (नः)
 हमारे लिये (आ सुव) समीप कर ।

अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति,
 मनः सत्येन शुध्यति ।
 विद्यातपोभ्यां भूतात्मा,
 बुद्धिज्ञानेन शुध्यति ॥२॥

मनुस्मृति ।

अर्थ—(अद्भिः) पानी से (गात्राणि) इंद्रिय, शरीर के अवयव (शुध्यन्ति) शुद्ध होते हैं । (मनः) मन (सत्येन) सच्चाई से (शुध्यति) शुद्ध होता है । (विद्यातपोभ्यां) विद्या और तप से (भूतात्मा) जीवात्मा तथा (बुद्धिः) बुद्धि (ज्ञानेन) ज्ञान से (शुध्यति) शुद्ध होती है !

सत्यं श्रूय त् प्रियं श्रूयात्
 न श्रूयात् सत्यमप्रियम् ।
 प्रियं च नानृतं श्रूयात्
 एष धर्मः सनातनः ॥३॥

मनुस्मृति ।

अर्थ—(सत्यं) सत्य (श्रूय त्) बोलना, (प्रियं) प्रिय (श्रूयात्) बोलना । (च) और (प्रिय) प्यारा परन्तु (अनृतं) असत्य (न) नहीं (श्रूयात्) बोलना । (एष) यह (सनातनः) हमेशा का (धर्मः) धर्म है ।

पठ ४४

१. एकदा नारदः भगवतं उपेत्य पप्रच्छ—एक समय नारद ने भगवान् के पास जाकर पूछा ।
२. भगवान् ! कः तव परमः भक्तः इति—हे भगवान् ! कौन तेरा परम भक्त है ?

३. भगवान् नारदं आह ! हे नारद ! भूतले मम एकः परमः
भक्तः अस्ति=भगवान् ने नारद से कहा कि हे
नारद ! भूतल में मेरा एक परम भक्त है ।
४. यदि इच्छसि तं द्रष्टुं तर्हि गच्छ भूतलं तत्र च तं पश्य=मगर
चहता है उसे देखना, तो जा भूतल में और वहाँ
उसे देख ।
५. भगवन् ! तस्य किं नामधेयम् अस्ति । कस्मिन् नगरे च स
निवसति=हे भगवान् ! उसका क्या नाम है,
और किस शहर में वह रहता है ।
६. स विदिशानामके नगरे निवसति । तस्य च नामधेयं भद्रदत्त
इति । स कृषीवलः अस्ति=वह विदिशा नाम के
नगर में रहता है । उसका नाम भद्रदत्त है वह
किसान है ।
७. नारद पतत् श्रुत्वा विस्मितः भूत्वा भूतलं प्रस्थितः=नारद यह
सुनकर विस्मित होकर भूमंडल के लिये चला ।
८. तत्र गत्वा च तं कृषीवलं प्रत्यक्षोचकार=और वहाँ जाकर उस
किसान को प्रत्यक्ष किया ।
९. स भद्रदत्तः कृषीवलः दिने दिने शुद्धे स्थाने उभयैर्य एका-
ग्रैण मनसा क्षणमात्रं भगवन्तं स्मरति ततः कृषि
कर्म करोति=इह भद्रदत्त किसान प्रतिदिन शुद्ध
स्थान में बैठकर एक प्र मन से क्षणमात्र भगवान्
का स्मरण करता है पश्चात् खेती का काम करता है ।
१०. तं दृष्ट्वा नारद आह=उसे देखकर नारद बोला ।
११. का अग्र भक्तिः=कौन सी यहाँ भक्ति है ?
१२. इति उक्त्वा पुनः स नारदः भगवंतं प्रति गत्वा=ऐसा बोलकर

किर वह नारद भगवान् के पास गया ।

१३. तेन पृष्टम् । हे नारद ! किं त्वया परमः भक्तः भद्रदत्त' दृष्टः=
 उसने पूछा । हे नारद ! क्या तूने परम भक्त
 भद्रदत्त को देखा ।
१४. नारदः प्रत्याह । भगवान् । स मया दृष्टः परन्तु न तत्र का अपि
 विशेषता अस्ति=नारद ने उत्तर दिया कि भगवान्
 वह मैंने देखा परन्तु उसमें कोई विशेषता नहीं है ।
१५. भगवता शक्तम् । य. मन एकप्र कृत्वा सन्ध्या करोति । स एव
 परमः भक्तः भवति न अन्य. इति त्व जानोहि=भगवान् ने कहा
 कि जो मन एकप्र करके संध्या (ध्यान) करता है । वही
 परम भक्त होता है । दूसरा नहीं । ऐसा तू जान ।
१६. यः तु मन एकप्र न कृत्वा उपासना करोति स भक्तः भवितुं
 न योग्य इति=जो मन एकप्र न करके उपासना करता है वह
 भक्त होने के योग्य नहीं है ।

शब्द

एकदृ=एक समय	भगव त=भगवान् को
उपेत्य=प स जाकर	पप्रच्छ=पूछा
परम =सब से बड़ा	भक्त =भगत
स्थान=जगह	उपविश्य=बैठ कर
उपविशति=बैठता है	उपविशति=बैठता है
प्रत्यक्षी करिष्यति=साक्षात् करेगा	वसति=(बह) रहता है
वसामि=रहता हूँ	वससि=(तू) रहता है
वत्स्यसि=(तू) रहेगा	वत्स्यति=(बह) रहेगा
उपवेक्ष्यसि=(तू) बैठेगा	वत्स्यामि=रहूँगा
	उपवेक्ष्यति=(बह) बैठेगा

आह=कहा	भूतल=पृथ्वी, भूलोक
निवसति=बह रहता है	निवससि=तू रहता है
निवसामि=रहता हूँ	कृषीवलः=किसान
विस्मित=आश्चर्य से युक्त	प्रस्थित=घर
प्रत्यक्षीचक्षार=साक्ष तू किया	प्रत्यक्षी हरोमि=प्रत्यक्ष करता हूँ
प्रत्यक्षीकरोमि=प्रत्यक्ष करता है	प्रत्यक्षीकरोति=प्रत्यक्ष करता है
पृष्ट=पूछा	ष्ट=देखा
प्रत्याह=जवाब दिया	विशेष=वास (वात)
मन =मन	एकाम=स्थिर
जानीहि=ज्ञान	उपासना=भक्ति उपासना
भवितु=होन के लिए	उपविष्ट = बैठ गया
प्रत्यक्षीकृत=साक्षात् किया	उपित=रहा हुआ
उपित्वा=रह कर	वस्तु=रहने के लिये
निर्वसिष्यति=रहेगा	निवसिष्यसि=(तू) रहेगा
निवसिष्यामि=रहूँगा	

श्लोक

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता ।

यत्रैनास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राऽफला क्रिया ॥१॥

मनुस्मृति ।

अर्थ—(यत्र) जहाँ (तु) तू (नार्यं) स्त्रिया (पूज्यन्ते) सत्कारित की जाती हैं । (तत्र) वहाँ (देवता.) देवताएँ (रमन्ते) सुख होती हैं । (तु) परंतु (यत्र) जहाँ (पला) ये स्त्रिया (न पूज्यन्ते) पूजा नहीं जाती (तत्र) वहाँ (सर्वा) सब (क्रिया.) कार्य (अफलाः) निष्फल, व्यर्थ होते हैं ।

उपहारोऽपि नैव ना अयदाराय जयते ।

पयः पानं भुजंगानाम् देवलं विषवर्धनम् ॥

अर्थ—(नीचानां) नीचों के लिये (वरकार) उपकार किया (अपि) भी (अपकाराय) नुद्दसान के लिये (जायते) होता है। जैसे भुजंगानां सापों के लिये (पयः पानं) दूध का पीना (केवलं) केवल (विषवर्धनम्) विष बढ़ाने वाला होता है।

सुभ्रभाः पुरुषाः राजन् सततं प्रियवादिनः ।

अप्रियस्य च पथस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः ॥

अर्थ—हे (राजन्) राजा ! (सतत) हमेशा (प्रियवादिनः) प्यारा बोलने वाले (पुरुषाः) मनुष्य (सुभ्रभाः) आसानी से मिलते हैं। परन्तु (अप्रियस्य) अप्रिय (च) और (पथस्य) द्विदकारक भाषण का (वक्ता) बोलने वाला (च श्रोता) और सुनने वाला (दुर्लभाः) मिलन मुश्किल है।

वाक्य

(१) यत्र नार्यः पूज्यन्ते तत्र एव देवताः रमन्ते । परन्तु यत्र पृथाः न पूज्यन्ते तत्र सर्वाः क्रिया अपफला भवन्ति ।

(२) नीचानां उपकारः अपि अपकाराय जायते । यथा भुजंगानां पयःपानं विषवर्धकं भवति ।

(३) हे राजन् ! सततं प्रियवादिनः पुरुषः सुभ्रभाः । परन्तु पथस्य अप्रियस्य यथा वक्ता दुर्लभः तथा श्रोता अपि दुर्लभः ।

पाठ ४५

१. कर्त्तुः शिद्धिं प्राप्ते धर्मदत्तः नामकः अपि कृषीवलः आसीत्=

किसी एक गाँव में धर्मदत्त नामक कोई एक किसान था ।

२. स एकं वानरं पालितवान्=उसने एक बंदर पाला था ।

३. स मर्कटः प्रभूतं अन्नं भक्षयित्वा अतीव पुष्टः जातः=बहु बंदर

यत्तु अत्र खाकर बहुत पुष्ट हो गया ।

४. एकदा म कुशीबलः दध्यौदनं गृहीत्वा कस्मैचित् प्रयोजनाय तेन सह अन्यं पाम प्रस्थितः=एक समय वह किसान दही चावल लेकर किमी कागण के लिये उस (बंदर) के साथ दूसरे गाँव को चला ।
५. म गे एकं तडागं दृष्ट्वा तत्र दध्यौदनं भक्षयित्वा उपविष्टः=रास्ते में एक तालाब देखकर वहाँ दही चावल खाने के लिए बैठ गया ।
६. तत्र कस्यचित् वृत्तस्य मूले दध्यौदनं स्थापयित्वा मुग्धप्रज्ञानार्थं तडागं गत्वा तीरे उपविष्टः=वहाँ किसी एक वृत्त के मूल में दही चावल रखकर मुँह धोने के लिये तालाब के पास जाकर तालाब के किनारे पर बैठ गया ।
७. अप्रान्तरे तेन दुष्टेन भक्तं तेन तत् सर्वं दध्यौदनं भक्षितं=इतने में उस दुष्ट बंदर ने वह सब दही चावल खाए ।
८. हस्तेन किंचिद् दधि गृहीत्वा, समीपे स्थितस्य वस्य चिद् अज्ञस्य मुखे क्षिप्या, किम् अपि अज्ञानम् इव दूरं गत्वा स्थितः=हाथ से थोड़ा सा दही लेकर, पास गढ़े हुए किसी एक बन्दरे के मुँह पर फेंक कर अज्ञान के समान दूर जाकर बैठ गया ।
९. कुशीबलः सुरां प्रच्छाद्य वृत्तस्य मूलं आगत्य दृष्ट्वा, यद् सर्वं दध्यौदनं केनापि निःशेषं भक्षितम् इति=किमान ने मुँह पीहर वृत्त के पास आकर देखा कि सब दही चावल किमी ने खा लिये हैं ।
१०. समीपे स्थितस्य अज्ञस्य मुखे किंचिद् दधि दृष्ट्वा तेन एव सर्वं अन्नं भक्षितं इति ज्ञात्वा तम् एव तादृगमास=वाम टहरे

हुए बकरे के मुह में [लगा हुआ] थोडा सा दही देखकर उसी ने सब अन्न खाया, ऐसा समझ कर उसी का ताड़न किया ।

११. दुष्ट अपराधं स्वय कृ वा अन्येन स अपराधं कृत इति दर्शयति=दुष्ट [मनुष्य] अपराध स्वय करके दूसरे ने अपराध किया है, ऐसा बतलाता है ।

१२. मूढ तत् तथा एव अस्ति इति जानाति=मूर्ख वह वैसा ही है ऐसा जानता है ।

१३ परंतु ज्ञानी सर्वं परीक्ष्य अपराधिनम् एव यथायोग्य ताडयति=परंतु ज्ञानी मनुष्य सब परीक्षा करके अपराधी को ही यथा योग्य ताड़ना करता है ।

शब्द

पालितव न्=पालन किया

पालयिष्यति=पालन करेगा

पालयिष्यामि=पालन करूँगा

पालयितु=पालन करने के लिये

पुष्ट =पुष्ट, मोटा ताजा

तीर=तीर, किनारा

दुष्ट =दुष्ट

अज =बकरी, प्रकृति

ताडयामास=ताड़न किया, पीटा

ज्ञानी=समझदार

अपराधी=गुनाहगार, दोषी

पालयसि=पालन करता है

पालयति=पालन करता है

पालयिष्यसि=पालन करेगा ।

पालयित्वा=पालन करके

मफट=बन्दर

स्थापयित्वा=रखकर

अत्रान्तरे=बीच में

अज=बकरा, आत्मा परमात्मा

दर्शयितु=दिखाने के लिये

अपराध=गुनाह, अपराध

परीक्ष्य=परीक्षा करके

परीक्षे=परीक्षा करता हूँ

पालयामि=पालन करता हूँ

क्षिप्त्वा=फेंक करं

यावत्=जब तक

निःशेषं=सम्पूर्ण

प्रयोजनं=कारण

मूलं=मूल

दर्शयति=बढ़ दिखाता है

दर्शयामि=दिखाता हूँ

दर्शयिष्यसि=दिखेगा

दर्शयित्वा=दिखाता कर

परीक्षते=परीक्षा करता है

परीक्षितसे=नू परीक्षा करेगा

अजानन्=न जानने वाला

तावत्=तब तक

दृष्टवान्=देखने वाला

उपविष्टः=बैठ गया

स्वयं=स्वयं, खुद, अपने आप

दर्शयसि=तू दिखाता है

दर्शयिष्यति=दिखायेगा

दर्शयिष्यामि=दिखाऊँगा

परीक्षसे=तू परीक्षा करता है

परीक्षित्ये=परीक्षा करूँगा

परीक्षिष्यते=परीक्षा करेगा

वाक्य

[१] यतः धर्मः ततः जयः

[२] धर्मं एव हतः हन्तिः ।

[३] रक्षित. धर्मं एव रक्षति ।

पाठ ४६

निरवयवः [निः-अवयवः]=निराकर, अवयव रहित ।

शब्दमयः=शब्दों से पूर्ण ।

सर्वशक्तिमत्-[सर्व शक्ति-मत्]=अनंत शक्तियों से युक्त ।

उच्यते=बनती है, मजती है, योग्य होती है ।

अत्रा=धिया, सिवाय ।

विद्यमान=रहना, होना ।

अस्मदीनां [अस्मद्-आदीनां]=हम जिनमें पहले हैं ऐसे

मनुष्यों का ।

अध्ययनानंतरं-[अध्ययन-अनंतरं]=पठन के पश्चात् ।

पशुवत्-[पशु-वत्]=पशुओं के समान ।

आदि-सृष्टि=आरम्भ की सृष्टि ।

प्रवृत्तिः=स्वभाव

परमेश्वरः-[परम-ईश्वरः]=बड़ा स्वामी ।

एतदद्यते=बनता है, उत्पन्न होता है ।

ईश्वरः-[ईश-वरः]=मालिकों में श्रेष्ठ मालिक ।

कुतः=किस कारण ? क्यों ?

सदैव-[सदा-पव]=हमेशा ।

खलु=निश्चय से !

सबलं=संपूर्ण

अंतरेण=बिना

महारण्यं-[महा-आरण्यं]=बड़ा वन ।

आरभ्य=प्रारंभ करके ।

वेदोपदेशः-[वेद-उपदेशः] वेद का उपदेश ।

✽गुरु शिष्य संवाद

शिष्यः—निरवयवात्^१ परमेश्वरात् शब्दमयः^२ वेदः कथम्
एतदद्यते=निराकार^१ परमेश्वर से, शब्दों से भरा हुआ वेद
कैसे उत्पन्न होता है ।

गुरुः—सर्वशक्तिमति ईश्वरे इयं शंका न उपपद्यते=सर्व शक्ति-
मान् ईश्वर में यह शंका नहीं ठोक सजती ।

❀ इन पाठों का अर्थ संस्कृत शब्द रचना के अनुसार
दिया है इस कारण भाषा के वाक्य हिंदी शैली के विरुद्ध हुए हैं ।
परन्तु इन्हीं वाक्यों से पता लगेगा कि संस्कृत में और हिंदी में
वाक्य रचना का क्या भेद है ।

शिष्यः—कृतः=क्या ?

गुरुः—मुग्धादि-साधनं श्रंतराऽपि तस्य, कार्यं कर्तुं, सामर्थ्यस्य सदैव
विद्यमानत्वात्=मुख आदि साधन के बिना भी उस
का कार्य करने के लिये सामर्थ्य सदा ही रहता है।

यः अस्ति खलु सर्वं शक्तिमान् स नैव कस्याऽपि सहाय्यं, कार्यं कर्तुं,
गृह्णाति=जो है निश्चय से सर्वशक्तिमन् वह नहीं
किमी का भी सहाय्य कार्य करने के लिये लेता है।

यथा अस्मदादीनां, महायेन बिना, कर्तुं, सामर्थ्यं नास्ति । न च
ईश्वरे=जैस हम जैसों का, सहाय के बिना कार्य
करने के लिये सामर्थ्य नहीं है । नहीं और ईश्वर
में (अर्थात् हमारी जैसी अवस्था ईश्वर में नहीं) ।

यदा निररयवेन ईश्वरेण सकलं जगद् अरचितं, तदा वेद-रचने
का शंकाऽस्ति ?=जब निराकार ईश्वर ने सब जगत्
रचा है, तब वेद रचने में क्या शंका है ?

शिष्यः—जगद्-रचने तु खलु ईश्वरं अतरेण, न कस्याऽपि सामर्थ्यम्
अस्ति=जगत् रचने में तो निश्चय से ईश्वर को
छोड़कर, नहीं किसका भी सामर्थ्य है।

वेद रचने तु अन्यस्य ग्रन्थ-रचन-वत् स्यत्=वेद रचने में तो दूसरे
किसी की ग्रन्थ रचना के समान (सामर्थ्य) हो
सकता है।

गुरुः—ईश्वरेण रचितस्य अध्यायनानंतरं एष ग्रन्थ रचने कस्याऽ
पि सामर्थ्यं स्यात् न च अन्यथा=ईश्वर ने रचे हुए
वेद के अध्ययन के पश्चात् ही ग्रन्थ रचने में किसी
का भी सामर्थ्य होता है। नहीं और (किसी)
दूसरे प्रकार से।

नैव कश्चित् अपि पठन पाठन अन्तरा विद्वन् भवति=नहीं कोई भी पढ़ने पढ़ने बिना विद्वान् होता है ।

किञ्चिद् अपि शास्त्रं , पठित्वा, उपदेशं श्रुत्वा, व्यवहारं च दृष्ट्वा एव, मनुष्याणां ज्ञानं भवति=कोई एक भी शास्त्र पढ़ के उपदेश सुनकर, और व्यवहार देखकर ही, मनुष्यों को ज्ञान होता है ।

यथा महारण्यस्थानां मनुष्याणां, उपदेशं अन्तरा, पशुवत्प्रवृत्तिं भवति=जिस प्रकार बड़े जङ्गलमें रहने वाले मनुष्यों की, उपदेश के बिना, पशु समान प्रवृत्ति होती है ।

तथैव आदि सृष्टिम् आग्नेयं, अद्यपर्यन्तं, वेदोपदेशम् अन्तरा, सर्वं मनुष्याणां प्रवृत्तिं भवेत्=वसा ही आदि सृष्टि प्रारम्भ करके, आज तक, वेद के उपदेश के बिना, सब मनुष्यों की प्रवृत्ति होती है ।

वाक्य

निराकारेण ईश्वरेण एव यथा जगत् निर्मितं तथैव वेद अपि निर्मितः । हस्तपादादि साधनं विना स ईश्वरः यथा सृष्टिं रचयति तथैव वेदम् अपि स एव रचयति । यथा सहायेन विना मनुष्यं कार्यं कर्तुं न शक्नुवन्ति तथा ईश्वरे नास्ति । स अन्यस्य सहायेन विना अपि सर्वं स्वकीयं रचनाकार्यं कर्तुं शक्नोति । स सर्वशक्तिमान् अस्ति मनुष्यवत् अलशक्तिमान् नैवास्ति ।

पाठ ४७

मानुष्येभ्यः =सब मनुष्यों
 क क्षिये
 स्वाभाविक=जन्म के साथ
 अ या दृष्ट्वा

वेदानां=सब वेदों का
मन्यते=माना जाता है

अर्हति=योग्य होता है

वेदोत्पादनं=(वेद-उत्पादन)

वेदों का उत्पन्न होना

विदुषां=विद्वानों के
रक्षते=रखा जाता है
आसेत्=था

सकाशात्=पास से

सृष्टेः = सृष्टि के

क्रमः=सिलसिला

विद्य-संभव=विद्या का होना

मन्थेभ्यः=मथ पुस्तकों से

विद्या प्राप्त होनी

उत्कृष्टं=उत्तम

तदुन्नत्या=(तत् उन्नत्या)-

उसकी उन्नति—वृद्धि से ।

मन्थ-रचनं=पुस्तक रचना

मात्रं=पेचल

अस्मदादिभिः=हम हैं आदि

अनेकविधिं=अनेक प्रकार का

जिनमें ऐसे मनुष्यों द्वारा

अपेक्ष=आवश्यकता, जरूरी

अवश्य=जरूर

आरम्भ-समयः=आरम्भ का

ईश्वरोपदेशः=(ईश्वर-उपदेशः)

समय

ईश्वर का उपदेश

रघयेत्=रचेगा

गुरु शिष्य संग्रहः

शिष्यःवदति ईश्वरेण मनुष्येभ्यः स्वाभाविकं ज्ञानं दत्तम्=शिष्य
बोला है—ईश्वर ने मनुष्यों को स्वाभाविक ज्ञान
दिया है ।

तत् च सर्वप्रथमं अस्ति=और वह सब पुस्तकों से
उत्तम है ।

- व तेन बिना वेदानाम् अपि ज्ञानं भवितुम् अर्हति नही इसके बिना वेदों का ज्ञान हो सकता है ।
- तदुन्नत्या प्रथमरचनम् अपि करिष्यन्ति एव=उसकी उन्नति से पुस्तक की रचना भी करेंगे ही ।
- पुनः किमर्थं मन्यते वेदोत्पादनम् ईश्वरेण कृतम् इति—फिर किस लिये माना जाता है वेदों की उत्पत्ति ईश्वर ने की ऐसा ।
- गुरुः वदति-न बिना अध्ययनेन स्वाभाविकः ज्ञान-मात्रेण, कस्य अपि निर्वाहः भवितुम् अर्हति=गुरु कहता है—नहीं अध्ययन के बिना, स्वाभाविक ज्ञान से ही केवल, किसी का भी निर्वाह हो सकता है ।
- यथा अस्मदादिभिः अपि अन्येषां विदुषां सकारात् अनेकविधं ज्ञानं गृहीत्वा एव प्रथमं रच्यते जैसा हम जैसे लोग भी अन्य विद्वानों के पास से अनेक प्रकार का ज्ञान लेकर ही प्रथम रचते हैं ।
- तथा ईशाज्ञानस्य सर्वेषां मनुष्याणां अपेक्षा अवश्य भवति=वैसी ईश्वर के ज्ञान की सब मनुष्यों के लिये आवश्यकता अवश्य होती है ।
- किं च । न सृष्टेः आरंभसमये पठनपाठन क्रमः प्रथमः च कश्चिद् अपि ध्यामीत्=और । नहीं सृष्टि के प्रारम्भ में पढ़ने पढ़ाने का सिलसिला और प्रथम कोई भी था ।
- तदानीं ईश्वरोपदेशं श्रुत्वा, न च कस्य अपि, विद्यासंभवः चमूव=तब ईश्वर के उद्देश के बिना, नहीं और किसी भी, विद्या की प्राप्ति हुई थी ।
- पुनः कथं कश्चिन् जनः प्रथमं रचयेत्=फिर कैसे कोई मनुष्य प्रथम

रचेगा ?

पाठ ४८

ईशा=ईश्वर ने

वास्यं=झांपने योग्य, व्यापने
रहने योग्य

स्विसु = भी, ही

कर्म = उद्योग, प्रयत्न

क्लिप्यते=लेप लगता है धञ्वा तरः=मनुष्य
लगता है

अंधं तमः=गाढ़ अंधकार हिरण्यमय=सुवर्णमय

पात्र=यंत्रन

सत्यं=सचाई

पूगन्=पुष्ट होने वाला, बढ़ाने
वाला

दृष्टये=दर्शन के लिये

विसं=घन

तर्पणीय=तृप्त होने योग्य

अपावृणु=रोल

आप्यायन्तु=बढ़ें, वृद्धि और

घन्नति को प्राप्त

हो जाय

तर्=शक्य अशक्य विचार

आधनन्ति=विचार करते हैं

तर्पांसि=अनेक प्रकार के तर्क

त्यक्त=दत्त, दान, त्याग किया

दृष्ट्वा

भुञ्जीथाः=भोगी

गृधः=जलचाभी

जिजीविषेत्=भीने की इच्छा

रातं=सौ

समाः=वर्ष, साल

प्रविशन्ति=घुसते हैं

अविद्या=ज्ञो विद्या से उल्टी हो

वपासते=(वप-आसते)-पास

बैठते हैं, वपासना करते हैं

अपिहित=ढँहा हुआ

पद्=स्थान, अवस्था, प्राप्तव्य

परन्ति=करते हैं, आचरण करते हैं सपः =सत्तेप, साररूप करते हैं

उपनिषद् का उपदेश

- १ ईशा वास्य इद सर्वम्=ईश्वर के व्यापने योग्य है यह सब ।
- २ तेन त्यक्तेन भुञ्जोथा =उसके दिये हुए से भोग करो ।
- ३ मा गृध कस्य स्वित् घनम्=न ललचाओ किमी का भी घन
- ४ कुर्वन् पव इह कर्माणि जिजीविषेत् शत समा = करते हुए ही यहाँ कर्म जीने की इच्छा करो सौ वर्ष ।
- ५ न कर्म लिप्यते नरे =नहीं कर्म का लेप होता है नर में ।
- ६ अध तम प्रविशन्ति ये अविद्या वपासते=अधे तम को प्राप्त होते हैं जो अज्ञान के पास रहते हैं ।
- ७ हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्य अपिहितं मुत्तम्=सोने के बर्तन से सत्य का ढका है मुत्त ।
- ८ तत् त्वं पूषन् अपावृणु मत्स्य धर्माय हृष्टे =उमको तू, हे पोषक गोल दे सत्य धर्म को देखने के लिये ।
- ९ कृत, स्म।=किये हुए का स्मरण कर ।
- १० आप्यायन्तु मम अगानि वाक्, प्राण, चक्षु, श्रोत्र अथो बल, इन्द्रियाणि च=बढ़ जाय मेरे अवयव, वाणी, प्राण श्रोत्र, कान और बल और इन्द्रियों ।
- ११ न तत्र चक्षु गच्छति न वाक् गच्छति=नहीं वहाँ श्रोत्र जाती है नहीं वाणी जाती है ।
१२. न वित्तेन तर्पणीय मनुष्य =नहीं धन से तृप्त होता है मनुष्य
- १३ न एषा सर्वेण मति आपनेया=नहीं यह तर्क से बुद्धि प्राप्त होने वाली है ।
- १४ सर्वे वेदा यत् पद आमनन्ति=सब वेद जिस स्थान का मनन करते हैं ।

१५. तपांसि^१ सर्वाणि^२ च यद् वदन्ति=घौर जो सब^३ तप^४
 धोलते हैं ।
१६. यद् इच्छन्तः ब्रह्मवर्यं चरन्ति=जिसकी इच्छा करते हुए
 ब्रह्मवर्यं पालते हैं ।
१७. तत् ते पदं संपद्देष्यं ब्रवीमि=बह तुमको स्थान संबोध से
 कहता हूँ ।
१८. ओम् इति एतत्=ओम् ही यह है ।

पाठ ४६

मूल्यं=हीमत, मूल्य पंच=पाँच
 रूप्यः=रुपया मुद्रा=रुपया
 मुद्रयैक्या=(मुद्रया-पक्या) अष्ट=आठ
 एक रुपया से

पणः=पैसा दृष्टुं=दुकन, दृष्टी
 अन्तः=अच्छा वणिक्=बनिया
 कोटशः=कैमा क्रियान्=कितना

ठग्यः=ठग
 हानि=नुकसान
 जातः=हो गया
 लक्षत्रयम्=तीन लाख
 क=कहाँ से
 पक=पका हुआ
 अर्घः=भाय
 स पाद=सबा
 गुडः=गुड़

पंचलक्षणि=पाँच लाख
 सप्तसरः=सप
 लक्षद्वय=दो लाख
 कुतः=कहाँ से
 वेदार=खेत
 घृत्नं=घी
 भायः=भाय
 प्रसव=सेर
 सेटकः=हेर

पला=इलायची
त्रयविक्रयौ=लेन देन

प्राप्तुत' = मिलते हैं, प्राप्त होते हैं।
मिथ्याकारी=भूठा व्यवहार
करने वाला

बहुमूल्य=कीमती
शाक=साक भाजी
लुनतु=काटे

आविक=ऊनी कपड़ा
लुनति=काटता है

अस्य किं मूल्यम् ? = इसका क्या मूल्य है ?

पच रूप्याणि = पाँच रुपये ।

गृहाण । इदं वस्त्रं देहि = लीजिये । यह वस्त्र दीजिये ।

अद्य-ध, घृतस्य कः अर्घं = आज कल घी का क्या भाव है ।

मुद्रैक्या सपाद-प्रस्थं विक्रीयते = एक रुपया का सवा सेर बेचते हैं ।

गुहस्य को भाव ? = गुह का क्या भाव है ?

अष्टभिः पणै एषसेटकमात्रं ददाति = आठ पैसों का एक सेर
भर देते हैं ।

त्वम् आपणं गच्छ = तू दुकान पर जा ।

पला आनय = इलायची ले आ ।

आनीता । गृहाण = ले आया । लीजिये ।

कस्य दृष्टे दधिदुग्धे अन्धं प्राप्तुत ? = किसकी दुकान पर दही
और दूध अच्छे मिलते हैं ।

घनपालस्य = घनपाल की ।

स सत्येन एव त्रयविक्रयौ करोति = वह सत्य ही से लेन देन करता है ।

भीषति वणिक् कीदृशः अस्ति = भीषति बनिया कैसा है ?

स मिथ्याकारी = वह भूठा है

अस्मिन् सवत्सरे क्रियान् लाभो व्ययः क्व जातः = इस वर्ष में कितना
लाभ और खर्च हुआ ।

पंचलक्षणि लाभः=पांच लख (रुपये) लाभ ।

लक्षद्वयस्य व्ययः ष=घौर दो लाख खर्च (रुप) ।

मम खलु अस्मिन्वर्षे लक्षत्रयस्य हानिः जातः=मेरो तो इस वर्ष
तीन लाख की हानि हो गई ।

वस्तुगी कस्माद् आनेयते=कस्तूरी वहाँ से लाई जाती है
नयपाकात्=नयराज से ।

महुमूल्य आविकं कुतः आनयन्ति=कीमती दुशाले वहाँ से लाते हैं ।

कश्मीरात्=कश्मीर से ।

पुत्र गच्छसि=छड़ा जाते हो ।

पाटलिपुत्रम्=पटना को ।

वदा आगमिष्यसि=वध आओगे ?

एक मासे=एक महीने में ।

म क गतः=वह कहाँ गया ?

श कं आनेतुम्=राज लेने को ।

संप्रति वेदाराः पक्काः=इस समय खेर पक गये हैं ।

यदि पकः तर्जिलुनीतः=यदि पके तो काटो ।

पाठ ५०

गौ=गाय

प्रतिदिनं=हर रोज, नित्य

गारी=वन, गालीस हर

भुज्यते=गया जाता है

त्रि=तीन

पादः=पौधा दिक्ता

महिषी=भैंस

कियन्=कियना

प्रत्यहं=प्रतिदिन

मिलति=मिलता है

मुद्र पादः=दण्ड का चौथा हिस्सा

चार आने

शृणुं=शुर्ना, शृणु

तदानेसन = उस समय का
भज = बकरी
मन्ति = हैं
द्व दश = बारह
सार्धद्वादश = सठे बरह
सार्धं द्व = अठ ई
कति = कितने
साक्षी = गवाह

अजावय = (अजा-अवय) बकरी भेड
अवि = भेड़
१० परिमाणं = कितने परिमाण में
सार्धं = (स-अर्ध) आधे के साथ
सार्धं पच = साठे पाच
द्वय = दो
सहस्र = हजार
वर्तते = है

पंच महन्नाशि=पंच हजार ।

भो राजन् ! मम अय श्रृणुं न ददाति=हे राजन् ! मेरा यह ऋण
नहीं देता ।

यदा तेन गृहीतं तदा नीतनः कश्चित् साक्षी वर्तते न वा=जब उसने
लिया था उस समय का कोई साक्षी वर्तमान है या नहीं ?
अस्तित्व=है ।

तर्हि आनय=तो ले आओ ।

आनीतः । अयम् अस्तित्व=जाया । यह है ।

पाठ ५१

आधारति=धाचारा है

धरति=चलता है

श्रेष्ठः=अच्छा

कीर्तिः=ज्ञान, जन, मनुष्य

वृद्धरेत्=अनति-वृद्धार करना

आत्मा=आत्मा ने

आत्मनः=आत्मा को, अपनी

आत्मानं=आत्मा को; अपने को

आत्म=आत्मा, (रूप)

पूज्य=सर्वकार करने योग्य

गुरु=शरदेशक, वडा

गरीयान्=श्रेष्ठ

समः=समान

त्वरसमः=तेरे जैसा

अधिकः=अधिक

अधिकधिकः=(अधिक अधिक)

सब प्रकार से अधिक

प्रभावः=शक्ति, सामर्थ्य

इतरः=अन्य

प्रमाणं=प्रमाणिक, मान्य पत्र

दुरते=दरता है

अनुवर्तते=पीछे चलता है अनुसरण करता है

व.पु.=माई

विपुः=गण, दुरमन

विना=बाप, पाप

धर=चलने वाला, धार

अधर=न चलने वाला, धार

चराचर=(चर-अचर)-हिलने वाले और न हिलने वाले

कुनः=कहाँ से, कहाँ

अन्यः=दूसरा

लोकत्रय=तीन लोक

अप्रतिम=अतुल

यद्यदाचरति श्रेष्ठः तत्तदेवेतरो जनः ।

स यप्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ॥ गीता ३ । २१ ॥

पदच्छेद । यत् । यत् । आ-चरति । श्रेष्ठः । तत् । तत् । एव । इतरः । जनः । सः । यत् । प्रमाणं । कुरुते । लोकः । तद् । अनु-वर्तते ।

अन्वय । यत् यत् श्रेष्ठः^१ आचरति^२ । तत् तत् एव इतरः जनः^३ (आचरति) । सः (श्रेष्ठः) यत् प्रमाणं^४ करते^५ । लोकः तद् अनुवर्तते^६ ।

अर्थ—जो जो श्रेष्ठ^१ (पुरुष) आचरण^२ करता^३ है। वह वह ही (वसको ही) इतर^३ लोक आचरता है। वह (श्रेष्ठ पुरुष) जो प्रमाण^४ करता^५ है (मानता है)। (इतर) लोग भी उसी के पीछे^६ चलते^७ हैं।

अर्थात् जैसा श्रेष्ठ पुरुष आचरण करते हैं वैसा ही इतर लोग करते हैं। श्रेष्ठ लोग जिसको प्रमाण मानते हैं उसी को इतर लोग भी प्रमाण मानते हैं।

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत् ।

आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुः आत्मैव रिपुगत्मनः ॥ गीता ६ । ५ ॥

पदच्छेद—उद्धरेत् । आत्मना । आत्मानं । न । आत्मानं । अवसादयेत् । आत्मा । एव । हि । आत्मनः । बन्धुः । आत्मा । एव । रिपुः । आत्मनः ।

अन्वयः—आत्मना^१ आत्मनं उद्धरेत्^२ । आत्मानं न अव-

सादयेत्^३ । हि^४ आत्मा एव, आत्मनः बन्धुः^५ । हि आत्मा एव
आत्मनः रिपुः^६ ।

अर्थ—आत्मानं^१ आत्मा का उद्धार^२ करना चाहिये^३ ।
आत्मा को नहीं गिराना^४ चाहिए^५ । क्योंकि आत्मा ही आत्मा
का भाई^६ है । आत्मा ही आ-मा का शत्रु^७ है ।

अपनी आप प्रति करनी चाहिए । अपनी गिरावट आप ही
नहीं करनी चाहिये । क्योंकि अपना आप ही भाई । और अपना
आप ही शत्रु है ।

ओ३म् शम् ।

इसे अवश्य पढ़ें—

प्रिय पाठक ! अब आपने सस्कृत १२२२ शिक्क का प्रथम भाग समप्त कर लिया है । और यदि आपने पुस्तक के आरम्भ में लिखे नियमों के अनुसार प्रति-दिन नियमपूर्वक पाठों के अभ्यास में समय दिया है, तो हमें यह बड़ा विश्वास है कि आप को सस्कृत भाषा का प्रारम्भिक ज्ञान अवश्य हो गया होगा । आप स्वयं इस बात को मानते होंगे कि 'सस्कृत स्वयं शिक्क' के प्रथम भाग से ही आपको सस्कृत में पर्याप्त योग्यता हो गई है । यह हम समझते हैं कि कुछ स्थलों पर शायद आप को कुछ कठिनता प्रतीत हुई हो । इस का मुख्य कारण यही है कि इस प्रथम भाग में हमने जान बूझ कर, पाठकों की आसानी के लिए, व्याकरण को बहुत ही कम स्थान दिया है । यह तो सिद्ध बात है कि व्यकरण ही विसी भी भाषा का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने की कुञ्जी है और यह सस्कृत के विषय में तो और भी ब्यदा पूर्ण उत्तरती है । सस्कृत भाषा का क्रम नियम बद्ध और विधि वैज्ञानिक है, इसलिये बिना सस्कृत के व्याकरण का पूरा ज्ञान प्राप्त किए सस्कृत सीखा सकना असम्भव है । 'सस्कृत स्वयं शिक्क' के दूसरे व तीसरे भागों में व्याकरण को ही मुख्य स्थान दिया है । सस्कृत व्याकरण यदि विधिपूर्वक उचित क्रम से पढ़ा जाए तो बहुत ही सुममता से सब समझ में आ जाता है । 'सस्कृत १२२२ शिक्क' के दूसरे वा तीसरे भाग में व्याकरण की कठिन और गूढ़ गुत्थियों (समस्याओं) को भी इस तरह समझाया है कि पाठकों को जरा भी कठिनाता न होगी । जगह जगह पर लेखक ने अपने ४० वर्ष के सस्कृत के अनुभव से

ऐसे गुरु' दिये हैं कि जरा समझ लेने पर हमेशा के लिये व्याकरण पर आपका पूर्ण अधिकार हो जायगा ।

आपने संस्कृत सीखने के निश्चय से ही इस 'प्रथम भाग' को अपना काली समय देकर पढ़ा । अब आपको इस काम को अधूरा न छोड़ना चाहिये क्योंकि यदि आपने कुछ समय के लिये भी संस्कृत का नियमित अभ्यास बन्द कर दिया तो कुछ घरसे बाद अवश्य ही आपके सब क्रिये-कराये पर पानी फिर जायगा । हमारा यह दावा है कि संस्कृत स्वर्यं शिक्षक के दूसरे या तीसरे भाग को ध्यान से पढ़ लेने के बाद आप आसानी से शुद्ध संस्कृत बोल व लिख सकेंगे और आरक्षी इतनी योग्यता हो जायेगी कि आप वेदों, शास्त्रों और अन्य सस्कृत के उच्च ग्रंथों को समझ सकें ।

'सस्कृत स्वयं शिक्षक' का दूसरा भाग ठीक वही से शुरू होता है जहाँ पहला भाग समाप्त हुआ है—इस तरह के नियमित सिद्धमिलने से पाठकों को दूसरे या तीसरे भाग के समझने में जग भी कठिनता न होगी । काम-भङ्ग न हो इस बात का दूसरे या तीसरे भाग में पूरा ध्यान रक्खा गया है ।

हमारा आप से विशेष अनुरोध है कि आप अपने अभ्यास को अधूरा कदापि न छोड़ें और द्वितीय या तृतीय भाग को अवश्य पढ़ें—

- | | |
|--|-------------|
| संस्कृत स्वयं शिक्षक—द्वितीय भाग—२६७ पृष्ठ मुख्य | १। |
| संस्कृत स्वयं शिक्षक—तृतीय भाग— | १। |
| दोनों भाग एक साथ मंगवाने पर केंद्रक | २) दो रुपये |

धर्म का आदि-स्रोत

ले०—श्री गङ्गप्रसाद जी एम० ए०, चीफ-जज टेहरी (गढ़वाल)

आपने पहले यह पुस्तक अंग्रेजी में The Fountain Head of Religions के नाम से लिखी थी जिसके अब तक कई संस्करण निकल चुके हैं। असल पुस्तक अंग्रेजी में होने के कारण हिन्दी-पठित सज्जन इससे लाभ नहीं उठा सकते थे। अस्तु, 'आर्यमित्र' के भूतपूर्व योग्य-सम्पादक ने इसका अनुवाद कर आर्य जगत् का बड़ा उपकार किया है।

इस पुस्तक में जिन्दावस्ता, धार्मिक, पुरातन तथा अन्य विविध मत-मतान्तरों का भली प्रकार उल्लेख कर यह दिखाया गया है कि वैदिक-धर्म ही समस्त धर्मों का आदि स्रोत है। योग्य लेखक ने सत्कार के विभिन्न मतों की परस्पर तुलना की है जिससे सर्व साधारण अच्छी तरह लाभ प्राप्त कर सकते हैं। विद्यार्थियों, अध्यापकों एवं उपदेशकों के लिये यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी। ऐसी पुस्तक का प्रत्येक आर्य्य भाई के पास रहना आवश्यक है जिससे इसका अध्ययन कर विपत्तियों को मुँह तोड़ उत्तर दे सकें। पुरानक सर्वांग सुन्दर है। द्वितीय संस्करण अभी छपा है। ३०० पृष्ठ की सजिल्द पुस्तक का मूल्य १)

म० राजपाल ऐरड सन्स

(आर्य्य पुस्तकालय) सरस्वती आश्रम,
अनारकली, लाहौर।

मु०—श्री विधनाथ एम. ए., आर्य्य प्रैस, लिमिटेड, १७, मोहनलाल रोड, लाहौर।

—विधनाथ एम० ए०, राजपाल एरड गन्ग, अनारकली, लाहौर।